प्राकृत-पाण्डुलिपि चयनिका

सम्पादक
डॉ. कमलचन्द सोगाणी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत-पाण्डुलिपि चयनिका

सादर भेंट
जैन विद्या संस्थान समिति

सम्पादक

डॉ० कमलचन्द सोगाणी

(पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र)

सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

राजस्थान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक:

अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी,
श्री महावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान

1. जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी
2. साहित्य विक्रय केन्द्र
   दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी,
   सवाई रामसिंहरोड, जयपुर - 302 004

प्रथम संस्करण अगस्त २००६

मूल्य : 250/-

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पृष्ठ संयोजन
श्याम अग्रवाल,
ए-336, मालवीय नगर,
जयपुर

मुद्रक:
जयपुर प्रिन्टर्स प्रा. लि.,
एम.आई.रोड,
जयपुर - ३०२ ०१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाण्डुलिपियों के उद्धारक

श्रद्धेय स्व. पण्डित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ

को

सादर समर्पित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय			VII
पाण्डुलिपि अक्षर चार्ट			IX
पाठ संख्या	**पाण्डुलिपि**	**पाण्डुलिपि संवत्**	**पृष्ठ सं.**
पाठ – १	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	१
पाठ – २	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	५
पाठ – ३	अष्टपाहुड	१८०१	९
पाठ – ४	अष्टपाहुड	१८०१	१३
पाठ – ५	अष्टपाहुड	१८०१	१७
पाठ – ६	अष्टपाहुड	१८०१	२१
पाठ – ७	दशवैकालिक	१८३७	२५
पाठ – ८	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	२९
पाठ – ९	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	३५
पाठ – १०	कुम्मापुत्तचरिअं	१८६९	३९
पाठ – ११	उत्तराध्ययन	१८९५	४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ – १२	उत्तराध्ययन	१८९५	४७
पाठ – १३	उत्तराध्ययन	१८९५	५१
	राजस्थान में प्राकृत-अपभ्रंश की पाण्डुलिपियाँ : परिचय		५५
	पाण्डुलिपि का आधुनिक पद्धति में रूपान्तरण		
पाठ संख्या	**पाण्डुलिपि**	**पाण्डुलिपि संवत्**	**पृष्ठ सं.**
पाठ – १	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	६७
पाठ – २	भगवती आराधना	१५२१, १७६०	६९
पाठ – ३	अष्टपाहुड	१८०१	७१
पाठ – ४	अष्टपाहुड	१८०१	७२
पाठ – ५	अष्टपाहुड	१८०१	७३
पाठ – ६	अष्टपाहुड	१८०१	७४
पाठ – ७	दशवैकालिक	१८३७	७५
पाठ – ८	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	८६
पाठ – ९	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	८७
पाठ – १०	कुम्मापुत्तचरियं	१८६९	७८
पाठ – ११	उत्तराध्ययन	१८९५	७९
पाठ – १२	उत्तराध्ययन	१८९५	८०
पाठ – १३	उत्तराध्ययन	१८९५	८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

'प्राकृत पाण्डुलिपि चयनिका' विद्यार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह कहना निर्विवाद है कि भारत की संस्कृति व उसका साहित्य मौखिक परम्परा से रक्षित होता हुआ पाण्डुलिपियों के माध्यम से सुरक्षित रहा है। छापेखानें के विकास के पूर्व स्वाध्याय व ज्ञान-प्रसार का आधार पाण्डुलिपियाँ ही थीं। एक ही पाण्डुलिपि की कई प्रतिलिपियाँ करवाकर विद्वानों एवं स्वाध्यायियों को अध्ययनार्थ उपलब्ध कराई जाती थीं। इस तरह एक ही पाण्डुलिपि की प्रतियाँ विभिन्न स्थानों पर प्राप्त हो जाती हैं। विभिन्न पाण्डुलिपि संग्रहालय इसी प्रवृत्ति के परिणाम है। नागौर, जैसलमेर, पाटण, जयपुर आदि अनेक स्थानों के पाण्डुलिपि संग्रहालय भारत की सांस्कृतिक निधियाँ हैं। हमें गौरव है कि हमारे पूर्वजों ने इन संग्रहालयों की सुरक्षा करके संस्कृति के संरक्षण में जो योगदान दिया है वह अपूर्व है और भावी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण है। इन संग्रहालयों में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि विभिन्न भाषाओं में लिखित विभिन्न विषयों की पाण्डुलिपियाँ संगृहीत हैं।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि पाण्डुलिपियाँ एक विशेष पद्धति से लिखि जाती हैं। उनमें शब्द मिले हुए होते हैं। मात्राएँ विशेष प्रकार से लगाई जाती हैं। कोई पैराग्राफ नहीं बनाया जाता है। कोई-कोई अक्षर विशेष प्रकार से लिखे जाते हैं। उद्देश्य यह होता है कि कम से कम स्थान में अधिक से अधिक विषय सामग्री प्रस्तुत की जा सके। छापेखानों के विकास के बाद मुद्रित पुस्तकों की पद्धति बदली। शब्द अलग-अलग किए गए। मात्राएँ उचित स्थान पर लगाई गई और अक्षरों का आकार नियत कर दिया गया। अतः मुद्रित पुस्तकें आसानी से पढ़ी जाने लगीं, किन्तु धीरे-धीरे पाण्डुलिपि को पढ़ने वाले नगण्य होते गए। आज हम प्राकृत भाषा को भूल गए और जब भाषा ही भूली जाए तो उस भाषा की पाण्डुलिपि को समझना तो असम्भव ही है। इस भाषा को पुनर्जीवित करना राष्ट्रीय धर्म है और सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रसन्नता की बात है कि दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी ने जैनविद्या संस्थान के अन्तर्गत १९८८ में **'अपभ्रंश साहित्य अकादमी'** की स्थापना करके प्राकृत भाषा को सिखाने का कार्य पत्राचार के माध्यम से प्रारम्भ किया। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु 'प्राकृत रचना सौरभ', 'प्राकृत अभ्यास सौरभ', 'प्राकृत गद्य-पद्य सौरभ' भाग-१, २ आदि कई पुस्तकें अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हैं। इसी क्रम में **'प्राकृत पाण्डुलिपि चयनिका'** विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत की जा रही है। इसमें जिन काव्याशों को संग्रह किया गया है उनका आधुनिक पद्धति से रूपान्तरण भी इसी पुस्तक में दे दिया गया है। विद्यार्थी पाण्डुलिपि के काव्याशों और रूपान्तरण की तुलना करके पाण्डुलिपि को पढ़ना सीख सकेंगे और उसका समुचित अभ्यास कर सकेंगे।

इस चयनिका में राजस्थान के उन शास्त्र भण्डारों का परिचय भी प्रस्तुत है, जहाँ प्राकृत-अपभ्रंश की पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध है। इस सामग्री का चयन मुख्यतया जैनविद्या संस्थान (पूर्व में साहित्य शोध विभाग) द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल तथा पण्डित अनूपचन्द न्यायतीर्थ द्वारा सम्पादित **'राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची'** के पाँच भागों से किया गया है।

उक्त **चयनिका** के प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती शकुन्तला जैन एवं श्रीमती शशिप्रभा जैन के आभारी हैं।

मुद्रण के लिए जयपुर प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड धन्यवादार्ह हैं।

नरेश कुमार सेठी
अध्यक्ष

नरेन्द्र पाटनी
मंत्री

प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
श्री महावीरजी

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति
जयपुर

9 अगस्त, 2006
तीर्थंकर श्रेयांसनाथ मोक्षकल्याणक दिवस
वीर निर्वाण सम्वत् 2532

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कु
ट्टु
तु
न
धी
त्थं
च्चं
ड्डि
ट्ठ
दु
सु
ठ
द्द
ज्जा
ट्ठी
हु
द्धा
णु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १

भगवती आराधना

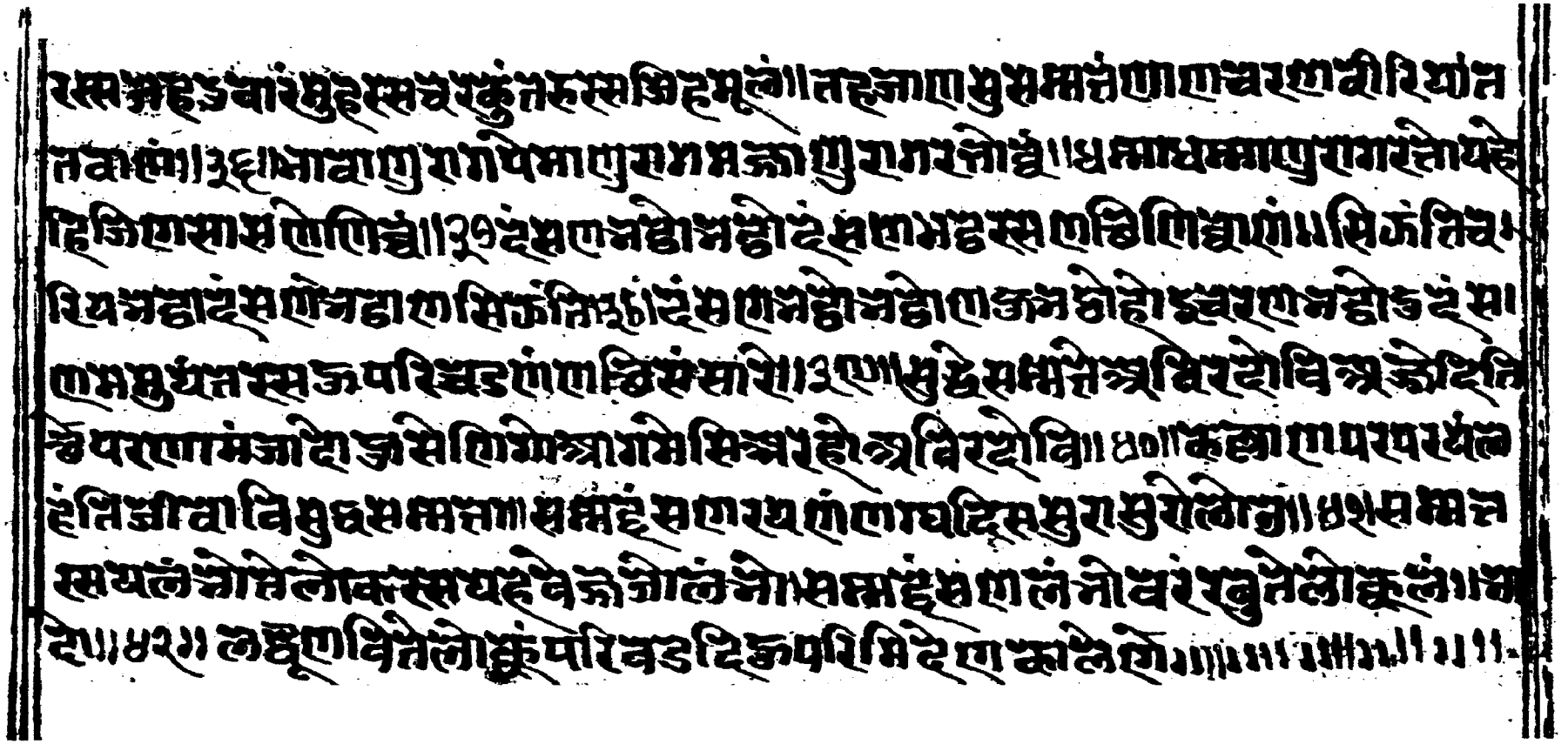

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

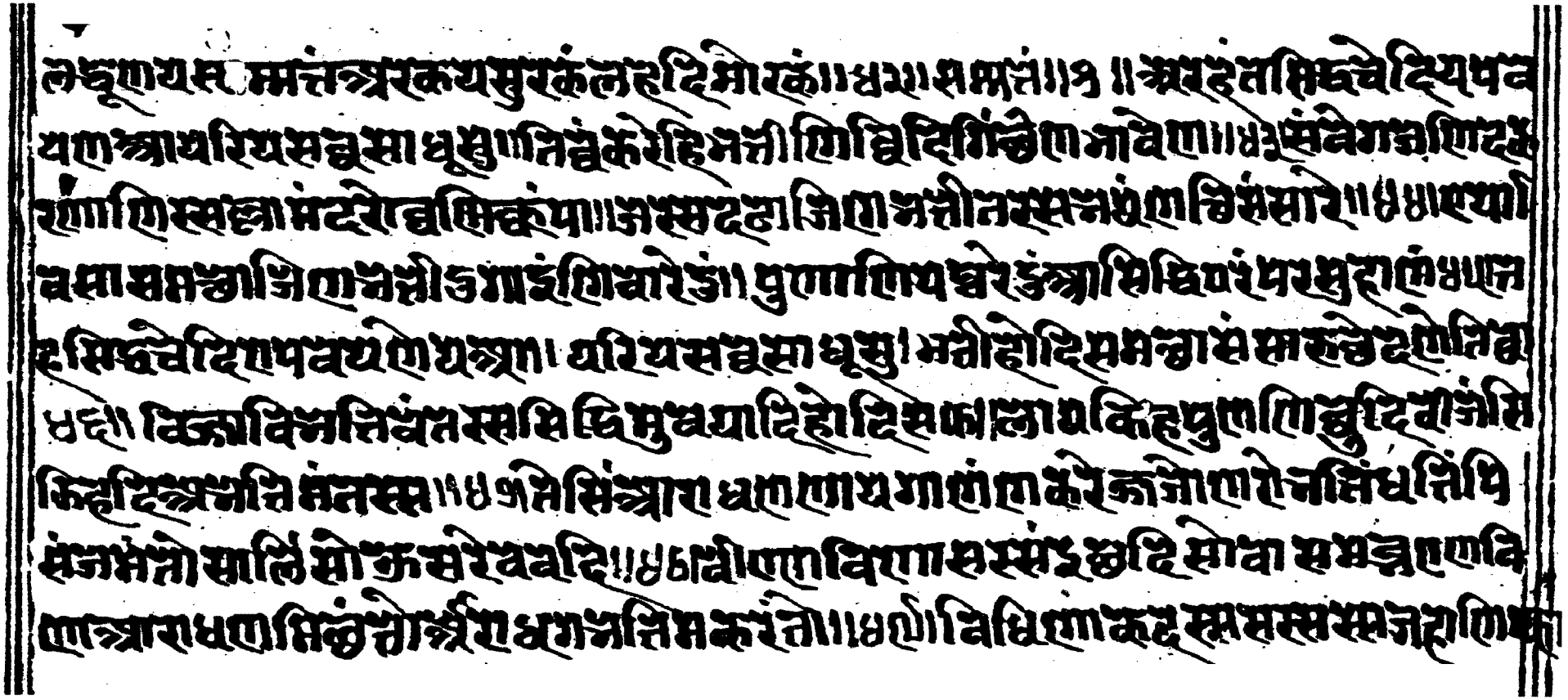

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

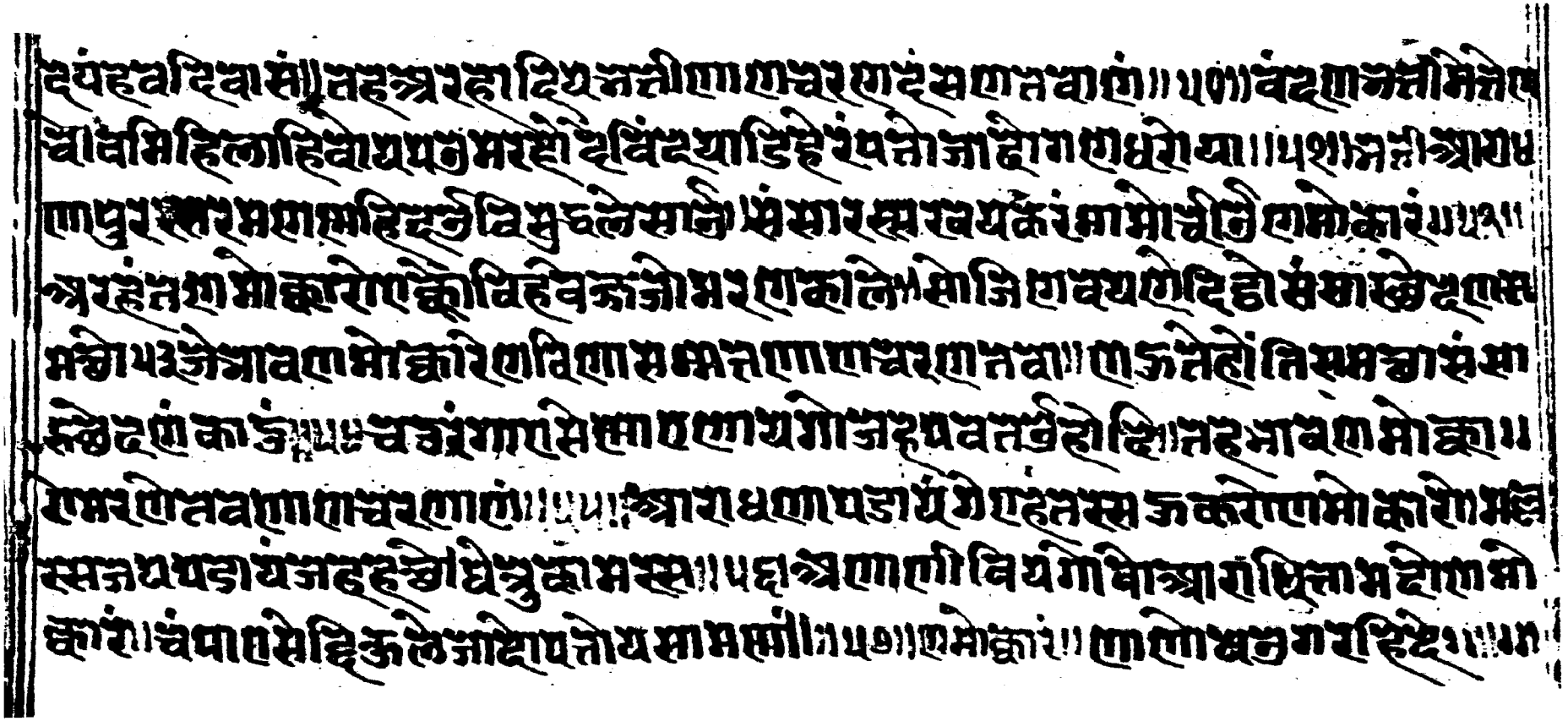

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

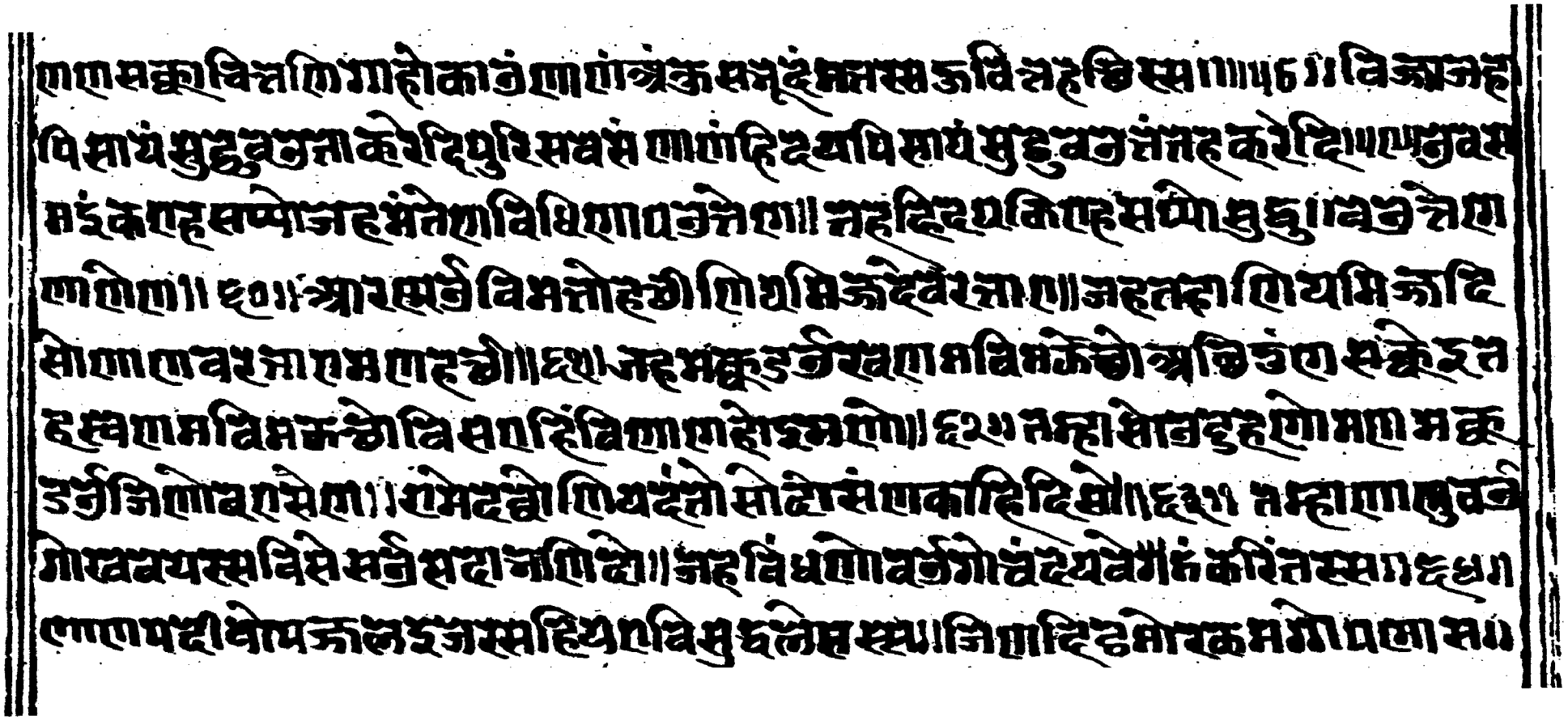

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २

भगवती आराधना

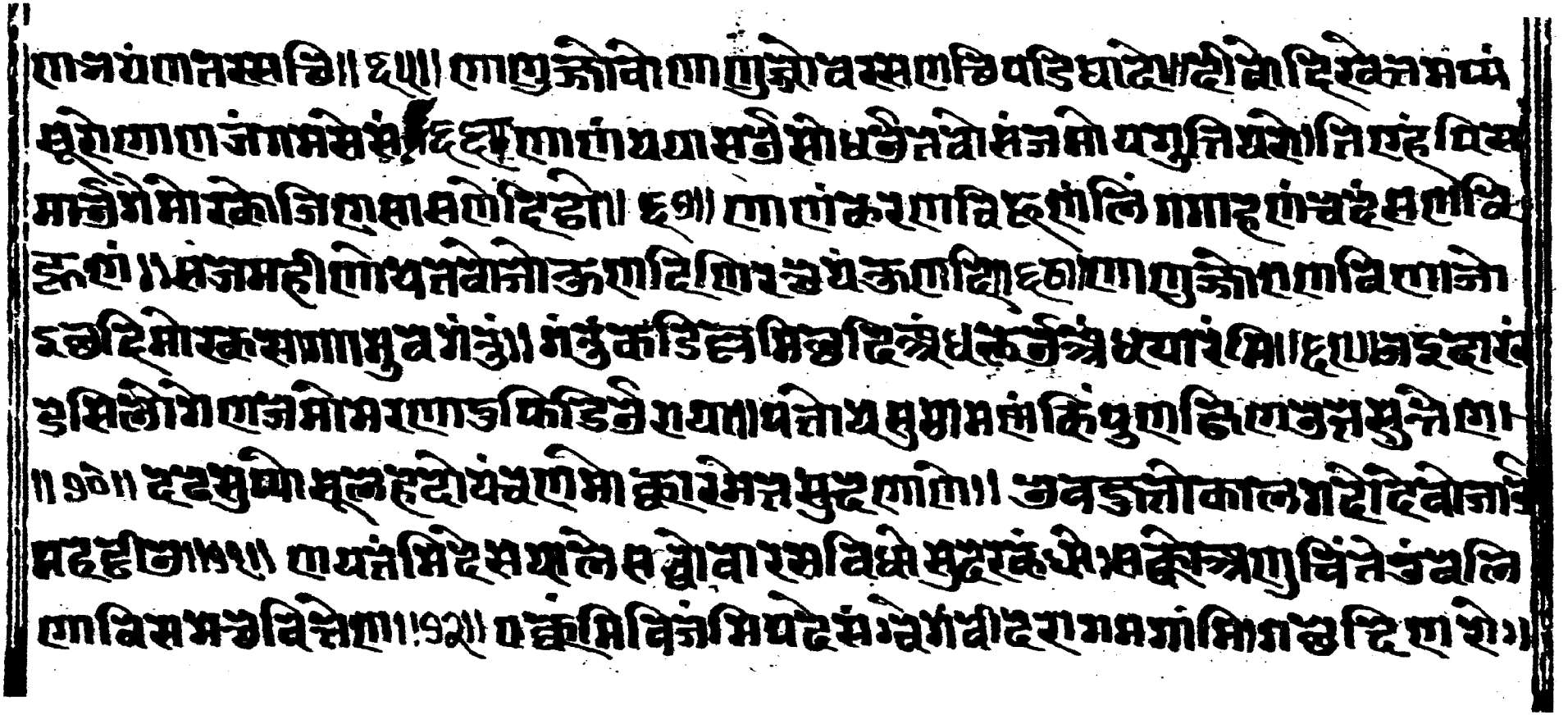

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

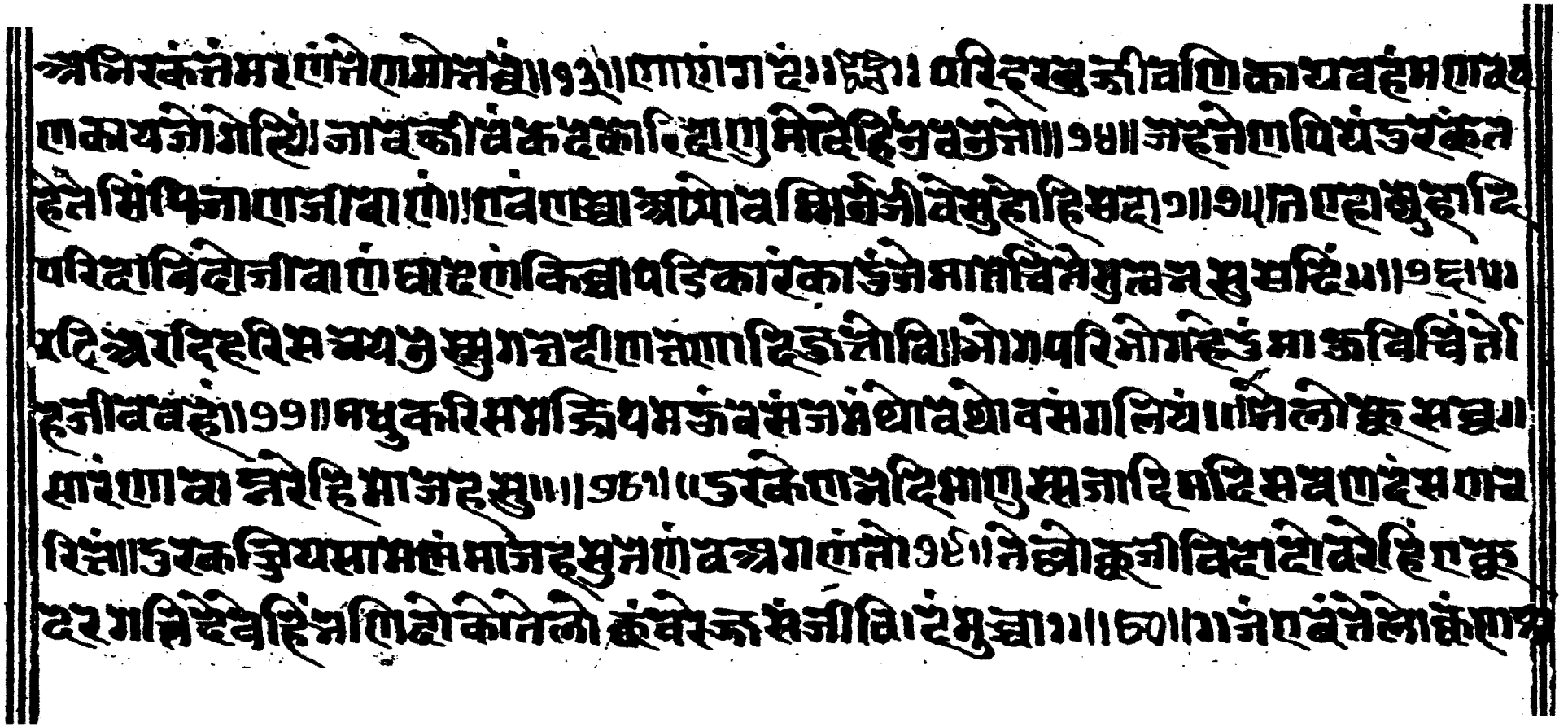

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

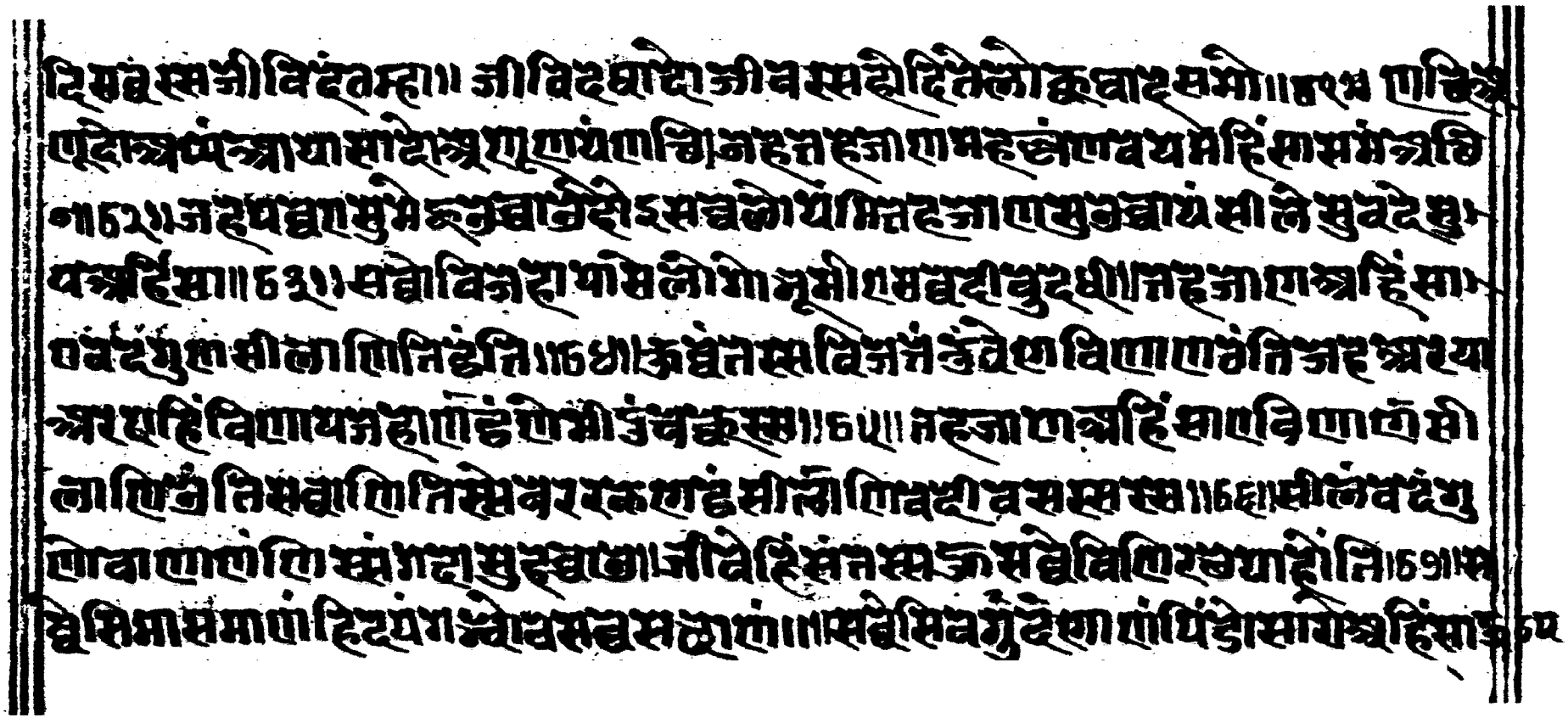

५२ रिसव्वस्स जीवियं इट्ठं जम्हा॥ जीविदघादो जीवस्स होदि तेलोक्कवाइसमो॥८१॥ णत्थि अ
णूदो अप्पं आयासादो अणूणयं णत्थि। जह तह जाण महल्लं ण वयमहिंसासमं अत्थि
॥८२॥ जह पव्वदेसु मेरू उव्वाओ होदि सव्वलोयंमि तह जाण सुउव्वायं सीलेसु वदेसु य
अहिंसा॥८३॥ सव्वो वि जहा पायसलोओ भूमीए सव्वदीवुदधी। तह जाण अहिंसा
ए वंदं गुणसीलाणि तिट्ठंति॥८४॥ कुव्वंतस्स वि जत्तं तुंबेण विणा ण ठंति जह अरया
अरएहिं विणा य जहा णट्ठं णेमी उ चक्कस्स॥८५॥ तह जाण अहिंसाए विणा ण सी
लाणि ठंति सव्वाणि। तिस्से चेव रक्खणट्ठं सीलाणि वदीव सस्सस्स॥८६॥ सीलं वदं गु
णो वा णाणं णिस्संगदा सुहच्चाओ। जीवे हिंसंतस्स हु सव्वे वि णिरत्थया होंति॥८७॥ स
व्वेसिमासमाणं हिदयं गब्भो व सव्वसत्थाणं॥ सव्वेसिं वदगुणाणं पिंडो सारो अहिंसा हु॥८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

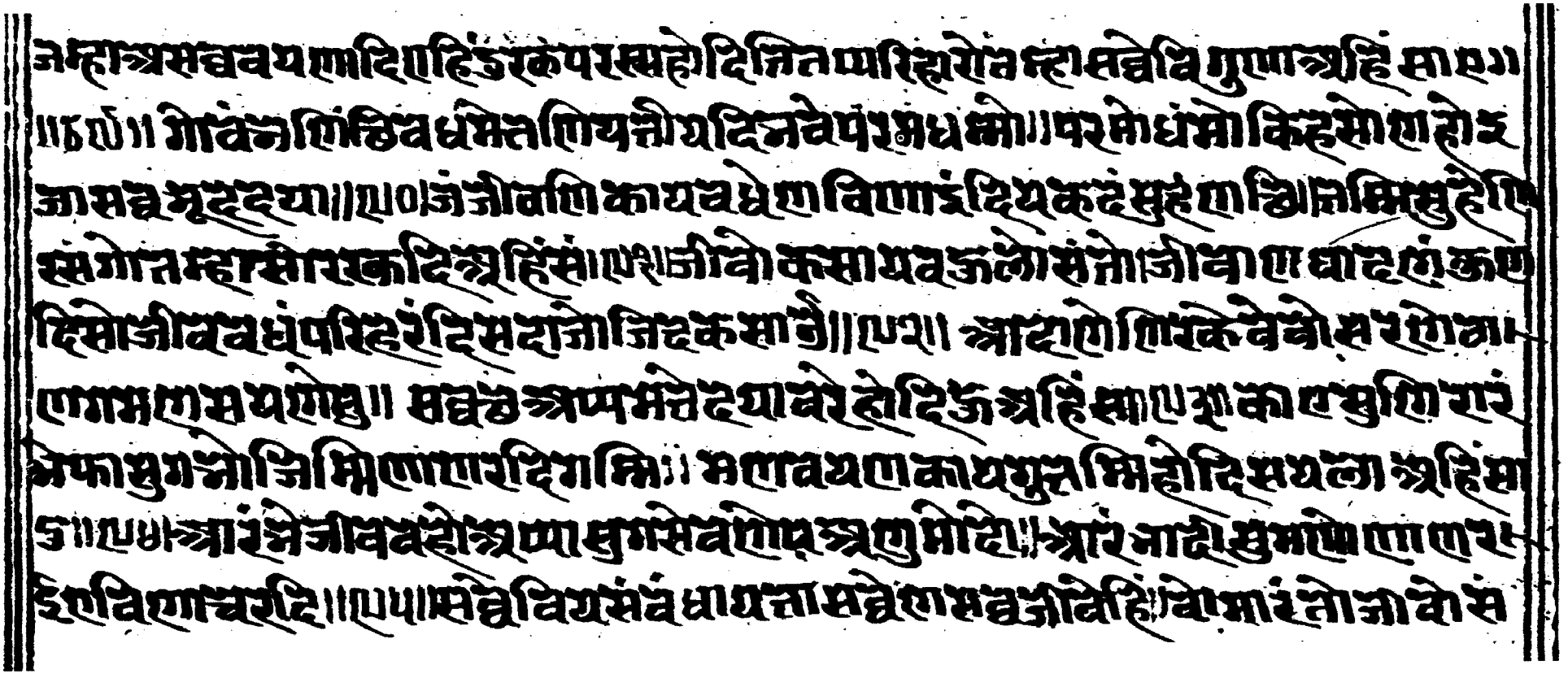

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ३

अष्टपाहुड

अष्टपा० १

॥र्द०॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ काऊणणमोयारं॥ जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स॥ दंसणमग्गं वोच्छा
मि॥ जहाकम्मं समासेण॥ १॥ दंसणमूलो धम्मो॥ उवइट्ठं जिणवरेहिं सिस्साणं॥ तं सोऊण स
कण्णे॥ दंसणहीणो ण वंदिव्वो॥ २॥ दंसणभट्ठा भट्ठा॥ दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं॥ सिज्झंति च
रियभट्ठा॥ दंसणभट्ठा ण सिज्झंति॥ ३॥ सम्मत्तरयणभट्ठा॥ जाणंता बहुविहाइं सत्थाइं आरा
हणाविरहिया॥ भमंति तत्थेव तत्थेव॥ ४॥ सम्मत्तविरहियाणं॥ सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंताणं॥ ण लहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिवोद्दिलाहं॥अविवासमद्दस्सकोडीहिं॥ ५॥ सम्मत्तणाणदंसण॥वलवीरियवड्ढमाणजेस

व्वे॥कलिकलुसपावरहिया॥वरणाणीजंतिअइरेण॥ ६॥ सम्मत्तसलिलपवहो॥णिच्चंहियप

णपवट्टएजस्स॥कम्मंवालुयवरणं॥वंधच्चियणासएतस्स॥ ७॥ जेदंसणेसुभट्ठा॥णाणेभ

ट्ठाचरित्तभट्ठाय॥एदेभट्ठविभट्ठा॥सेसंपिजणंविणासंति॥ ८॥ जोकोविधम्मसीलो॥संजमतव

णियमजोगगुणधारी॥तस्सयदोसकहंता॥भग्गाभग्गत्तणंदिंति॥ ९॥ जहमूलम्मिविणट्ठे॥ड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टपा०
२

म्मस्स परिवारण त्थि परिवड्ढी॥तह जिणदंसणभट्ठा॥मूलविणट्ठा ण सिझंति॥१०॥जह मूलाउ खं

धो॥साहापरिवारबहुगुणो होइ॥तह जिणदंसण मूलो॥णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स॥११॥जे दंस

णेसु भट्ठा। पाए पाडंति दंसणधराणं॥ते होंति लुल्लमूआ॥बोही पुण दुल्लहा तेसिं॥१२॥जे वि पडं

ति च तेसिं। जाणंता लज्जागारवभयेण॥तेसिं पि णत्थि बोही॥पावं अणुमोयमाणाणं॥१३॥दुविहं

पि गंथचाए। तीसु वि जोएसु संजम ठादि॥णाणम्मि करणसुद्धे॥उब्भसणे दंसणं होइ॥१४॥स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

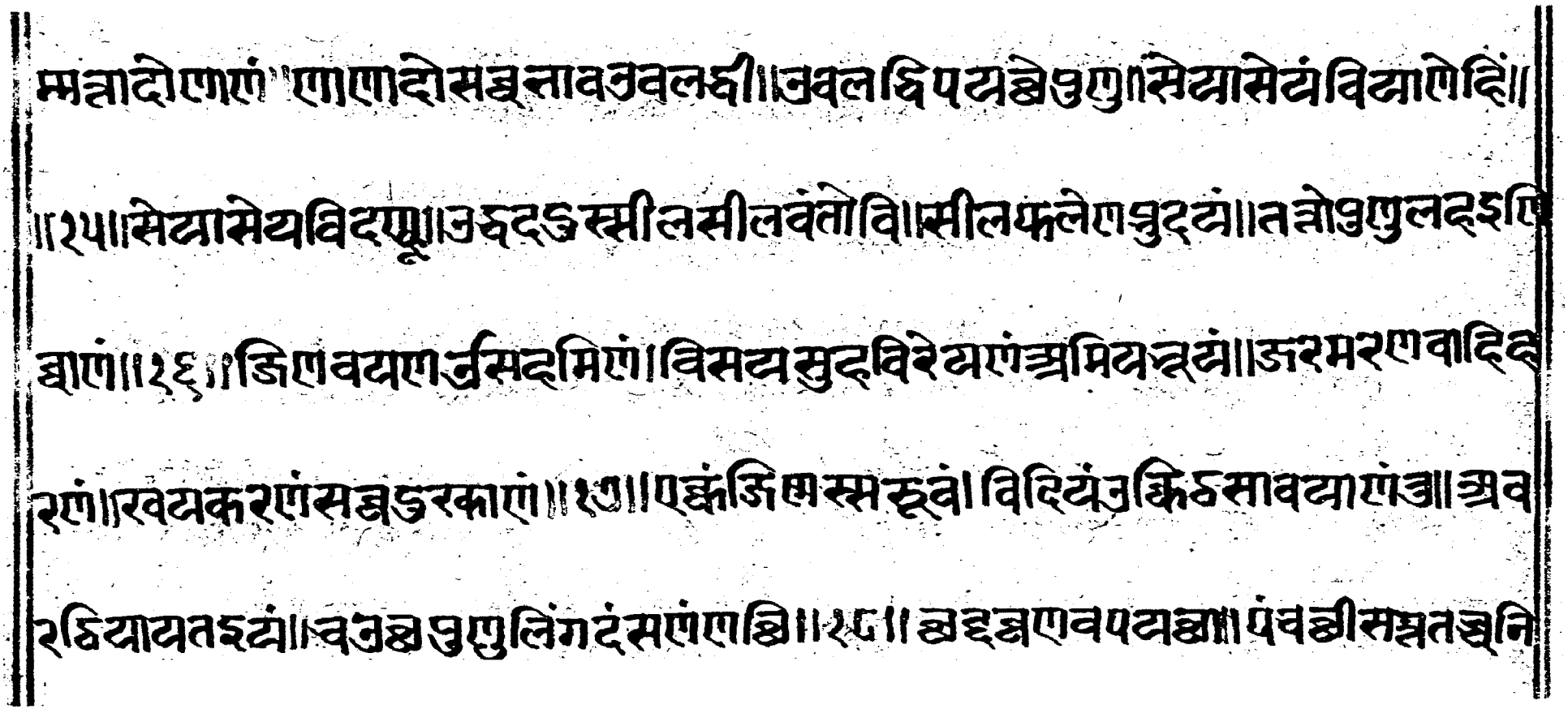

म्मत्ताओणाणं णाणाओसव्वभावउवलद्धी॥उवलद्धिपयत्थेउण॥सेयासेयंवियाणेदि॥
॥२५॥सेयासेयविदण्हू॥उद्धुददुस्सीलसीलवंतोवि॥सीलफलेणब्भुदयं॥तत्तोउणलहइणि
व्वाणं॥२६॥जिणवयणमोसहमिणं॥विसयसुहविरेयणंअमियभूयं॥जरमरणवाहि
हरणं॥खयकरणंसव्वदुक्खाणं॥२७॥एक्कंजिणस्सरूवं॥विदियंउक्किट्ठसावयाणंतु॥अव
रट्ठियायतइयं॥चउत्थउणलिंगदंसणंणत्थि॥२८॥छद्दव्वणवपयत्था॥पंचत्थीसत्ततच्चनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ४

अष्टपाहुड

परिहरधम्मेअहिंसाए॥२५॥ पव्वज्जसंगचाए। पयट्टसुतवेसुसंजमेभावे। होइसुविसुद्धझाणं। णि
म्मोहेवीयरायत्ते॥२६॥ मिच्छादंसणमग्गे। मलिणेअण्णाणमोहदोसेहिं। वज्झंतिमूढजीवा॥मि
च्छत्ताबुद्धिउदयेण॥२७॥ सम्मदंसणिपस्सदि। जाणदिणाणेणदव्वपज्जाया। सम्मेणयसद्द
हदिय। परिहरदिचरित्तजेदोसा॥२८॥ एएतिण्णिविभावा। हवंतिजीवस्समोहरहियस्स॥
णियगुणआराहंतो। अचिरेणविकम्मपरिहरइ॥२९॥ संखिज्जमसंखिज्जं। गुणंचसंसारि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टपा०
७

मेसमिन्नाणं॥सम्मत्तमणुचरंता करंति दुक्खक्खयंधीरा॥२०॥दुविहं संजमचरणं।सायारं

तह हवे णिरायारं॥सायारं सग्गंथे।परिग्गहरहियं णिरायारं॥२१॥दंसणवयसामाइय।पो

सहसच्चित्तरायभत्तेय।बंभारंभपरिग्गह।अणुमणउद्दिट्ठदेसविरदोय॥२२॥पंचेव अणुव्वया

इं।गुणव्वयाइं तह तिण्णेय।सिक्खावयचत्तारि।संयमचरणं च सायारं॥२३॥थूले तसकायव

हे।थूले मोसे तितिक्ख थूले य।परिहारो परमहिले।परिग्गहारंभपरिमाणं॥२४॥दिसिविदिसिमा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

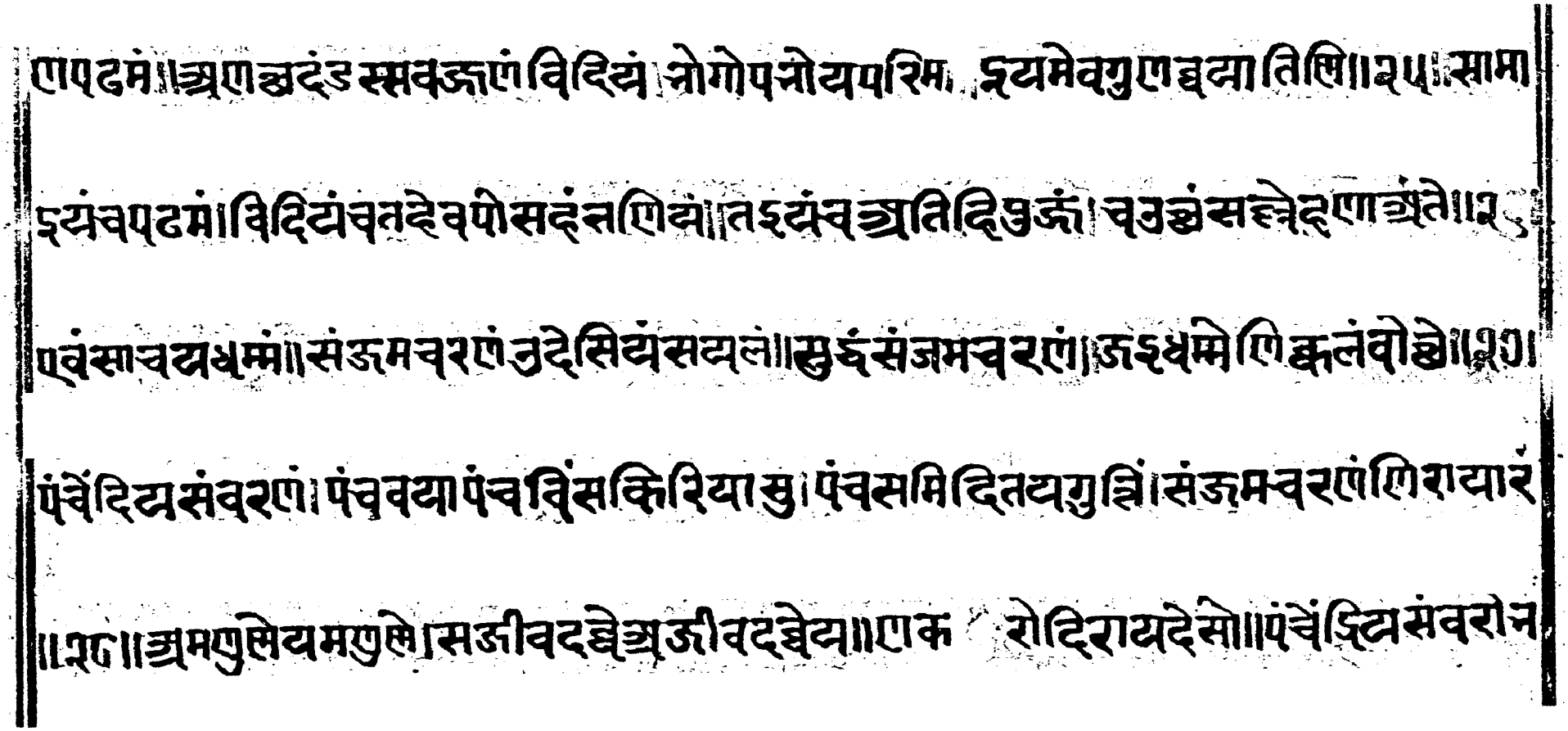

णपढमं ॥ अणत्थदंड स्सवज्जणं विदियं ॥ भोगोपभोयपरिमा इयमेवगुणव्वदा तिण्णि ॥२५॥ सामा

इयंचपढमं । विदियंचतदेवपोसहं तणियं ॥ तइयंच अतिहिपुज्जं । चउत्थं सल्लेहणा अंते ॥२६

एवं सावयधम्मं ॥ संजमचरणं उदेसियं सयलं ॥ सुद्धं संजमचरणं । जइधम्मे णिक्कलं वोच्छे ॥२७॥

पंचेंदियसंवरणं । पंचवया पंचविंसकिरियासु । पंचसमिदितयगुत्ती । संजमचरणं णिरायारं

॥२८॥ अमणुण्णेय मणुण्णे । सजीवदव्वे अजीवदव्वेय ॥ णक रोदि रायदोसो ॥ पंचेंदियसंवरो भ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टपा०
८

णिउ ॥२९॥ हिंसाविरइ अहिंसा ॥ असच्चविरइं अदत्तविर ईय ॥ तुरियं अबंभविरइ पंचमसं
गम्मि विरईय ॥३०॥ साहंति जं महल्ला ॥ आयरियं जं महल्लपुव्वेहिं ॥ जं च महल्लाणि तदो ॥ मह
व्वयाइं तहेयाइं ॥३१॥ वयगुत्ती मणगुत्ती ॥ इरियासमदी सुदाणणिक्खेवो ॥ अवलोयभोयणा
ए । हिंसाए भावण होंति ॥३२॥ कोहभयहासलोहा । मोहाविवरीयभावणा चेव । विदियस्स भा
वणा ए । एयं चेव य तहा होंति ॥३३॥ सुण्णायारणिवासो । विमोचियावास जं परोधं च । एसणसुद्धिस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सादर भेंट

पाठ ५
अष्टपाहुड

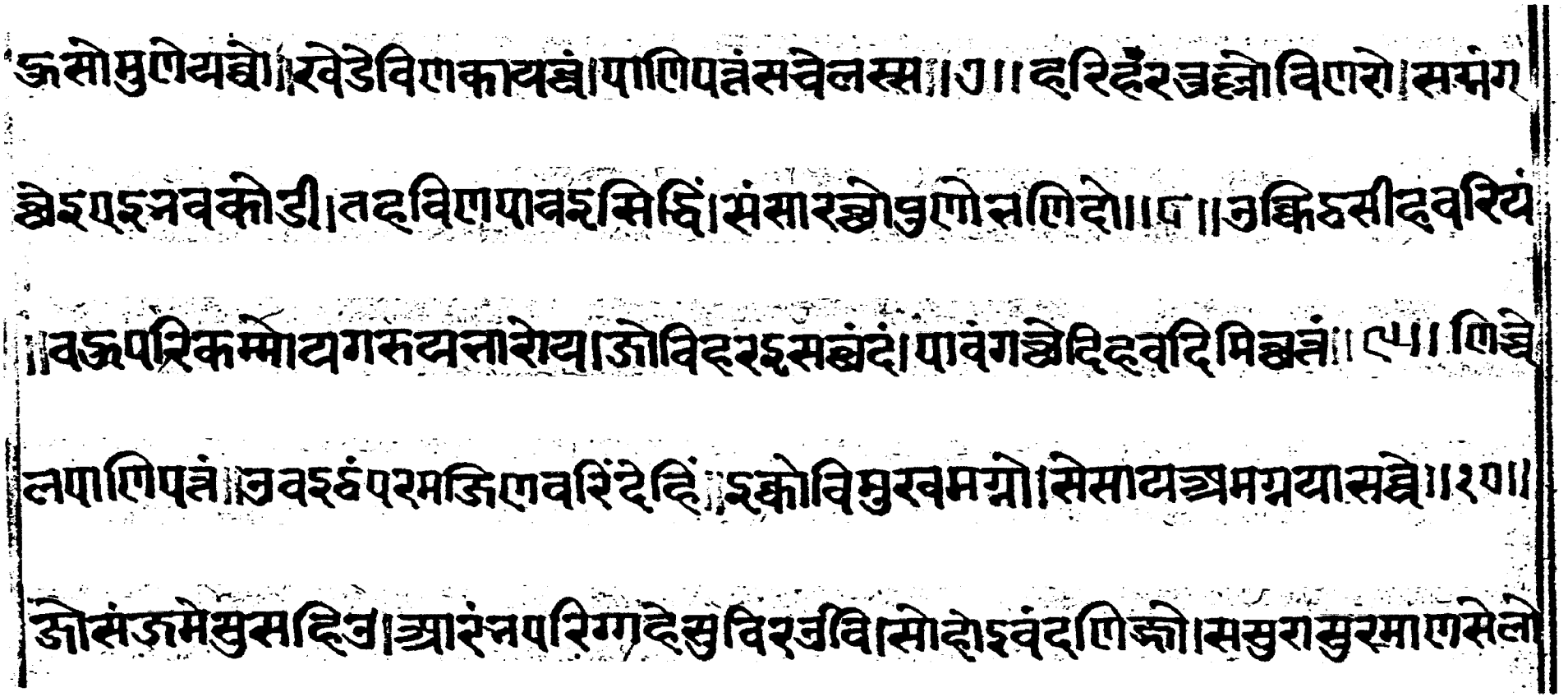

ऊसोमुणेयव्वो।खेडेविणकायव्वं।पाणिपत्तंसचेलस्स॥७॥हरिहरतुल्लोविणरो।सग्गं
च्छेइएइभवकोडी।तहविणपावइसिद्धिं।संसारत्थोपुणोभणिदो॥८॥उक्किट्ठसीहचरियं
।बहुपरिकम्मोयगरुयभारोय।जोविहरइसच्छंदं।पावंगच्छेदिहोदिमिच्छत्तं॥९॥णिच्चे
लपाणिपत्तं।उवइट्ठंपरमजिणवरिंदेहिं।इक्कोविमुक्खमग्गो।सेसायअमग्गयासव्वे॥१०॥
जोसंजमेसुसहिओ।आरंभपरिग्गहेसुविरओवि।सोहोइवंदणिज्जो।ससुरासुरमाणसेलो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टपा०
११

ए।।११ जेबावीसपरीसह।सहंतिसत्तीसएहिंसंजुत्ता।तेहुंतिवंदणीया।।कम्मक्खयणि।

ज्जरासाहू।।१२।।अविसेसीजेलिंगी।दंसणणाणेणसम्मसंजुत्ता।।चेलेणपरिग्गहिया।तेभ

णियाइछणिज्जाया।।१३।।इछायारमहत्थं।सुत्तठिओजोहुछंडएकम्मं।ठाणेठियसम्मत्तं।

परलोइसुहंकरोहोइ।।१४ अहपुणअप्पाणिछदि।धम्मंसुकरेदिणिरवसेसाइ।तहविण

।पावदिसिद्धिं।संसारत्थोपुणोभणिदो।।१५।।एएणकारणेणय।तंअप्पासद्दहेहतिविहेण ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊणयलदेहमोरक्कं।तं जाणिज्जइ पयत्तेण॥१६॥वालग्गकोडिमित्तं।परिग्गहगहणं ण होइ सा

हूणं।भुंजेइ पाणिपत्ते।दिण्णण्णं इक्कठाणम्मि॥१७॥ जहजायरूवसरिसो॥ तिलतुसमित्तं ण गि

हदि हत्थेसु।जइ लेइ अप्पबहुयं।तत्तो पुण जाइ णिग्गोयं॥१८॥जस्स परिग्गहगहणं।अ

प्पं बहुयं च हवइ लिंगस्स॥सो गरहिउ जिणवयणे।परिगहरहिउ णिरायारो॥१९॥ पंच

महव्वयजुत्तो।तिहिं गुत्तिहिं जो स संजदो होइ।णिग्गंथमुरकमग्गो॥ सो होदि हु वंदणिज्जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टपाह० १२

य॥२०॥उइयं च वुत्तलिंगं उक्किट्ठं अवरसावयाणं च। भिक्खं भमेइ पत्तो॥समिदीभासेण मो

णेण॥२१॥लिंगं इत्थीण हवदि भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि॥अज्जिय वि इक्कवत्था वत्थावर

णेण भुंजेइ॥२२॥ण वि सिज्झइ वत्थधरो॥जिणसासण जइ वि होइ तित्थयरो॥णग्गो विमुक्खम

ग्गो सेसा उम्मग्गया सव्वे॥२३॥लिंगम्मि य इत्थीणं॥थणंतरे णाहिकक्खदेसेसु॥भणिओ सुहु

मो काओ तेसिं कह होइ पव्वज्जा॥२४॥जइ दंसणेण सुद्धा॥उत्ता मग्गेण सा वि संजुत्ता॥घो १२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ६

अष्टपाहुड

ष्टपा० २५ साहोइवंदणीया॥णिग्गंथासंजदापडिमा॥२१॥दंसणअणंतणाणं।अणंतवीरियअणंत

सुक्खाय।सासयसुक्खअदेहा।मुक्काकम्मट्ठबंधेहिं॥२२॥णिरुवममचलमक्खोहा॥णिम्मवि

याजंगमेणरूवेण।सिद्धठाणम्मिठिया।वोसरपडिमाधुवोसिद्धा॥२३॥पडिमा२॥दंसेइमो।

क्खमग्गं।सम्मत्तंसंजमंसुधम्मंच।णिग्गंथंणाणमयं।जिणमग्गेदंसणंभणियं॥२४॥जहफुल्लं

गंधमयं॥भवदिहुखीरंसघियमयंचावि।तहदंसणम्मिसम्मं।णाणमयंहोइरूवच्छं॥२५॥ २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।दंसणं।।४।।जिणविंबंणाणमयं।संजमसुद्धंसुवीयरायंच।जंदेइदिखसिखा।कम्मख
यकारणेसुद्धा।।१६।।तस्सयकरहपणामं।सव्वंपुज्जंचविणयवच्छल्लं।जस्सयदंसणणा
णं।अत्थिधुवंचेयणाभावो।।१७।।तववयगुणेहिंसुद्धो।जाणदिपिच्छेइसुद्धसम्मत्तं।अरहं
तमुद्दएसा।दायारीदिखसिखाय।।१८।।जिणविंबं।।५।।दढसंजममुद्दाए।इंदियमुद्दाकसा
यदढमुद्दा।।मुद्दाइहणाणाए।जिणमुद्दाएरिसाभणिया।।१९।।जिणमुद्दा।।६।।संजमसम्मत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छ॰पा॰ १५ स्सय।सुग्गणजोयस्समोरकमग्गस्स।णाणेणलद्दिलरकं।तम्हाणाणंचणायव्वं॥२०॥जद

णविलद्दिजलरकं॥रद्दिकंडस्सवेज्झयविहीणो।तद्दणविलरकद्दिलरकं॥अणाणीमोरक

स॰ मग्गस्स॥२१॥णाणंपुरिस्सद्ववदि।लद्दिसुपुरिसोविविणयसंजुत्तो॥णाणेणलद्दिल

रकं।लरकंतोमोरकमग्गस्स॥२२॥मइधणुदंजस्सथिरं।सुइगुणवाणासुअस्थिरयणत्तं॥य

रमछबद्दलरको।णविचुक्कदिमोरकमग्गस्स॥२३॥णाणं॥७॥सोदेवोजोअच्छं।धम्मंकामंसुदे १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इणाणंच।सोदेइउज्स्सम्मच्छिडा।अज्जोधम्मोयपव्वज्जा॥२३॥धम्मोदयाविसुद्धो॥पव्वज्जासव्वसंग

परिचत्ता।देवोववगयमोहो।उदयकरोसव्वजीवाणं॥२४॥देवं॥णाववयसंमत्तविसुद्धो॥पं

चेंदियसंजदेणिराविरक्को।एदाणंउमणीतिच्छो।दिरका।सिरका।सुएहाणेण॥२६॥जंणिम्मलंसुध

म्मं।सम्मत्तंसंजमंतवंणाणं।तंतिच्छंजिणमग्गे।दवेइऊदिसंतिभावेण॥२७॥तिच्छं॥ए॥णमेव

वणेदियसं।दव्वेभावेयसगुणपज्जाया।चउणायदिसंपदिमे।भावाभावंतिच्छरहंतं॥२८॥दंस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ७

दशवैकालिक

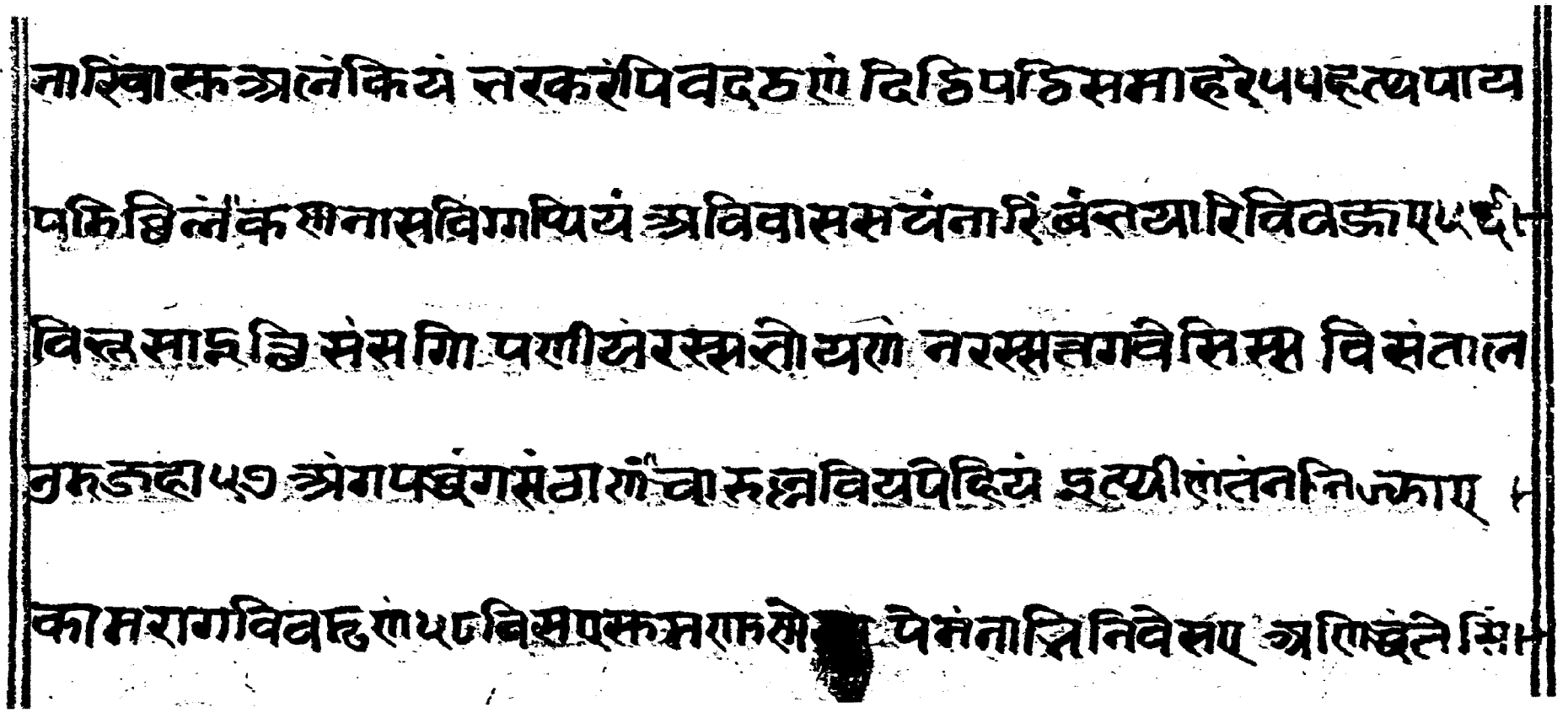

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

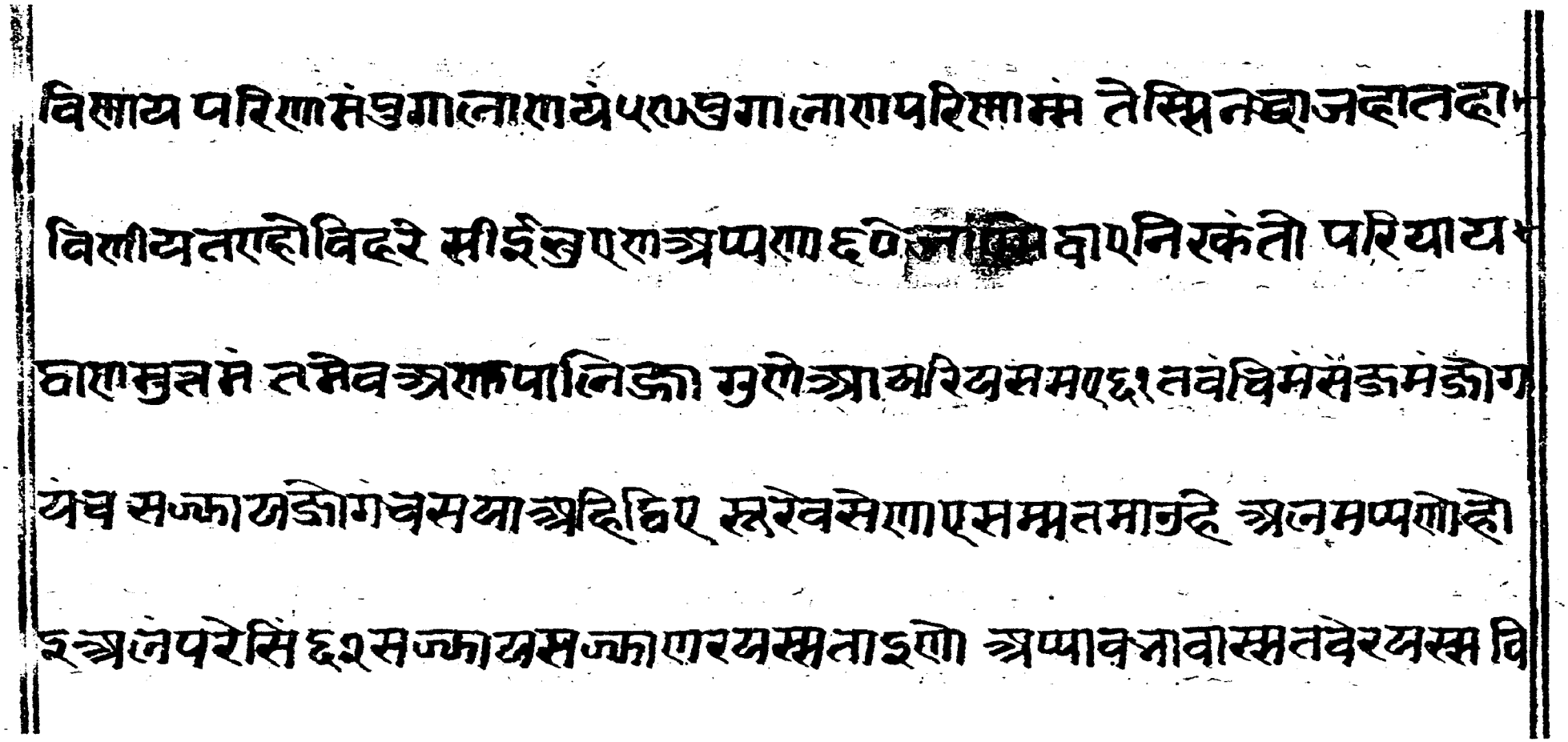

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्कडइ इं उं सिमलं पुरेकडं समीरियरुप्पमलं व जोइणा ॥ ६३ ॥ से तारिसे दुक्खसहे जिइंदि

ए सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे विरायई कम्मघणम्मि अवगए कसिणब्भपुडावगमे

व चंदिमे त्ति बेमि ॥ ६४ ॥ आयारपणिहिअज्झयणं सम्मत्तं ८ ॥ थंभा व कोहा व मयप्पमा

या गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे सो चेव उ तस्स अभूइभावो फलं व कीयस्स वहाय ४५

होइ १ जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा हीलंति मिच्छं पडिव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊमाणा करेंति आसायणं ते गुरूणं २ पगईए मंदा वि भवंति एगे डहरा वि य जे सुय

बुद्धोववेया आयारमंता गुणसुट्ठियप्पा जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ३ जे

यावि नागं डहरं ति नच्चा आसायए से अहियाय होइ एवायरियं पि हु हीलयंतो नियच्छ

ई जाइपहं खु मंदो ४ आसीविसो वावि परं सुरुट्ठो किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा आ

यरियपाया पुण अप्पसन्ना अबोहि आसायण नत्थि मुक्खो ५ जो पावगं जलियमवक्क

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ८

कुम्मापुत्तचरियं

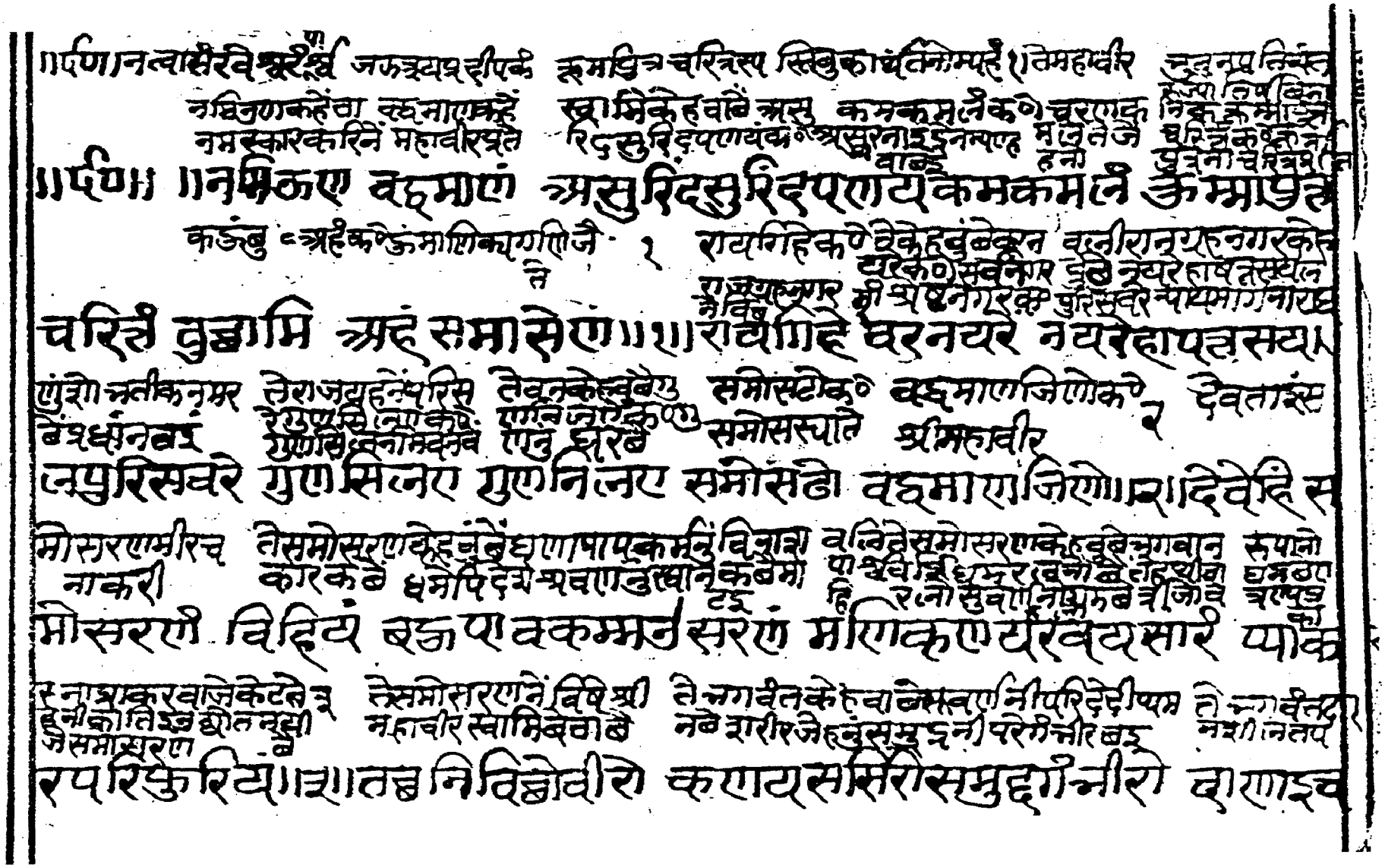

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउःप्रकारकं परमअत्यंतआल्हादकरकथ ४ दानशीलतपभावनाजहोए जेदेंकरी च्यारप्रकारें धर्म
मोंपदेशदेवै

चउप्पयारं कहेइ धम्मं परमरम्मं ॥४॥ दाणं सीलं तव भावणाए एएहिं चउव्विहो

७ई तेदानादी सर्वधर्मनेविषेमु तेभावनोमोटोप्रभावमहिमाछें ५ तेदेंकरी च्यारप्रकारे धर्मछे
स्वरूपणेंभावजाणवो तेभवबलिके छेदिं संसारस मुद्रतरवाने

हवइ धम्मो सव्वेसु तेसु भावो महप्पभावो मुणेअव्वो ॥५॥ भावो भवुदहितर

नोका उच्यते बलीतिभावकेरवो मेस्वर्गजेदेवलोक अनेंअप बलीमावक्ष मकिस्थोछे भव्यप्राणिने मेंअचिंत्यअ
कां जेमोक्षलिहिंजवानेंपगथीउंछई मनोवांछितसुखपामवानइ

णि भावो सग्गापवग्गपुरसरणी भविआणं मणच्चिंतिअ अचिंतचिं

द्वितीयचिंतामणीरत्न ६ तेभावनेधरतोथकोश्री पामुं छेअध्द सम्यक्त्व चारित्रदीक्षाविनाचारि ग
रूमदिचक्री जकुमार तत्त्वतेजेएणइं त्ररहितपणें हवा
स्थछइ

तामणी भावो ॥६॥ भावेणक्कमपुत्तो अवगय तत्तो अगारिआ चरित्तो गि

सेरह्यो थकोइंपणिपवल सर्वलोकालोकविकाशकके ७ ऐप्रकारेअगीवंतनामुख्य थीसांभलनिसुकोछे
त वल्कज्ञानपाम्यो गृहस्थावासनेंजेलेएहवाश्रीगौतमस्वामीबोल्या

हवासे वि वसंतो संपत्तो केवलं नाणं ॥७॥ इत्तरेइद नइनामें अणगारे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेगौतमस्वामि केहवा छे श्रीभ अंतेवासी पासेवर्ती वली जेहनुं गोत्र समचउरस संस्थाने छे का वज्र
गवंत महावीरना शिष्य छइं गौतम नाम छइं इं जेहनो ऋषि नाराच

भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अंतेवासी गोयमगुत्तो समचउरंससरीरे वज्ज

चापय पर्वे संघयणे समाले रूतछे सुवर्णनी रेखा सरखुं देदीप्यमान कमलसरखो वली गौतम केहवा छे सर्वउत्कृष्ट तप
देह जेहनुं उज्ज्वल छे देह छे जेहनो वली वेदय सर्व करी तपनो करणहार ... जेहनो ... छे तप जेहनुं

रिसहनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे

पणमासादिक मोटा तपना सोवीछे तपस्या जेह अप्रमत्तपणा ब्रह्मचर्य वली गौतम केहवा छे वली गौतम केहवा छे
तत्पनो कर
नारा अहनार छे जीणे वागे तम छे थी उत्कृष्ट ब्रह्मचर्य जेहनुं सातृशरीरनी ... राखे जेहनो एकजोज

महातवे घोरतवे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखि

तपणी तवाने एहवी तेजोलेश्या वली गौतम केहवा वली गौतम स्वामि केहवा छे वली श्रीगौतम स्वामि केहवा छे पांच
गोपवी छे जेणें चवदपूर्वधारी छ मति श्रुत अवधि मनःपर्यव ए च्यार ज्ञान छे जेहने सेसाधुना परिवार साथे संयुक्त

त्तविउलतेयलेस्से चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसए

ने विषे विहारकरता थई बहुनां तप करी पोताना आत्माने संयमादिके करी स श्रासन पक्के श्री गौतमस्वामि
कथई दवाथई उठिने

हिंसद्धिं संपरिवुडे छट्ठंछट्ठेणं अप्पाणं भावेमाणे [illegible] २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान श्रीमहावीरस्वामीप्रतित्रणएवार आदरेकरीनें संवलेंआवर्त्ते करीनइ नमस्कारक

मनशुद्धें प्रदक्षणकरे

भगवंमहावीरंतिरक्खुत्तो आयाहिणीपयाहिणं करेइकरित्ता वंदइनमं

रेवांदइं विसेषेंवादनिनम एअकारेपुवत्तास्वा संभुवपुतेंकहईवइ हेभगवनक्रुए किमते

स्कारकरिने कर्मवित्रवइ स्माहित्रै

सइवंदित्ता नमंसित्ता एवंवयासी भगवंकोनामकम्माइत्ते कहेवं

गृहवासेंरसाप्यकाजअनिला दिनावता पकेज अनंतलोका एहवुवीजुर कुठकेदृप दिकेंआत्स लिताएहवु

भावतां लोकप्रकाश हि

तेणगिहवासेवसंतेणं भावणं भावंतेणं अणंतें अणुत्तरं निव्वाघा

कर्मादिआवर समयवस्तुचि एलिमिनाचे एहवुंवरप्रधानकेवलज्ञानविशेषोपयोगरूपबीजुप्रधानके

णरहित पत्यक्ष छनीपूरेसंपूर्ण वलदर्शनिसामान्योपयोगरूपबेदाकसां

यं निरावरणं कसिणं पडिपुन्नं केवलवरनाणदंसणं समुप्पज्जिं

एणोतमनापूछनेंअनंतर श्रमणतपस्वी श्रीमहावीर एकयोजनप्रमाणविस्तरखेने सुधाअमृतसरखी

स्वामीजेते हनोदवनिसरी

तएणंसमणेभगवंमहावीरे जोयणम्मामिणीए सुधासमाणीए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाणीइंकरी कहेंवाहवा हेगोतमजेतुंमुझनैंपुछई ते मुझंवेत्वंहेगोतम कमा
ने पुत्रतुंचरित्र आश्चर्यका

वाणीए वागरेइ गोयम जंमेपुच्छंसि कम्मापुत्तस्स चरिअब्भ

रा एकाग्रमनेथइनइं प्रारंभीनेंसमाप्तिपर्यंतसांभलो ८ तेचरित्रश्रीवी
रप्रभुकहेछे

रियं एगग्गमणो होउ समग्गामवितं निसामेसु ।।७।। तथाही ।। जं

जंबूनामाद्वी भरतनामाक्षेत्र नामथइभागने दुर्गमपुरनामेंनगर छें तेनगर
पनेविशें विषे

बुद्दीविदेवे नरहखित्तस्स मज्झयारंमि डुग्गामपुराभिहाणे जग

सर्वनगरमांश्रेष्ठ तेहेंद्रोणनामेंराजा तेराजाकेहवोछें प्रतापजस्योईं क
नगरछे राज्यकरेछे रीनेंजीत्योछें

पहाणडुरंअ ब्हि ।।२।। तब्बयंदोणनरिंदो पपयावनज्जिइ निज्जिअ

सूर्यतेजेंतैं निसें शत्रुइंरहित निःकंटकराज्यनैंपालतछई १० तेंडे
णी

दिणिंदो निच्चअरिअसावङ्कं पालइ निक्कंटयं रज्जं ।।१०।। त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ९

कुम्मापुत्तचरियं

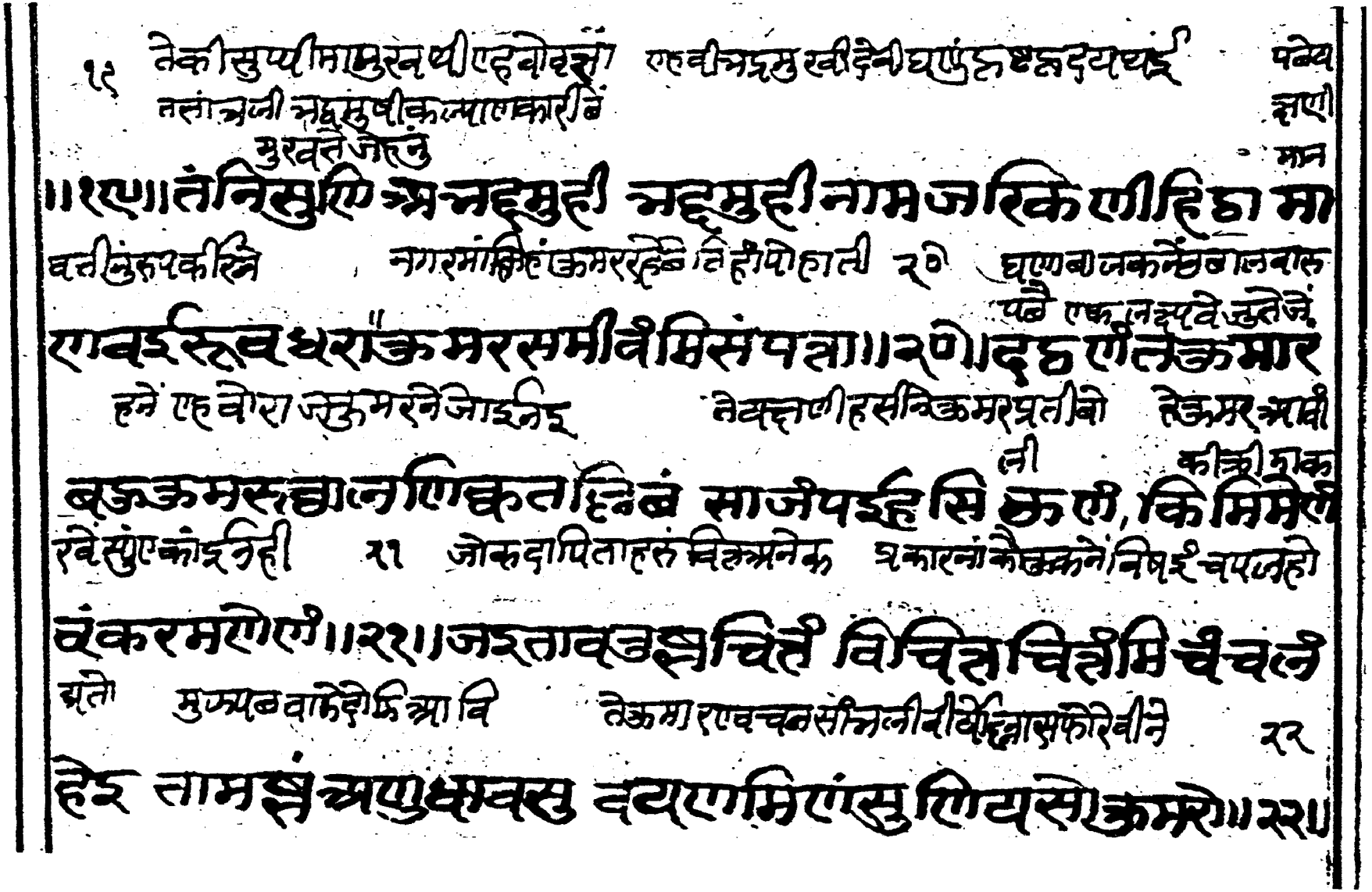

१९ तेकी सुण्यो मानुस्नथी एह वोरत्तां एहवी भद्रमुखीइ ने घणुं हर्ष हृदय पर्ई पर्नेव
तलां भणी भद्रमुखी कल्याणकारी बें गाणी
मुखवते जेहनु मान
॥१९॥ तं निसुणिऊ भद्दमुही भद्दमुही नाम जक्खिणी हिट्ठा मा
वत्ती लुरूपकीने नगरमांहिं कुमरहें कें ते होपो हाती २० घणा बाजकने बालवाल
पछे एक नस्पवे जुतेजं
णवई रूव धरा कुमर समीवंमि संपत्ता ॥२०॥ दट्ठूण तं कुमार
हने एह वोरा जुकुमरने जोइनइ तेवक्ताणी हसन्तिकुमरप्रतीबो तेकुमर आवी
नी कोकी मक
बहुकुमरसहस्स लक्खणिक्कतं हिडंबं साजे पईह सि कउणी, किमिमेणं
रवें सुंए कांइ नेही २१ जोकदापि ता हरं चित्तअनेक प्रकारनां कौतुकने निषइं चपलहो
वं करमणेणं ॥२१॥ जइ ताव तुज्झ चित्ते विचित्त चित्तंमि चंचलं
अंते मुण्यव वाकें दोफि आ वि तेकुमार एवचनसांभलीनें दीर्घ उच्छ्वास फोरवीने २२
हेर ताम संमणुधावसु वयणमिणं सुणियसो कुमरो ॥२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५

तेकन्याइंविदोम्यो तेकन्याने आणवालपकैअकाळनवै चिंहते जेहनुएहवो ऊमरपब्बा मेबेवेवीआ

तेकन्नं अणुधावइ तन्मयणंकवहलाकलिआ चिंतो तप्पुर
गलवइं इंमकरतां देवी कुमर नेपोतानवनमी २३ घणाशालनाव दाघणवनगारहते
लेइगइ हनेहेवल

नंधावेति सा विकलेविय वणेनेइ ॥२३॥ वकसालवम सम्महो
पातलमार्गेकरीनइंपातालमांलेइगइतिहां सुवर्णमयघटितेअतीवम गेहरदीवेरत्नमाई
ऊमरई

पहेणघायालम समाणीन सोपासइ कणयमवी सुरअवणम
संयुक्तदेवभुवनहुं २४ नेभुवनकेहवुंछे पद्मरागादिरत्नमयबेंस्तंभ प्रआसमूहेंगह्यो
तुं तेकहेंवरु पंक्ति जिहां

इंवरमणीयं ॥२४॥ तं चके रिसं रयणमय थंभपंती कंतीनरइ
लित्तछेमधमाजेहनो वलीकेहवुंबेभुवन मणीमयतोरणनिपंक्तिकइंकरिअसंतको
तिपइछेकांतिइंक भुरितछुचन

रिअ ज्जितरपएसं मणिमय तोरणधोरणि तरुणपहा किरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयु २५ वली तिहंवन केह हुंछै मणिमय करी हर्षित आनंद मयी कस्या
थंभनें विषें रही पूतली नाटारंभनें छैं नन सछु राय

कवुरिअ ॥२५॥ मणिमय थंभ अहिठिअ पुत्तलिआ केलिरवा

जिहां बकरस्व नाइंचि ओं विश्राम लें करी शोभता गोख मां पंखि इं करी शो
मायमानजे वुवनजणाय छै

लअ जणोहं बकुनरिविवित्तिचिविअ गवरवसंदोहकयसोहे

२५ त्रिभुवन ना लोक नों चित्त नें आश्चर्य नुं करणहार एहवुं देवनुं यनजो ईनें अति अ
वो कफेरहइत्तिदई नहीं

॥२६॥ एअमवलोइऊण सुरभुवणं भुवण चित्तवुइयकरं अइ
आर्यपाम्योमतो कुमर एतत्र का ईचिंतववा लागो २७ सुं इंद्र जालदेखुं स्वप्न

विम्हयमावन्नो कुमरोइ अचिंतिउं लग्गो ॥२७॥ किं इंद जालमेअं
उंघमां स्वप्नदेखुंछुं अथवा माहरी नगरी थकी एहनवनमां के

सुमिणं सुसणं मिदासइ एंहव अहवा निअनयरीउ इह नवरणे ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८ एप्रकारेपञ्चकत्वांपम्यो। व्यकुल कमठने कोमलनसघ्याने चिंपि वेसामी

थयो। नई

केण आणीतं।।२८।।इअसंदेहउं जलिअं कमठं विनिवेसिऊणपहत्तेणं के

पंतरी कमठभतो जे न नीमि हे स्वाकं चैतरनीस्त्रिबु ऊंकऊते २९ अजि माहरो आजमे

नू तुसां अन्न मोटो भाग्ये

विलचइ चेंतरवज्ज सामि अवयणं निसामेसु।।२९।। अटुमए अट्ठम

वऊ दिवसे स्वामीइणि घणुं आणंदनपनो। तेमाटे मइ कुरुनेपुष्पादिके अत्यंतसुगंधिवे

नमधरभागजि

रा चिरेण कालेण नाहदिट्ठोसि सुरभिवणे सुरत्तुवणे निअकज्जे

होरंह वाक्यवचनने वि ३० आजनी स्वैमिहरमननामनो रुपकेरन्धपादपजेकल्पवृक्षफूं

पेला नीबु २७

आणिनसिउमं।।३०।।अर्ज्जं चिअ मम्मसमणो मणोरहो कप्पपायवो

तोपया वे जेदानादी करूं सुकृतादि आज हे स्वामी तुझनेमलो अथ ३१ एप्रकारे

कनाअनुभावथी थयुं वचनसा

फलिउं जंसुकसुकयवसउं अज्जतुमं मज्झमिलिओसि।।३१।।ईअव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १०

कुम्मापुत्तचरियं

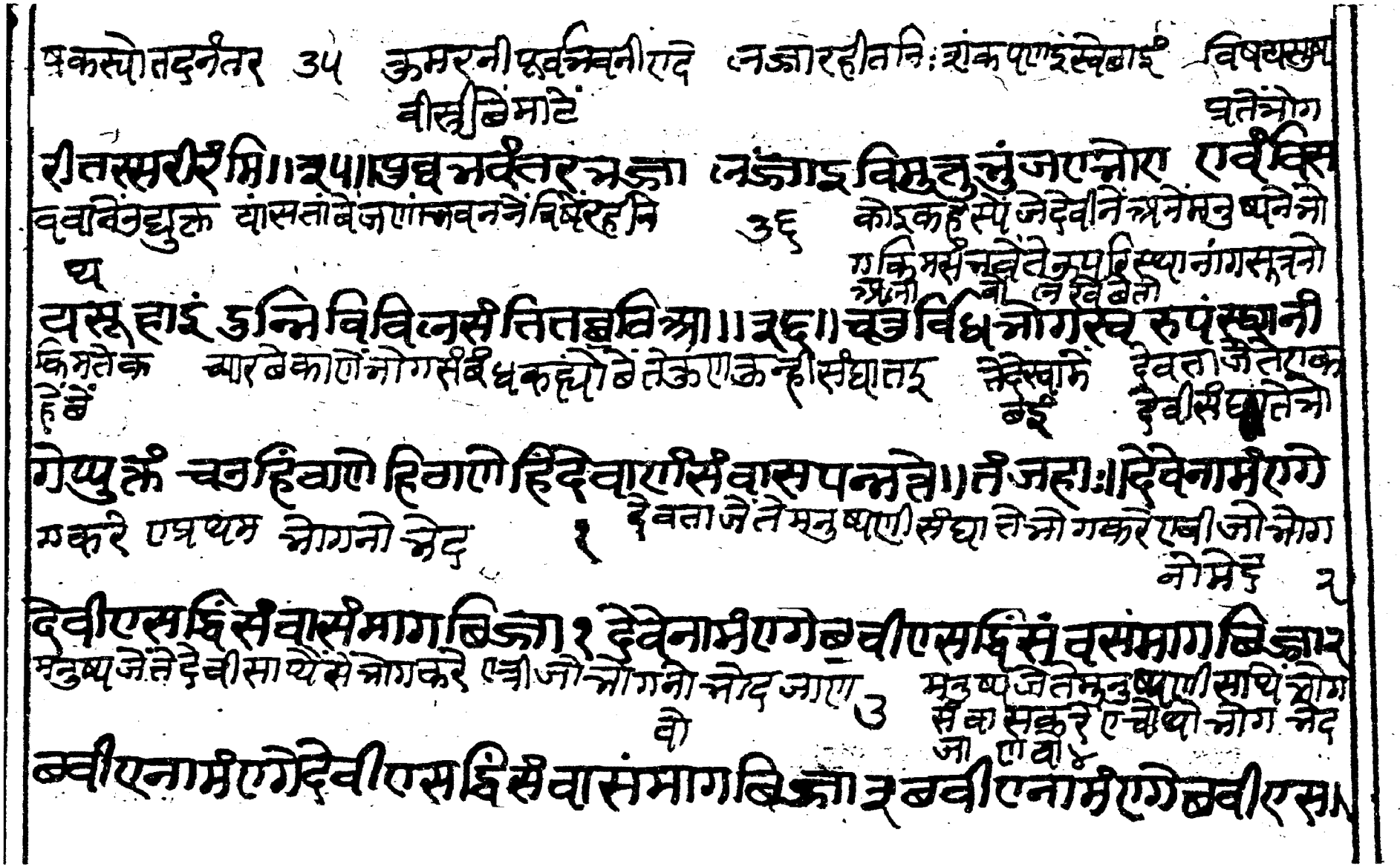

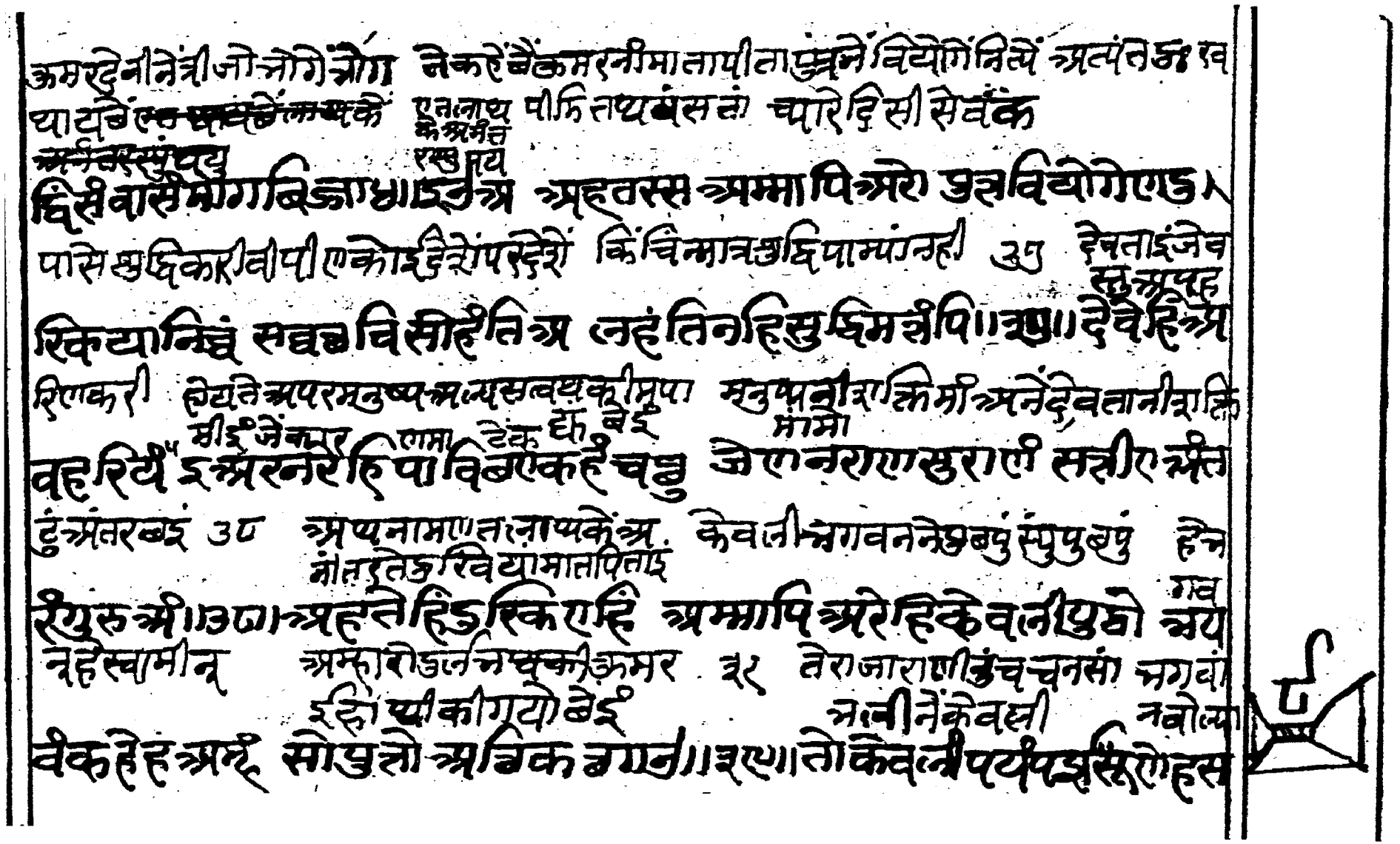

ऊमरदे नी नेत्री जो जोगे जोग तेकरे बैंकमरनी मातापीता भ्रनें वियोगें नित्यें अत्यंत ज स्व

यापे बें ~~... ...~~ के एतलाथ पीडितथ बंसतां चारे दिसी सेवंक

के अमीत

~~... स्सु प्य~~ रस्सु प्य

द्दिसी वासे भोग विज्जा ॥ ३३ ॥ अहवस्स अम्मा पिअरे उत्त वियोगेणड ।

पासे शुद्धिकरावीपी ए कोइ देशेंपरदेशें किंचिन्मात्रशुद्धि पाम्यां नहीं ॥ ३३ देवताइं जेव

सुअपह

रिकया न्निं सव्व विसोहेंति अ नहं तिन हि सुद्धि मन्नेपि ॥ ३४ ॥ देवेहिं अ

रिणकरी हेयते अपरमनुष्य अन्यसत्वथकी सुपा मनुष्पनी शक्ति मां अनें देवतानी शक्ति

मीई जेकमर लागा टेक घ बेई मांमो

वहरियँ इ अरनरेहि पा विअएकहैं चडु ऊ ए नराए सुराएं सत्तीए अंत

टुं अंतरबई ३५ अप्पनामण तत्जाप्पके अ केवली भगवनने पुरपुं सुपुरपुं हेन

मांतरूतेकरविया मातपिताइ

गव

रेंपुरु अ ॥ ३५ ॥ अहते हिं स्किएहिं अम्मापिअरे हि केवलीपुट्ठो भय

नेहेस्वामी न अम्हारो कर्मजन्मकी कुमर ३६ तेराजा राणी कुंचचनसा भगवां

इहां पूछा कीगयो बेई मतीनें केवली नबोल्या

वीकहे ह अम्हं सोपुत्तो अविक कयन ॥ ३६ ॥ तो केवली पयंपइ इंसूणेहस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

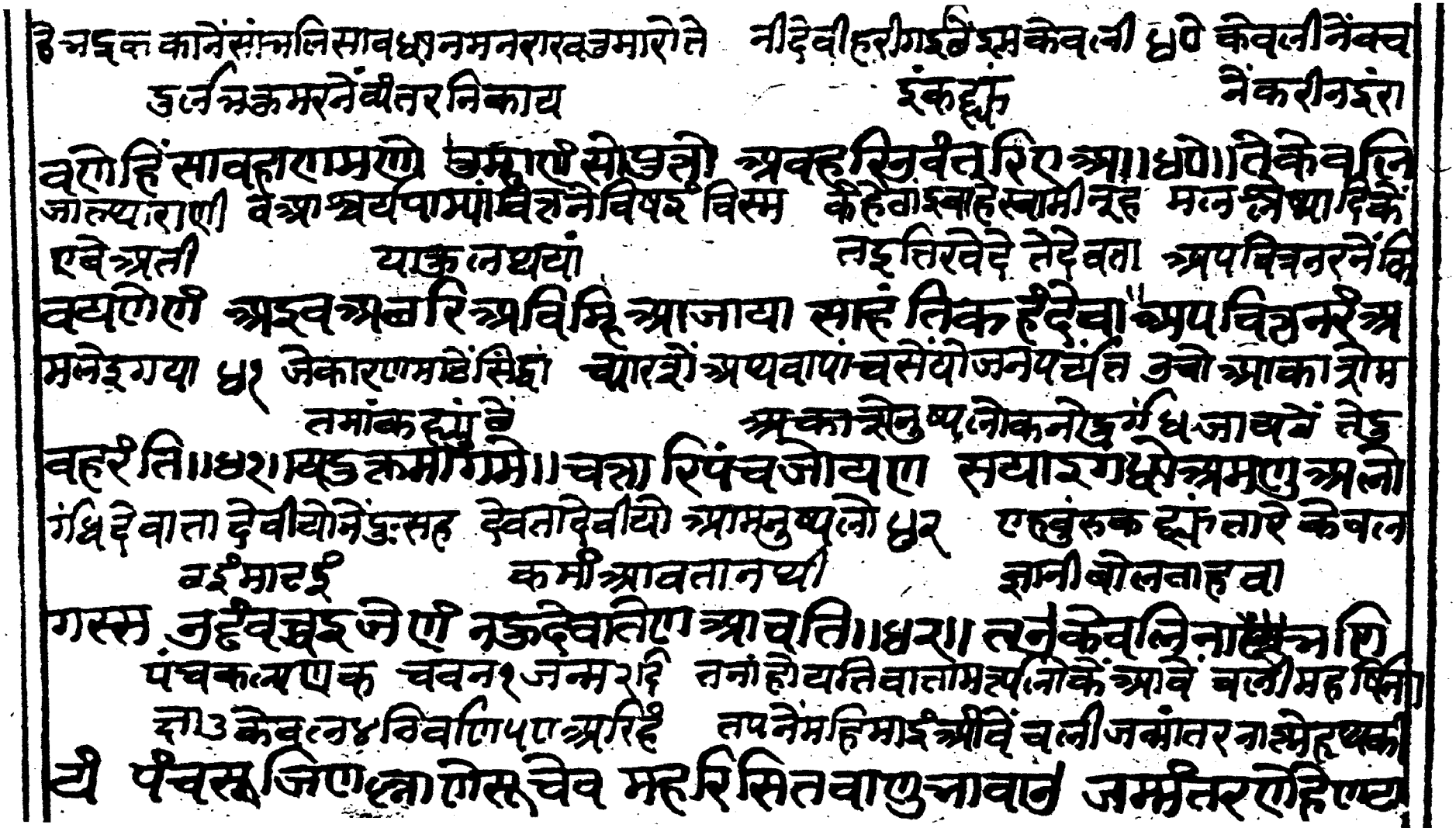

३ जइक कानेंसांजलिसावधानमनरागरवडमारोते   नीदेवीहरीगइछेसकेवली ४७ केवलीनेंवच
डर्जेऊकमरनेंवीतर निकाय   इंकहूं   नेंकरीनइरा
वणेहिं सावहाणमणे भमाणे सोउतो अवहरिवंतरिए आ॥४७॥ तिकेवलि
जाल्यराणी वेआश्चर्यपामांवैरनेविषइ विस्म   केहेवाश्चाहेस्वामीनइह मल्लीष्पादिकें
एवेअती   याकुलथयां   तइत्तिरवेदे तेदेवता अपवित्रनरनें कि
वयणेणं अरवअवरिअविम्हि आजाया साहं तिकहं देवा अपवित्रनरे अ
मलेइगया ४८ जेकारणमाटेंसिद्धां चोरशें अपवापांचसेंयोजनपर्यंत ऊंचो आकाशेम
तमांक हुं छे   अकाशेनुष्पलोकनोदुर्गंध जावंनें तेहु
वहरंति॥४९॥ एककम्मि समये॥ चत्तारि पंचजोयण सयाइं गंधोअमणुअलो
गंधिदेवाता देवीयोनेंदुःसह देवतादेवीयो आमनुष्यलो ४८ एहवुंरूकहूं तारे केवल
वईमाटई   कमीआवतानथी   ज्ञानीबोलताहवा
गस्स उड्ढंवच्चइ जेणं नउदेवा तेणं आवंति॥५०॥ तनेकेवलिनाबेलनागि(?)
पंचकल्याणक चवन१जन्म२दी   तनोहोयत्तिवातामर्त्यलोकें आवें चलीमहर्षि
क्षा३केवल४निर्वाण५एअरिहं   तपनेंमहिमाइंऔवें चलीजन्मांतर नास्नेहथकी
यौ पंचसु जिणकल्लाणेसु चेव महरिसितवाणुभावाओ जम्मंतरणेहेण(?)

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

देषताम त्यक्ति केंआवेंअ ४३ एहवुराजानुंवचनसांभलीनेंके तेदेवीजन्मांतरनास्नेहथ
स्युय वैरपोषवा पीणआ वलज्ञानीकहेंताहवा कीकुमरनेंतेहगइबद्दे
आगर्वं तिसराइहयं ॥४२॥ तोकेवलिणाकहियंतीसे जम्मंतरसिणेहाइ ते
राजाराणिकहेंताहवांहिं विपाकतेमहाबलिनें आति ४४ हेभयवंनकिंवारेरनो
सामिन कमनो डखदायिवइ संगमथस्ये
विंतितनेसा मिअ अइबलिनकम्मपरिणामो॥४४॥भयवेंकया विहो
अमारेतपाकुमकीमनिर्मांत्रिम नीअगवत्वाल्यासै जिवारेविहारकरतोक
पकस्यें तेकहे देवेंकेव गमजेमतबुंतेथसे स्तारेमनस्येंपोतो अ+ म्हेणही
हि अमाणीकुमारसंगमोकहवी तेणकहं।हो हिबुण जयेइहवमागमिसा आवी=
सुनी ४५ इस्के वलीनामु स्वायनी कुमरनांमातपिता संसारसंबंध अथिरजा नेंहुअ
वा सांजलीने णीवेरागपाम्यांसतां नेंराज्य
मो॥४५॥इयसंबंधं सुणिउं संविग्गा कुमरमा अपिअपिअरो अ तेहतु
विषेंस्थापनकरी तेकेवलीज्ञानीपास्येसुरवातु ४६ डखेंपालीसकें एहवां चारि क्रनी ए[illegible]
नेंसर्व सुपीने भवहेत एहबुचारित्रनेंतांहवी वअनेतपथतेंकरतीहवी राजा
तेविअरज्जे तवतिरचव रणमावन्ना॥४६॥डक्करंतवचरणपरा पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ११

उत्तराध्ययन

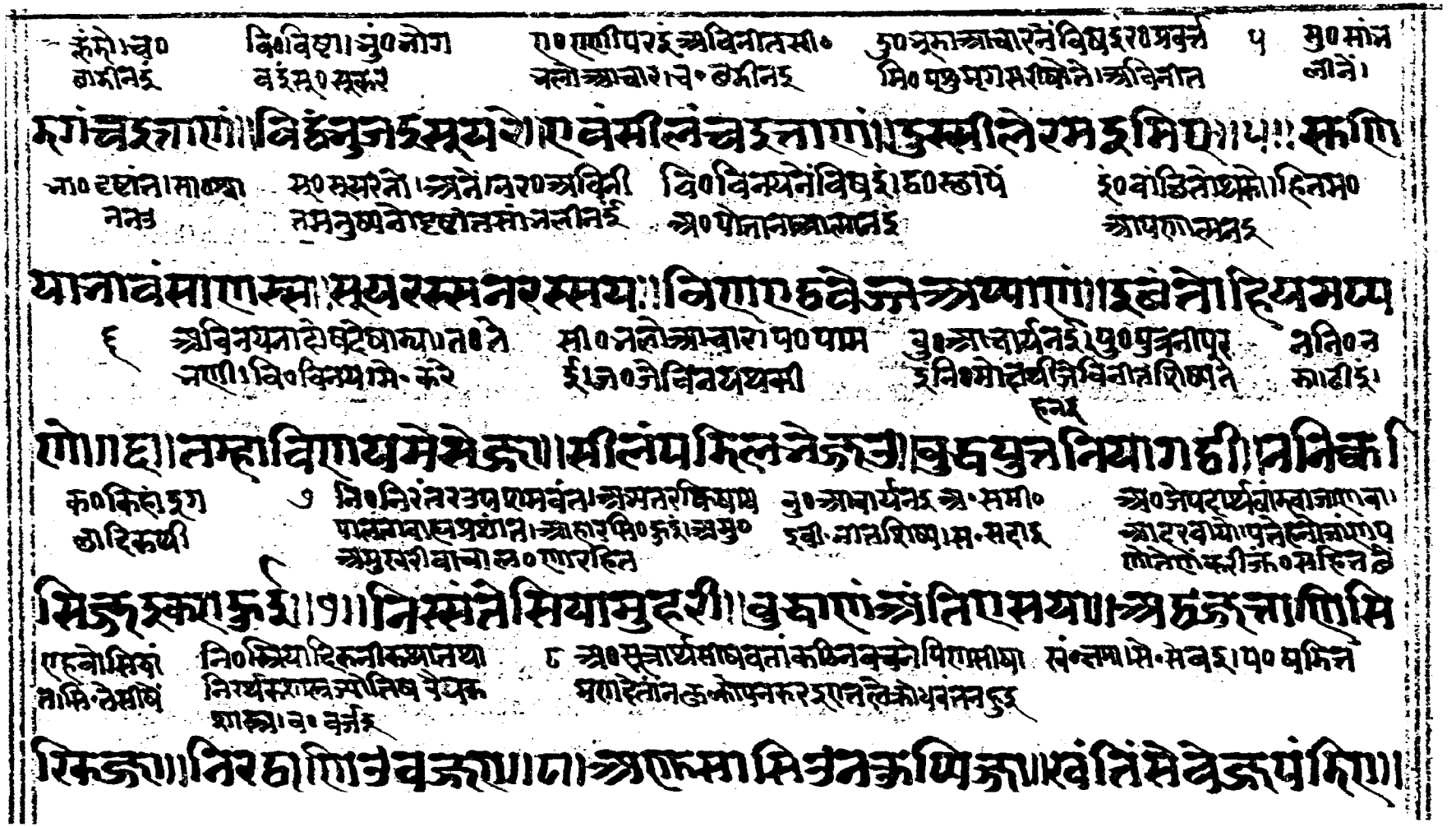

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

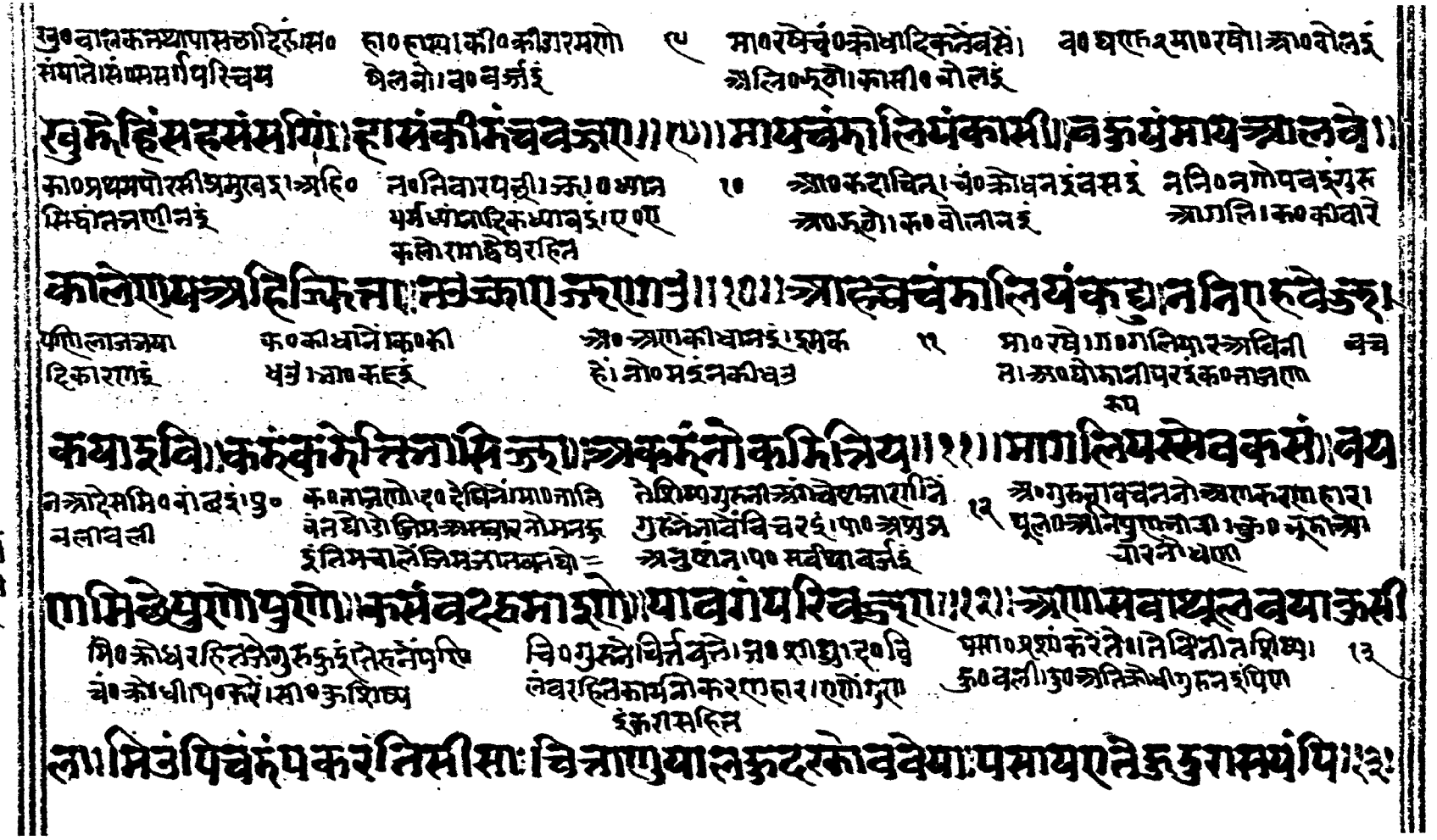

षु० बालकनस्थापासठीइ। स० हा० हास्य। की० क्रीडारमणो ८ मा० रषे चं० क्रोधादिकनें वसें। ब० घणुं। मा० रषो। आ० बोलइं
संघाते। सं० संसर्ग परिचय षेलनो। व० वर्जइं आलि० कुडो। कासी० बोलइं

खुड्डेहिं सह संसग्गिं। हासं कीडं च वज्जए ॥ ९ ॥ मा य चंडालियं कासी। बहुयं मा य आलवे।

का० प्रथमपोरसीप्रमुख इ। अहि० न० तिवारपछी। झा० ध्यान १० आ० कदाचित्। चं० क्रोधनइं वस इं न नि० नगोपवइं गुरु
सिद्धांत भणी नइं धर्मध्यानादिक ध्यावइं। ए० एक आ० कुडो। क० बोलीनइं आगलि। क० कीधारे
कलो। रागद्वेषरहित

कालेण य अहिज्जित्ता। तओ झाएज्ज एगगो ॥ १० ॥ आहच्च चंडालियं कट्टु। न निण्हवेज्ज

पणि लाजनथी क० कीधानें क० की अ० अणकीधानइं। इमक ११ मा० रषे। ग० गलियार अविनी क च
टिकारणइं धनें। भा० कहइं हे। नो० मइं नकीधउं तो। क० घोडानीपरइं क० ताजणा
रूप

कयाइ वि। कडं कडे त्ति भासेज्जा। अकडं नो कडे त्ति य ॥ ११ ॥ मा गलियस्से व कसं। वय

न आदेसमि० वां छइं। पु० क० ताजणो। द० देखिनें। आ० जाति तेषि म गुरुना अभिप्राय जाणीनें १२ अ० गुरुना वचननो अणकरणहार।
वलावली नेन घोडो जिम अपराध नो मनकइ गुरुने भावें विचरइं। पा० अशुभ थूल० अनिपुण भाषा। कु० कुशील आ
इं तिम चालें जिम आलकन घो = अनुष्ठान। प० सर्वथा वर्जइं चारनो धणी

णमिच्छे पुणो पुणो। कसं व दट्ठुमाइण्णे। पावगं परिवज्जए ॥ १२ ॥ अणासवा थूलवया कुसीं

मि० क्रोधरहितनें गुरुकुं तेहनें पणि चि० गुरुना चित्त वर्ते। ल० शीघ्र। द० चि पसा० प्रसन्न करें ते। ते शिष्यनी तें शिष्य। १३
चं० क्रोधी। प० करें। सी० कुशिष्य लेवरहित कार्य नो करणहार। ए तोंगुणा कु० वली। दु० अतिक्रोधीगुरुनइं पिण
इं करी सहित

ला। मिउं पि चंडं पकरेंति सीसा। चित्ताणुया लहुदक्खोववेया। पसायए ते हु दुरासयं पि ॥ १३ ॥

मो अलवारनें मध्येचालें ति मथिनी = २

६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीचालीनें प्रणिनव । पा० पग प० लांबा पसारीनें । न० इम न रहे गु० गुरुनें १९ आ० आचार्यादिके वा० बो० अ० तु० आणबो
इस्से स० साफ पणि नच इसरां वा० अथवा समीपइ ना । बोलाव्यो थको लो न रहे ।

पिंडं वसंजए ॥ पाए पसारिए वा वि । न चिट्ठे गुरुणांतिए ॥१९॥ आयरिएहिं वाहित्तो । तुसिणी

क० कदाचित्ति रोगादि प्र० प्रसादकी भो गुरुनुं प्रति । पे० उ० इम रहे । गु० गुरुनें समी २० आ० गुरुनें एकवार बोलाव्यो वा० न०
क अवस्थाइ पिण इमजोणें । नि० मोक्षार्थी थको पे । स० सदाकाल अथवा । ल० वार वार बोलाव्यो

उ न कयाइ वि । पसायपेही नियागट्ठी । उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥ आलवंते लवंते वा । न

बइसीन रहे । क० कदाचित्प्र च० मूकीनें । आ० आसन धीरो० ज० जे कांइ गुरु आदेश दीइ ते । २१ आ० पोताइनें आसणें बइ
मानादिक कुलमको बुद्धिवंत जु० आदरपरथको । प० करइ ठो । पु० नपूछे गुरु न इस्या

निसीएज्ज कयाइ वि । चइऊण आसणं धीरो । जओ जुत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥ आसणगओ न पु

दिक्षाइ नें० संथारे बइठो न पूछे । क० कदाचित् आ० गुरुनें समीपइं आवीनें पु० पूछे सूत्रादिक । पं० २२ ए० एणीप
एक बइठो क्षणपण इ पिण उ० कु० ऊकडू थको वेलग्धजोडीनें रें । वि० वि

च्छिज्जा । नेव सेज्जागओ कयाइ वि । आगम्मुक्कुडुओ संतो । पुच्छिज्जा पंजलीउडो ॥२२॥ एवं वि

नय सहित साधुनइ सु० सूत्र । अर्थ । अ० अर्थ । त० तेबि पु० सूत्रार्थ पूछता थका । सी० वा० सूत्रार्थ कहे । ज० जिम गुरु मुख २३ बली
हु इ सूत्रार्थ विनीतशिष्यनें सिखे । ल० सांभल्यो हुं तो तिम बीजा

णयजुत्तस्स । सुत्तं अत्थं च तदुभयं । पुच्छमाणस्स सीसस्स । वागरेज्ज जहासुयं ॥२३॥ सु ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

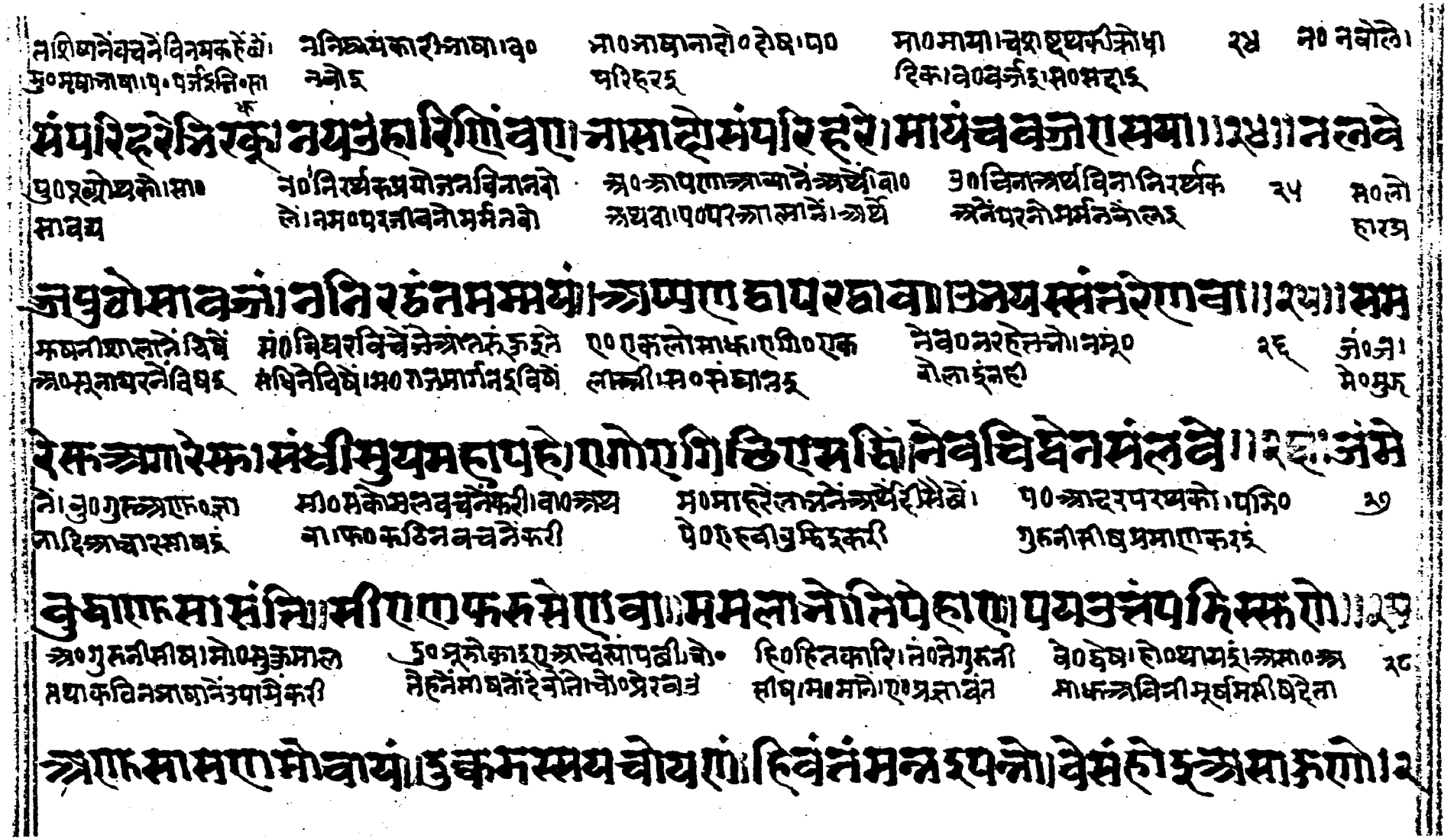

लशिष्यनेंवचनेंविनयकहेंछे। अनिष्टअर्थकारीभाषा।व० मा०साधुनारो०हो३।प० मा०माया।वस०द्रव्यर्थक्रोधा २४ म० नबोले।
कु०मृषाभाषा।पु०पर्जकलिं०ता अबोइ परिहरइ रिका।व०वर्जइ।म०सदाइ

संपरिहरेज्जिरकं । नयउहारिणिंवा । नासाहेसंपरिहरे । मायंचवज्जोएसया ॥२४॥ नलवे

पु०पूछ्योथकोसा० न०निरर्थकप्रयोजनविनानवो अ०आपणोआत्मानेंअर्थेवा० उ०बिनाअर्थविनानिरर्थक २५ म०लो
सावद्य ले।नम०परजीवनेमर्मनवो अथवा।प०परआत्मानें।अर्थे अनेंपरनेमर्मनबोलइ हारअ

जपुढोसावज्जं । ननिरठंतममयं । अप्पणठापरठावा । उभयस्संतरेणवा ॥२५॥ सम

रुषनीशालानेंविषें म०मिश्रघरविचेंजेआंतरुं इहते ए०एकलोसाधु।ए०स्त्री०एक नेव०नरहेतनो।नसं० २६ जं०जा।
आ०मृतघरनेंविषइ सधिनेविषें।म०राजमार्गनइविषें लासाथी।स०संघातइ बोलाइंनही मे०मुज

रेसुआरेसु । संधीसुयमहापहे । एगोएगिछिएसद्धिं । नेवचिढेनसंलवे ॥२६॥ जंमे

ने।बु०गुरुआचार्य०ज्ञा सी०सकोमलवचनेंकरी।वा०अथ म०मालाभकारीअर्थिमेंवें। प०आदरपरथको।पडि० २७
नादिआचारसाधइ वा।फरु०कठिनवचनेंकरी पे०एहवीबुद्धिइकरी गुरुनीशीषप्रमाणकरइं

बुधाणुसासंति । सीएणफरुसेणवा । ममलाभोत्तिपेहाए । पयउतंपडिस्सुणे ॥२७॥

अ०गुरुनीशीख।मो०मृदुकमाल दु०भूंडोकाइए।अन्येतापवी।चो० हि०हितकारि।तं०तेगुरुनी वे०द्वेष।हो०थाइं।असा०अ २८
नथाकविनआत्मानेंउपामेंकरी नेहेंतेंमाथनोंदेवोतेचो०प्रेरवोते सीख।म०मानें।प०प्रज्ञावंत साधक्रिविनीमूर्खसमीषेरेता

आणसासणमोवायं । दुकडस्सयचोयणं । हियंतंमन्नईपन्नो । वेसंहोइअसाहुणो ॥२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १२

उत्तराध्ययन

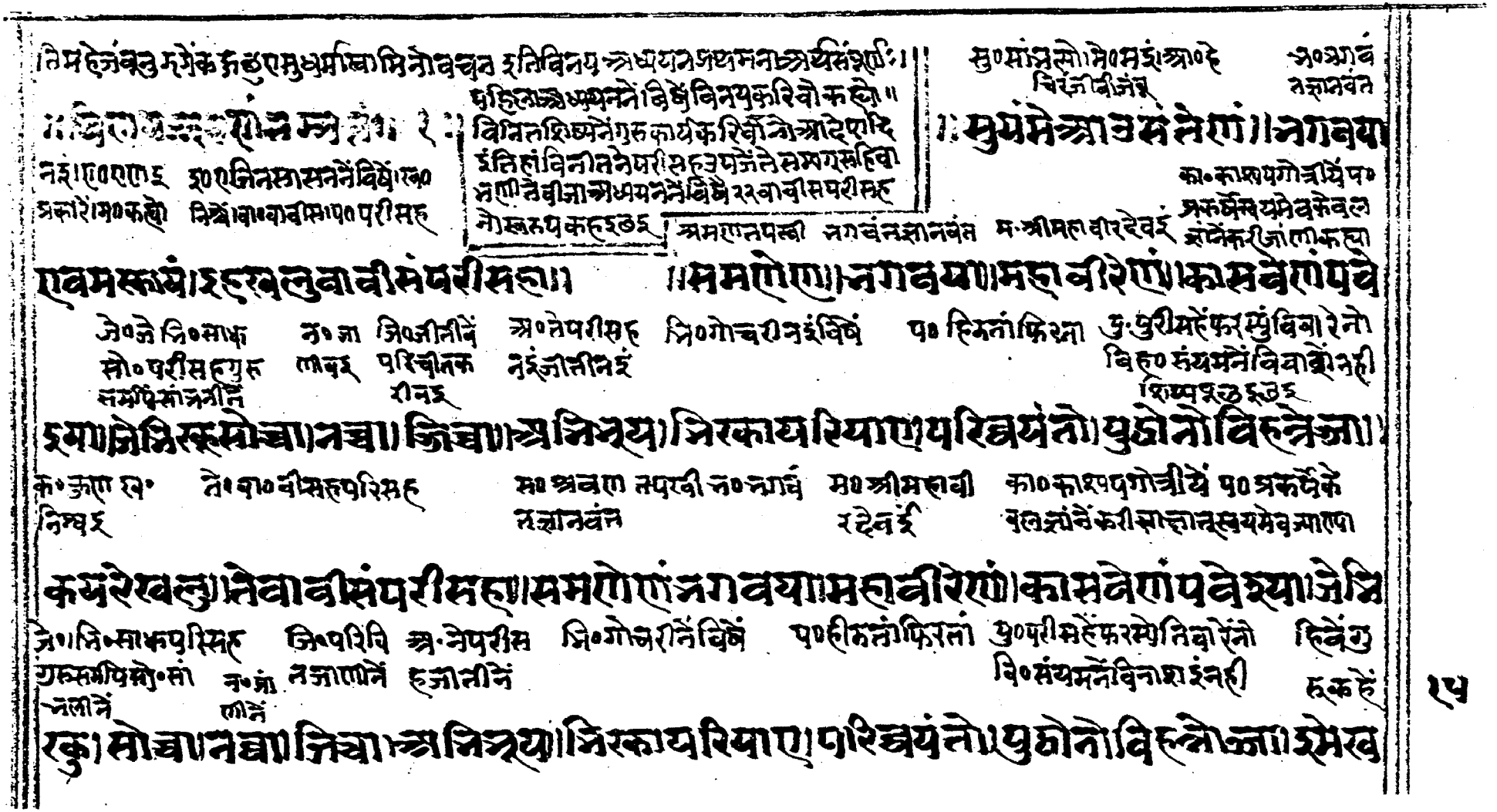

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

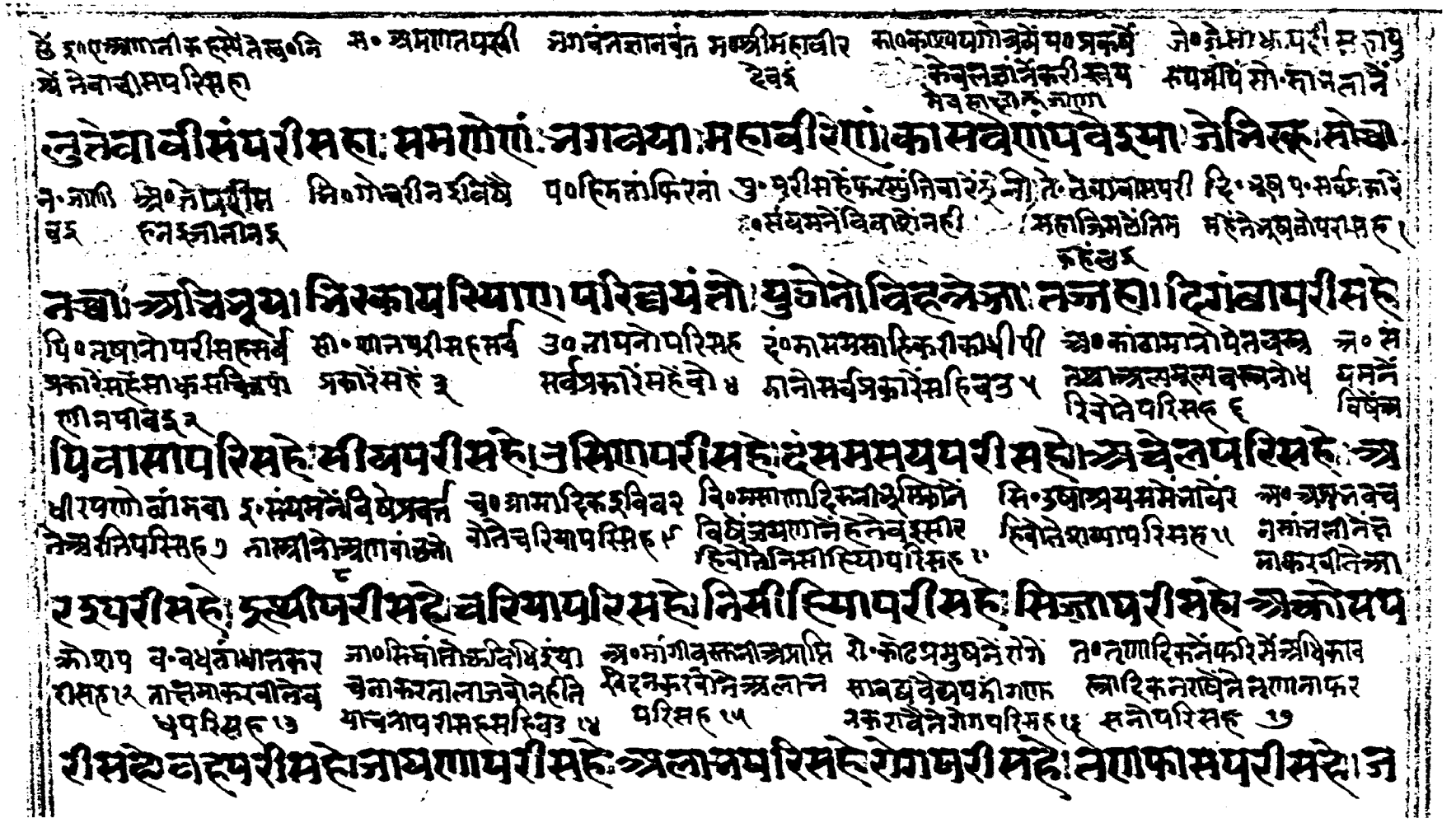

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

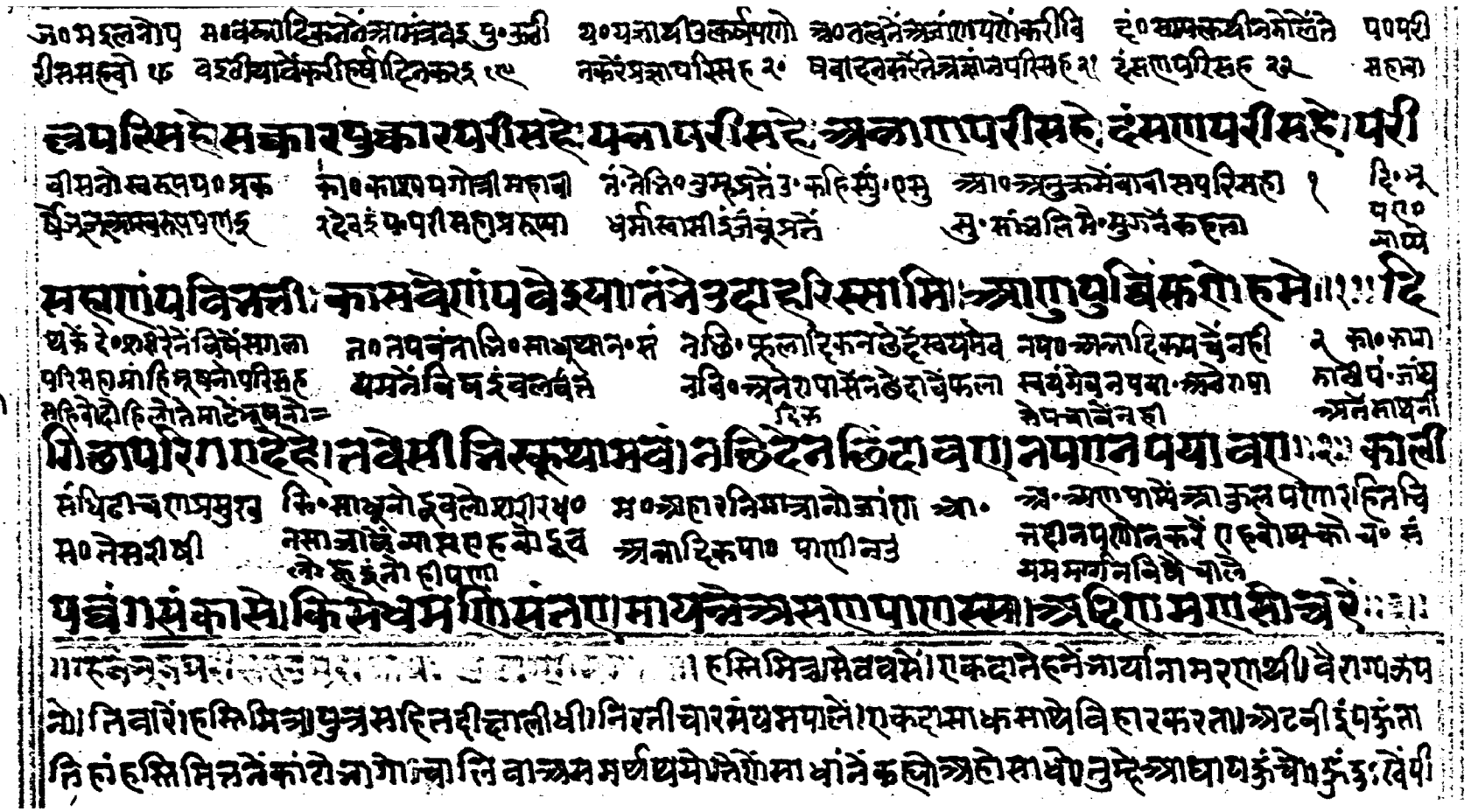

त्तपरिसहे सक्कारपुक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरीसहे दंसणपरीसहे परी

सहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥ दि

गिंछापरिगए देहे तवस्सी भिक्खू थामवं न छिंदे न छिंदावए न पए न पयावए ॥२॥ काली

पव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

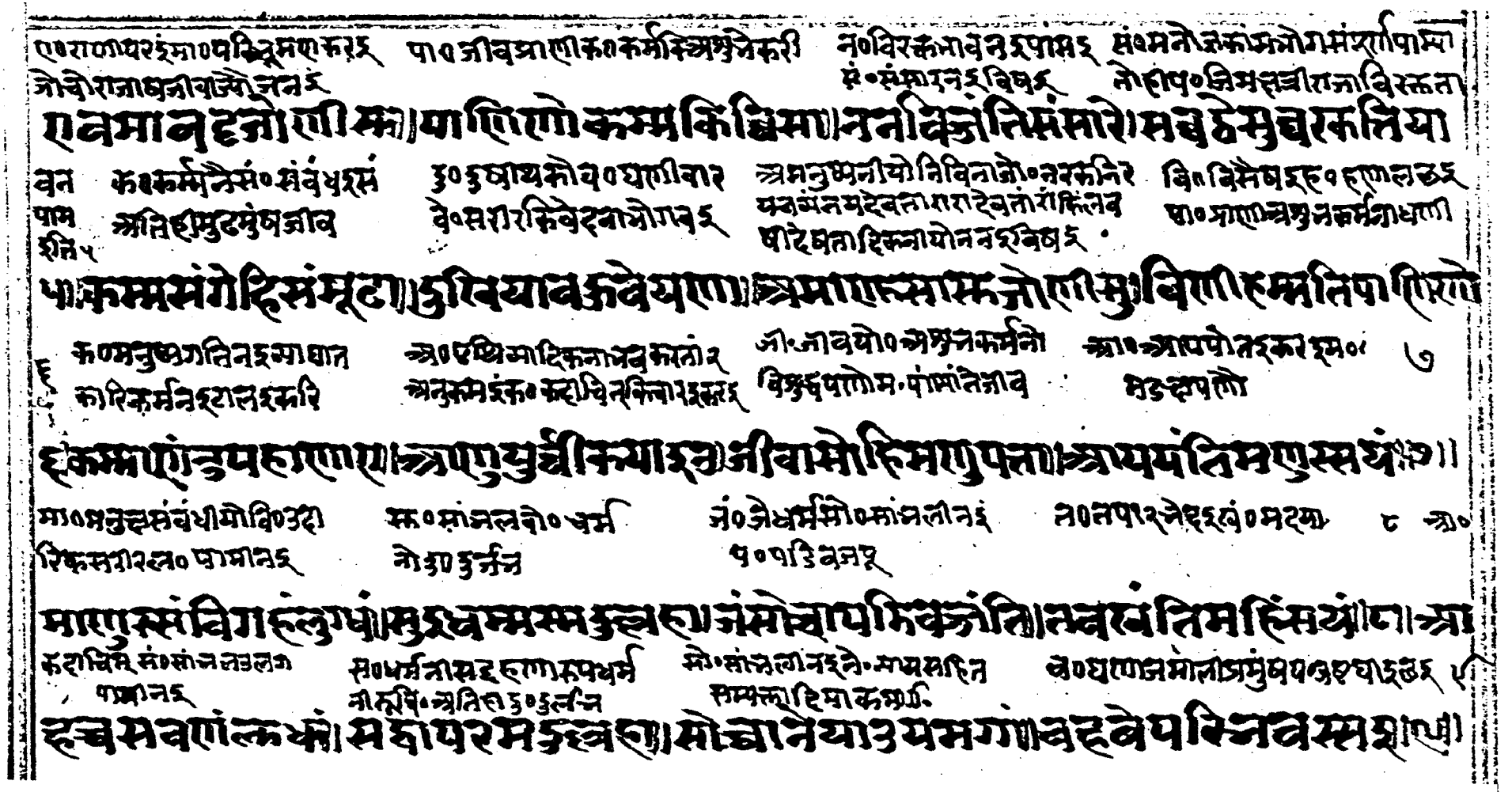

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १३

उत्तराध्ययन

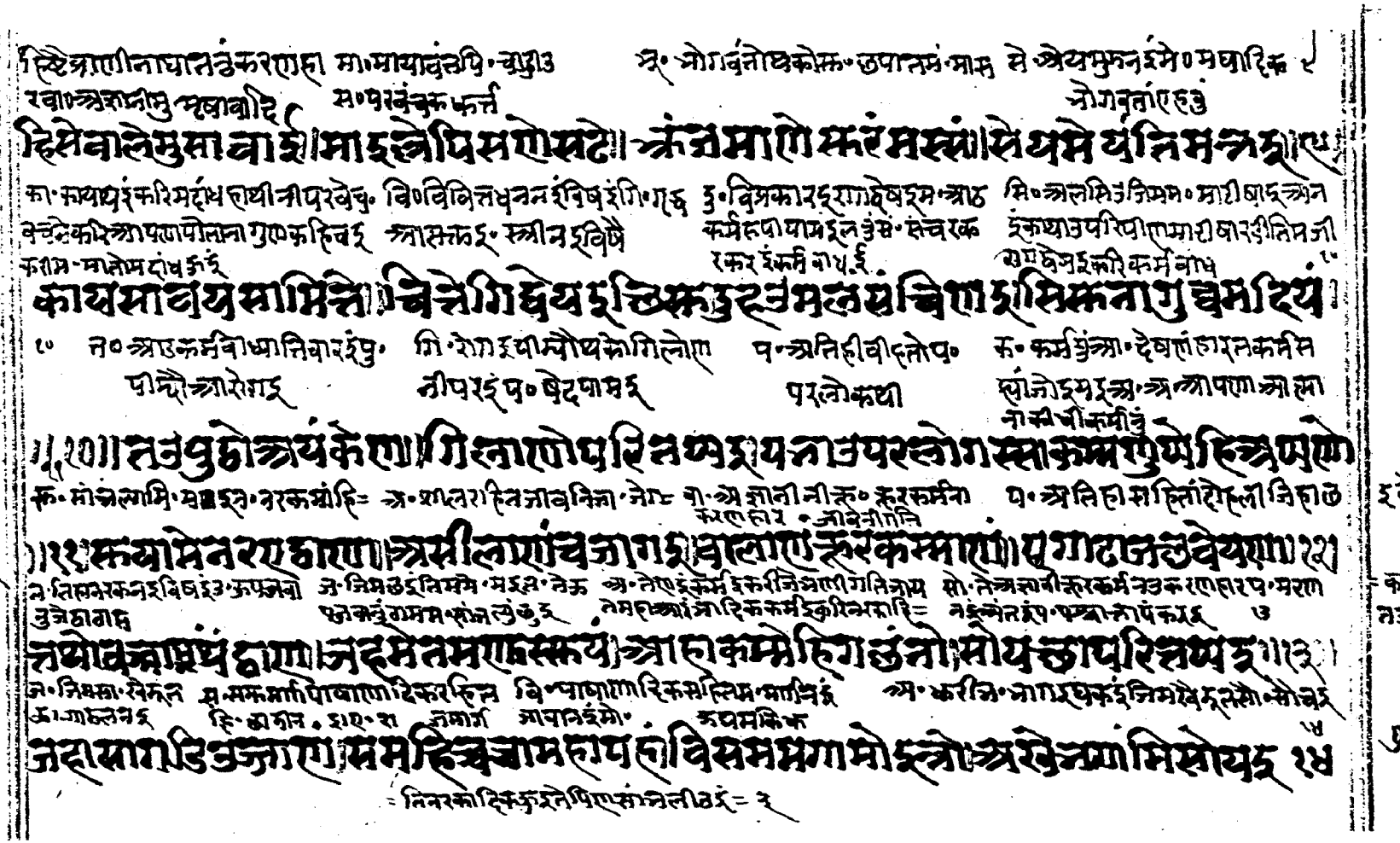

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

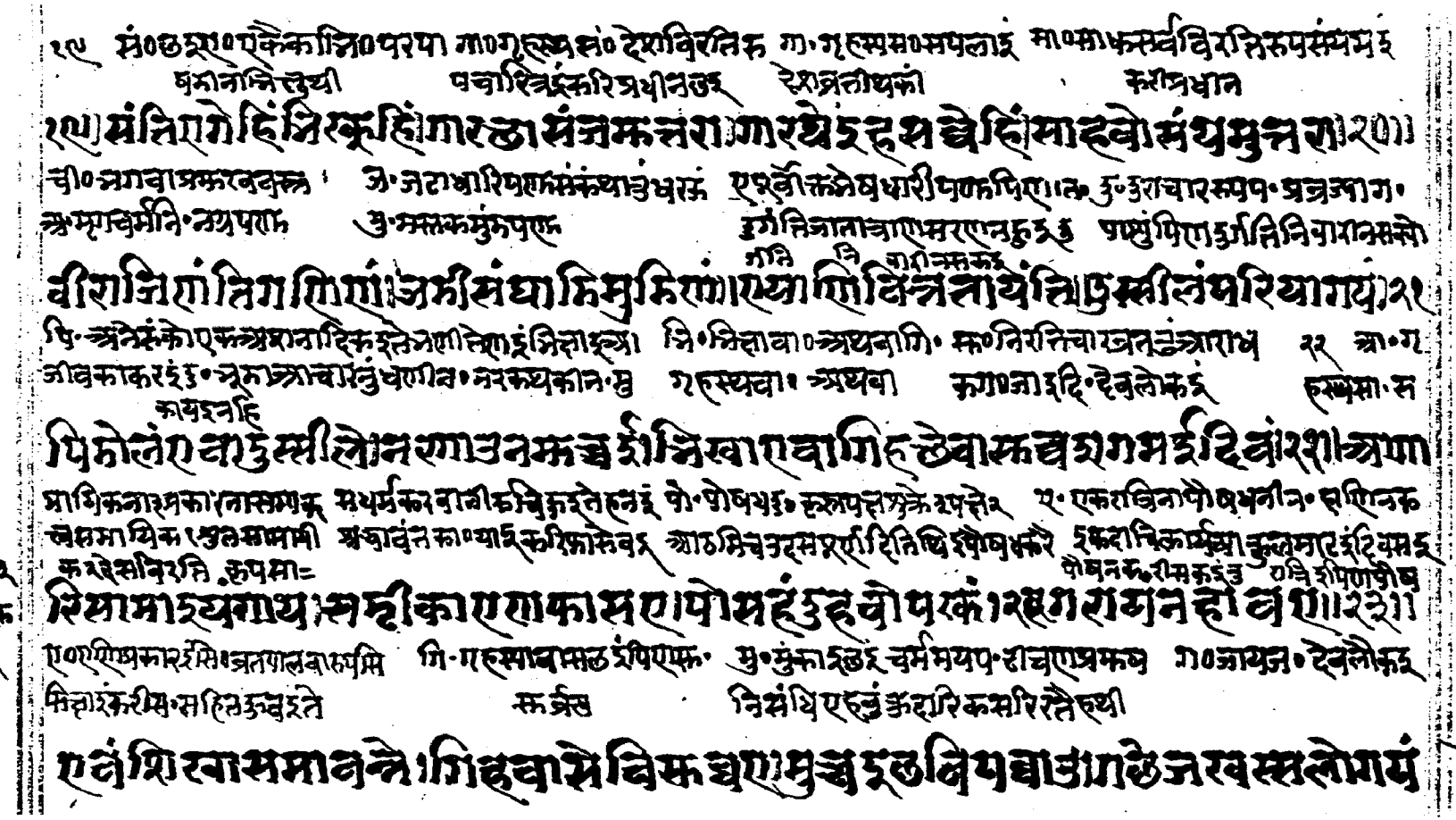

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

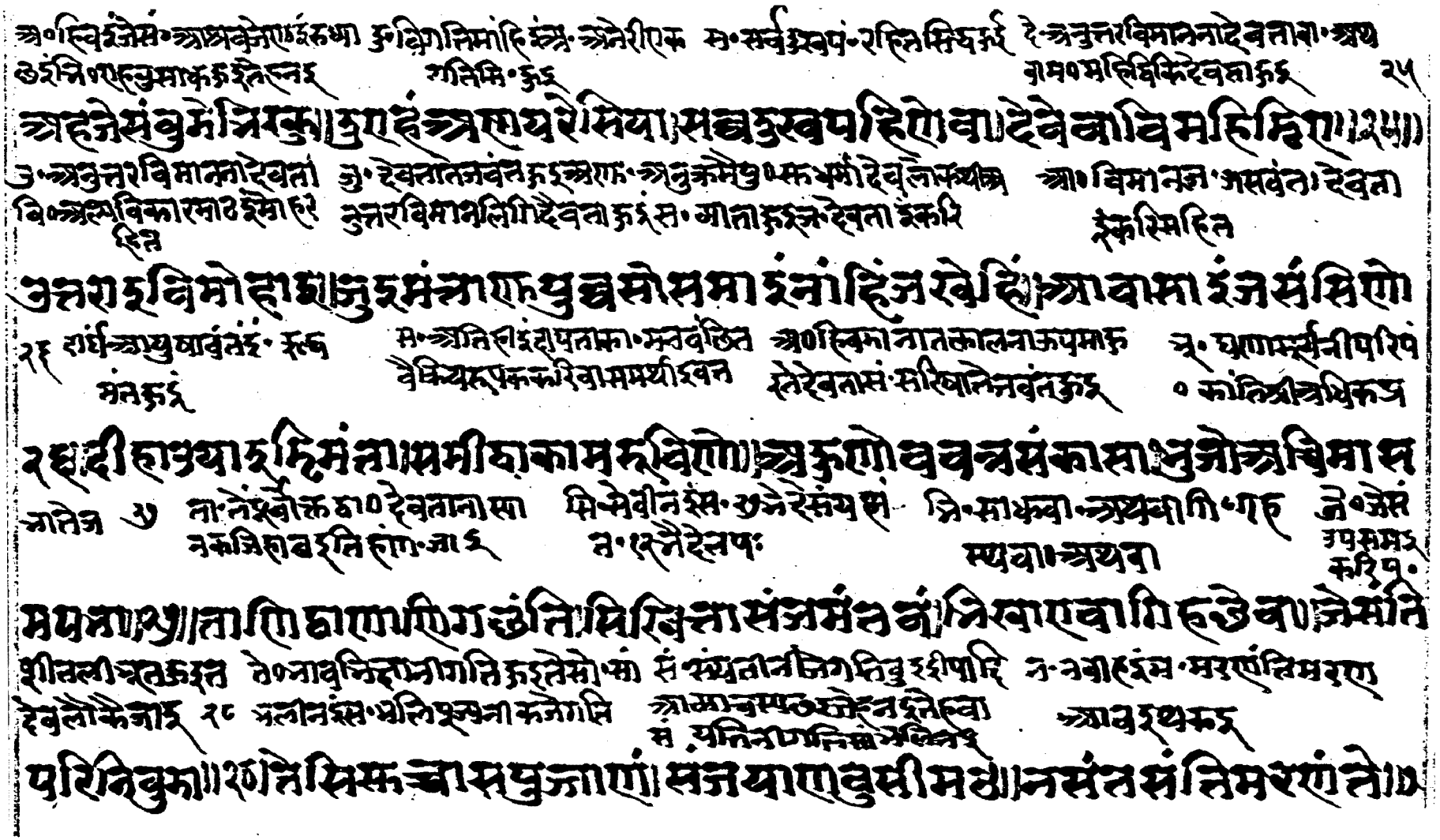

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान में प्राकृत-अपभ्रंश पाण्डुलिपियाँ : परिचय

[राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों की ग्रन्थ सूची]

डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल
पं. अनूपचन्द न्यायतीर्थ

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा-महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों में होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी-बड़ी पदवियाँ देकर सम्मानित किया। अपनी-अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर विशेषत: जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमें महत्त्वपूर्ण साहित्य संगृहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया।

इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवायें की हैं और इस दिशा में जैन यतियों एवं गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवायी तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों में विराजमान की। प्राचीन साहित्य का संग्रह किया तथा जीर्ण एवं शीर्ण ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। जैन संघ की इस अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गाँवों, कस्बों एवं नगरों में ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का सारा भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया।

साहित्य संग्रह की दिशा में राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर आदि स्थानों की भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय-वैचित्र्य आदि की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों में ताड़पत्र, कपड़ा और कागज इन तीनों पर ही ग्रंथ मिलते हैं किन्तु ताड़पत्र के ग्रंथ तो जैसलमेर के भण्डारों में ही मुख्यतया संगृहीत हैं। अन्य स्थानों में उनकी संख्या नाममात्र की है। कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम संख्या में मिलते हैं। अभी जयपुर के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथ ग्रंथ भण्डार में कपड़े पर लिखा हुआ संवत् १५१६ का एक ग्रंथ मिला है। इसी तरह के ग्रंथ अन्य भण्डारों में भी मिलते हैं लेकिन उनकी संख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक संख्या कागज पर लिखे हुये ग्रन्थों की है जो सभी भण्डारों में मिलते हैं तथा जो १३वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं।

जयपुर नगर सम्वत् १७८४ में बसाया गया था। यहाँ के शास्त्र-भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहाँ के प्रायः प्रत्येक मन्दिर में शास्त्र संग्रह किया हुआ मिलता है; किन्तु जैनविद्या संस्थान का शास्त्र भण्डार, बड़े मंदिर का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पं. लूणकरणजी पांड्या के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमें **प्राकृत, अपभ्रंश** भाषाओं के महत्त्वपूर्ण साहित्य का संग्रह है। **अपभ्रंश का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संगृहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवतः नहीं है।**

यहाँ के शासक एवं जनता दोनों ने ही मिल कर अथक प्रयासों से साहित्य की अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचा लिया। इसलिये यहाँ के शासकों ने जहां राज्य स्तर पर ग्रंथ संग्रहालयों एवं पोथीखानों की स्थापना की, वहीं यहाँ की जनता ने अपने-अपने मन्दिरों एवं निवास-स्थानों पर भी पाण्डुलिपियों का अपूर्व संग्रह किया। जयपुर का पोथीखाना जिस प्रकार प्राचीन पाण्डुलिपियों के संग्रह के लिये विश्वविख्यात हैं उसी प्रकार नागौर, जैसलमेर एवं जयपुर के जैन ग्रंथालय भी इस दृष्टि से सर्वोपरि हैं।

बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार -

बधीचन्दजी का दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर में जौहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। यहाँ **प्राकृत, अपभ्रंश** आदि भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम संग्रह किया हुआ मिलता है। कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी यहाँ है जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, महाकवि वीर कृत जम्बूस्वामीचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित आदि उल्लेखनीय है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति वड्ढमाणकाव्य की वृत्ति की है जो संवत् १४८१ की लिखी हुई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठोलियों के दिगम्बर जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार -

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार ठोलियों के दिगम्बर जैन मन्दिर घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर में स्थित है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो संवत् १४१६ (सन् १३५९) की लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त योगीन्द्रदेव का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एवं पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतियां उल्लेखनीय हैं।

शास्त्र भण्डार पंडित लूणकरणजी पांड्या -

यह लूणा पांड्या के मन्दिर के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। पंडित लूणकरणजी जैन यति थे, जो पांड्या कहलाते थे। सबसे प्राचीन प्रति इस भण्डार में अपभ्रंश के परमात्मप्रकाश की है जो संवत् १४०७ में लिखी गयी थी।

शास्त्रभण्डार श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा तेरापंथियों का -

जयपुर नगर बसने के कुछ समय बाद ही इस मन्दिर का निर्माण हुआ। इस मन्दिर में स्थित शास्त्र भण्डार जयपुर के अन्य शास्त्र भण्डारों की अपेक्षा उत्तम एवं वृहद् है। भण्डार में उपलब्ध अपभ्रंश साहित्य महत्त्वपूर्ण है। अपभ्रंश एवं प्राकृत के ग्रन्थों की प्राचीन प्रतियों के अतिरिक्त कुछ ऐसी भी रचनायें हैं जो केवल इसी भण्डार में सर्व प्रथम उपलब्ध हुई हैं। प्राचीन प्रतियों में कुन्दकुन्दाचार्य कृत **प्राकृत पञ्चास्तिकाय** की संवत् १३२९ की प्रति मिली है जो भण्डार में उपलब्ध प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति है। महाकवि पुष्पदन्त विरचित आदिपुराण की यहाँ एक सचित्र प्रति भी उपलब्ध हुई है। यह प्रति संवत् १५९७ की है। इसमें ५०० से भी अधिक रंगीन चित्र हैं। (इसका प्रकाशन जैनविद्या संस्थान से सन् २००६ में कर दिया गया है।) अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों में वारक्खरी दोहा, दामोदर कृत णेमिणाह चरिउ तथा तेजपाल कृत संभवणाह चरिउ उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा की महाकवि धवल कृत हरिवंशपुराण की एक प्राचीन एवं सुन्दर प्रति भी यहाँ है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मंदिर पाटोदि -

इस मंदिर का निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ हुआ था और उसी समय यहाँ शास्त्र भण्डार की भी स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है। भंडार में अपभ्रंश महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरिउ की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रति सबसे प्राचीन है जो सम्वत् १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। यहाँ प्राकृत के गोम्मटसार जीवकांड, समयसार आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ उपलब्ध है। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत णेमिणाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा तथा विमल सेन की सुगंधदशमीकथा यहाँ उपलब्ध है।

जयपुर से बाहर के शास्त्र भण्डार

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, डीग –

भण्डार में प्राकृत की भगवती आराधना सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है। जिसका लेखन काल संवत् १५११ है। इसके अतिरिक्त अपभ्रंश काव्य भविसयत्त चरिउ (श्रीधर) की प्रति भी यहाँ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह –

यहाँ अपभ्रंश के णायकुमार चरिउ (सम्वत् १६१२) जम्बू स्वामी चरिउ (सम्वत् १६१०) आदि ग्रन्थों के नाम उल्लेखनीय है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मन्दिर संभवनाथ, उदयपुर –

यहाँ अपभ्रंश का यश:कीर्ति द्वारा रचित हरिवंशपुराण ग्रन्थ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर, बसवा –

महाकवि श्रीधर की अपभ्रंश कृति भविसयत्त चरिउ की संवत् १४६२ की पाण्डुलिपि यहाँ उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन मन्दिर, करौली –

यहाँ दो मंदिर है और दोनों में ही शास्त्रों का संग्रह है। दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर एवं दिगम्बर जैन सोगाणी मन्दिर। अपभ्रंश भाषा की वरांग चरित्र की पाण्डुलिपि यहाँ उपलब्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शास्त्र भण्डार दिगम्बर जैन तेरहपंथी मन्दिर, दौसा -

अधिकांश ग्रन्थ अपभ्रंश एवं हिन्दी के है। अपभ्रंश ग्रन्थों में जिणयत्त चरिउ (लाखू), सुकुमाल चरिउ (श्रीधर), वड्ढमाणकहा (जयमित्तहल), भविसयत्तकहा (धनपाल) एवं महापुराण (पुष्पदंत) के नाम उल्लेखनीय है।

उपर्युक्त सामग्री **'राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूची'** से संकलित की गई है। प्राकृत-अपभ्रंश की बहुलता के लिए अन्य शास्त्र भण्डार निम्न है :

शास्त्र भण्डार जैनविद्या संस्थान, जयपुर; भट्टारकीय शास्त्र भण्डार, नागौर; एवं जिनभद्रसूरि ज्ञान भण्डार, जैसलमेर। इन तीनों का यहाँ परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है :-

शास्त्र भण्डार जैनविद्या संस्थान, जयपुर -

यहाँ अपभ्रंश के बहुत ग्रन्थ संगृहीत हैं। कुछ के नाम इस प्रकार है :

महापुराण-पुष्पदंत (संवत् १४६१)

पास पुराण-पद्मकीर्ति (संवत् १४९४)

सुदंसण चरिय-णयणंदि (संवत् १५०४)

जंबू सामि चरित-कविवीर (संवत् १५१६)

पउमचरिउ-स्वयंभू (संवत् १५४१)

करकण्ड चरिउ-मुनि कनकामर (संवत् १५६३)

रयणकरण्ड-श्रीचन्द (संवत् १५६३)

मयण पराजय-चरिउ-हरिदेव (संवत् १५७६)

अमरसेण चरित्र-माणिक्क (संवत् १५७७)

श्रीपाल मैनासुंदर चरिय नरसेन (संवत् १५७९)

श्रेणिय चरिउ-जयमित्त हल्ल (संवत् १५८०)

श्री बाहुबलि देव चरिय-बुह धणवाल (संवत् १५८४)

प्रद्युम्न चरित्र-कवि सिंह (संवत् १५८६)

सुलोयणा चरिय-गणिदेवसेन (संवत् १५८७)

भविसयत्त चरिय-धणवाल (संवत् १५८८)

दोहापाहुड-महयन्दु (संवत् १६०२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्डुपुराण–जसकित्ति (संवत् १६०२)

चन्दप्पह चरिय–जसकित्ति (संवत् १६०३)

अप्पसंवोह कव्व (संवत् १६०७)

जिणयत्त कहा–लहखू (संवत् १६११)

णायकुमार चरिउ–पुष्पदंत (संवत् १६१२)

मेहेसर चरिय–रइधू (संवत् १६१९)

धणकुमार चरिय–रइधू (संवत् १६३६)

जसहर चरिय–पुष्पदन्त (संवत् १६८७)

मृगावती चरित्र–समय सुन्दरगणि (संवत् १६८७)

वर्द्धमान काव्य–जयमित्त हल्ल (संवत् १८१२)

मल्लि चरिउ–जयमित्त हल्ल

भविसयत्त चरित–विवुह सिरिहर

परमिट्ठपयाससार–सुदकित्ति

पास–चरित–तेजपाल

अपभ्रंश भाषा के अतिरिक्त प्राकृत भाषा की भी यहाँ महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ है :

भगवती आराधना–आचार्य शिवकोटि (संवत् १५१४)

प्रवचनसार–आचार्य कुन्दकुन्द (संवत् १५४७)

त्रिलोकसार–आचार्य नेमिचन्द्र (संवत् १५६०)

णायाधम्म कहा (संवत् १६००)

पंचास्तिकाय–आचार्य कुन्दकुन्द (संवत् १६२७)

तत्त्वसार–देवसेन (संवत् १६२९)

षडावश्यक (संवत् १६७४)

उवएसमाला–धम्मदास गणि (संवत् १७१४)

मूलाचार (संवत् १७८८)

अष्टपाहुड–आचार्य कुन्दकुन्द (संवत् १८०१)

जंबूचरित्र (संवत् १८१५)

त्रिलोकसार–आचार्य नेमिचंद (संवत् १८५९)

स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा–स्वामीकार्तिकेय (संवत् १८६६)

कुम्मापुत्त–चरित्तं–माणिक्य सुन्दर (संवत् १८६९)

द्रव्य संग्रह–आचार्य नेमिचन्द्र (संवत् १९२२)

उपदेश–रत्नमाला – पदम जिणसरसूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारहणुवेक्खा-आचार्य कुन्दकुन्द

आराधनासार-देवसेन

गोम्मटसार कर्मकाण्ड - आचार्य नेमिचन्द्र

समयसार-आचार्य कुन्दकुन्द

पंचसंग्रह-सुमतिकीर्ति

भट्टारकीय ग्रन्थ भण्डार, नागौर :

यह भण्डार प्राकृत-अपभ्रंश के ग्रन्थों के लिए महत्त्वपूर्ण है। यहाँ अपभ्रंश के बहुत ग्रन्थ संगृहीत है, कुछ के नाम इस प्रकार है:

परमात्मप्रकाश - योगीन्दुदेव (संवत् १४४०)

इष्टोपदेश-अमरकीर्ति (संवत् १४६८)

श्रीपाल चरित्र-पं. नरसेन (संवत् १५७१)

सकल विधि विधान काव्य - नयनन्दि (संवत् १५७७)

चन्द्रप्रभ चरित्र-यशःकीर्ति (संवत् १५८१)

मदनपराजय-हरिदेव (संवत् १५८७)

वर्द्धमान काव्य-जयमित्तहल्ल (संवत् १५९२)

वरांग चरित्र-पं. तेजपाल (संवत् १६०७)

सम्यक्त्व कौमुदी - रइधू (संवत् १६०९)

आत्म सम्बोध काव्य-रइधू (संवत् १६१२)

ऋषभनाथ चरित्र-पुष्पदन्त (संवत् १६१६)

भविष्यदत्त चरित्र - धनपाल (संवत् १६२८)

नेमिनाह चरित्र-पं. दामोदर

बाहुबली चरित्र-पं. धनपाल

यहाँ प्राकृत के भी कई ग्रन्थ संगृहीत है। कुछ के नाम इस प्रकार है :

जीव प्ररूपण-गुणरयण भूषण (संवत् १५११)

भगवती आराधना-शिवार्य (संवत् १५६८)

भावसंग्रह-देवसेन (संवत् १६०४)

सप्ततत्त्वादि वर्णन (संवत् १६१४)

भगवतीसूत्र (संवत् १६०९)

उपासकाध्ययन-आचार्य वसुनन्दि (संवत् १६४८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लघु प्रतिक्रमण (संवत् १६५१)

कल्पसूत्र बालावबोध (संवत् १७१७)

आराधना सार-देवसेन

जिनभद्रसुरि ज्ञान भण्डार, जैसलमेर :

इस प्रसिद्ध भण्डार में प्राकृत के जैनआगम एवं आगमेतर ग्रन्थों का विशाल-संग्रह है। कुछ के नाम प्रस्तुत हैं:

आचारांग-सुधर्मा (संवत् १५००)

सूत्रकृतांग-सुधर्मा (संवत् १५००)

स्थानांग-सुधर्मा (संवत् १५००)

भगवती सूत्र (व्याख्या प्रज्ञप्ति)-सुधर्मा (संवत् १५००)

सूत्रकृतांग की निर्युक्ति-भद्रबाहु (संवत् १५७२)

आचारांग की निर्युक्ति-भद्रबाहु (संवत् १६७१)

आदि जैन आगम साहित्य संगृहीत है।

लोकनालि-जिनवल्लभ (संवत् १३००)

प्रवचन संदोह (संवत् १३००)

अष्ट प्रकारी पूजा कथानक (संवत् १४००)

पुष्पमाला (संवत् १४७८)

धर्मोपदेश माला-जयसिंह सूरि (संवत् १४००-१५००)

महिपाल चरित्र-वीरदेव गणि (संवत् १५००)

गौतमपृच्छविचार (संवत् १५००)

श्रीपाल चरित्र (संवत् १५७०)

प्रवचनसारोद्धार - नेमिचन्दसूरि (संवत् १५८७)

हरिबल चरित्र (संवत् १६००)

पउमचरियं-विमलसूरि (संवत् १६२५)

कुर्मापुत्रकथा-जिणमाणिक्यसूरि (संवत् १६६४)

अंगविद्या (संवत् १६६९)

पंच अणुव्रत (संवत् १७००)

नवतत्त्व (संवत् १७००)

वज्जालग्गं (संवत् १७००)

तत्त्वतरङ्गिणि-तेजसागरगणि (संवत् १८००)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश के कुछ ग्रन्थ इस प्रकार है :

योगशास्त्र का बालावबोध (संवत् १६००)

ऋषभ विवाहलौ (संवत् १६०६)

सुदर्शनकथा (संवत् १७००)

पूरणश्रेष्ठी कथा (संवत् १७००)

रत्नपरीक्षा समुच्चय (संवत् १८००)

महावीर बत्तीसी (संवत् १९००)

◆◆◆

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत आधुनिक रूपान्तरण पाण्डुलिपि का अक्षरशः रूपान्तरण है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी को पाण्डुलिपि के अक्षर पहचानना एवं पाण्डुलिपि पढ़ना सिखाना है। संपादित पुस्तक एवं दिये गए आधुनिक रूपान्तरण के अक्षरों में कहीं-कहीं अन्तर हो सकता है। विद्यार्थी को चाहिए कि वह केवल पाण्डुलिपि के अक्षर एवं शब्दों को पहचानने का प्रयास करे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १
भगवती आराधना

रस्स जह दुवारं मुहस्स चक्खुं तरुस्स जिह मूलं॥ तह जाण सुसम्मत्तं णाणचरणवीरियांततवाणं॥३६॥ भावाणुरागपेमाणुरागमज्जाणुरागरत्तो व्वं॥ धम्माधम्माणुरागरत्तो य होहि जिणसासणे णिच्चं॥३७॥ दंसणभट्ठो भट्ठो दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं॥ सिज्झंति चरियभट्ठा दंसणे भट्ठा ण सिज्झंति॥३८॥ दंसणभट्ठो भट्ठो ण हु भट्ठो होइ चरणभट्ठो हु दंसणममुयंतस्स हु परिवडणं णत्थि संसारे॥३९॥ सुद्धे सम्मत्ते अविरदो वि अज्जेदि तित्थयरणामं। जादो हु सेणिगो आगमेसि अरहो अविरदो वि॥४०॥ कल्लाणपरपरयं लहंति जीवा विसुद्धसम्मत्ता॥ सम्मद्दंसणरयणं णग्घदि ससुरासुरो लोओ॥४१॥ सम्मत्तस्स य लंभो तेलोकस्स य हवेज्ज जो लंभो॥ सम्मद्दंसणलंभो वरं खु तेलोक्कलं ॥ भादो॥४२॥ लद्धूण वि तेलोक्कं परिवडदि हु परिमिदेण कालेण। लद्धूण य सम्मत्तं अक्खयसुक्खं लहदि मोक्खं॥४२॥ सम्मत्तं॥ अरहंतसिद्धचेदियपवयणआयरियसव्वसाधूसु। तिव्वं करेहि भत्ती णिव्विदिगिंच्छेण भावेण॥४३॥ संवेगजणिदकरणा णिस्सल्ला मंदरोव्व णिक्कंपा। जस्स दढा जिणभत्ती तस्स भवं णत्थि संसारे॥४४॥ एया वि सा समत्था जिणभत्ती दुगाइं णिवारेदुं। पुणाणि य सरेदुं आसिद्धिपरंपरसुहाणं॥४५॥ तह सिद्धचेदिए पवयणे य आयरियसव्वसाधूसु। भत्ती होदि समत्था संसारुछेदणे तिव्वा॥४६॥ विज्जा वि भत्तिवंतस्स सिद्धिमुवयादि होदि सफला य। किह पुण णिव्वुदिबीजं सिज्झिहदि अभत्तिमंतस्स॥४७॥ तेसिं आराधणणायगाणं ण करेज्ज जो णरो भत्तिं। धत्तिं पि संजमंतो सालिं सो ऊसरे ववदि॥४८॥ वीएण विणा सस्सं इच्छदि सो वा समब्भएण विणा। आराधणमिछंतो आराधगभत्तिमकरंतो॥४९॥ विधिणा कदस्स सस्सस्स जहा णिप्पादयं हवदि वासं। तह अरहादियभत्ती णाणचरणदंसणतवाणं॥५०॥ वंदणभत्तीमेत्तेण चेवमिहिलाहिवो य पउमरहो। देविंदयाडिहेरं पत्तो जादो गणधरो या॥५१॥ भत्ती आराधणापुरस्सरमणण्णहिदओ विसुद्धलेसाओ। संसारस्स खयकरं मा मोचीओ णमोकारं॥५२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरहन्तणमोक्कारो एक्को वि हवेज्ज जो मरणकाले। सो जिणवयणे दिट्ठो संसारछेदणसमत्थो ॥५३॥ जे भावणमोक्कारेण विणा सम्मत्तणाणचरणतवा। ण हु ते होंति समत्था संसारुछेदणं कादुं ॥५४॥ चउरंगाए सेणाए णायगो जह पवत्तओ होदि। तह भावणमोक्कारो मरणे तवणाणचरणाणं ॥५५॥ आराधणापडायं गेण्हतस्स हु करो णमोकारो। मल्लस्स जयपडायं जह हत्थो घेत्तुकामस्स ॥५६॥ अणाणी वि य गोवो आराधित्ता मदो णमोक्कारं। चम्पाए सेट्ठिकुले जादो पत्तो य सामण्णं ॥५७॥ णमोक्कारं॥ णाणोवउगरहिदेण॥ ण सक्का चित्तणिग्गहो काउं। णाणं अंकुसभूदं मत्तस्स हु वित्तहत्थिस्स ॥५८॥ विज्जा जहा पिसायं सुट्ठु वउत्ता करेदि पुरिसवसं णाणं हिदयपिसायं सुट्ठु वउत्तं तह करेदि ॥५९॥ उवसमइं कण्हसप्पो जह मंतेण विधिणा पउत्तेण। तह हिदयकिण्हसप्पो सुट्ठुवउत्तेण णाणेण ॥६०॥ आरण्णओ वि मत्तो हत्थी णियमिज्जदे वरत्ताए। जह तहा णियमिज्जदि सो णाणवरत्ताए मणहत्थी ॥६१॥ जह मक्कडओ खणमवि मज्झत्थो अछिदुं ण सक्केइ। तह खणमवि मज्झत्थो विसएहिं विणा ण होइ मणो ॥६२॥ तम्हा सो उड्डहणो मणमक्कडओ जिणोवएसेण। रामेदव्वो णियदं तो सो दोसं ण काहिदि सो ॥६३॥ तम्हा णाणुवओगो खवयस्स विसेसओ सदा भणिदो। जह विंधणोवओगो चंदयवेज्झं करिंतस्स ॥६४॥ णाणपदीवो पज्जलइ जस्स हियए विसुद्धलेसस्स। जिणदिट्ठमोक्खमग्गे पणास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ २
भगवती आराधना

ण भयं ण तस्सत्थि ॥६५॥ णाणुज्जोवो णाणुज्जोवस्स णत्थि पडिघादो। दीवोहि खेत्तमप्पं सूरो णाणं जगमसेसं ॥६६॥ णाणं ययासओ सो धओ तवो संजमो य गुत्तियरो। तिण्हंपि समाओगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो ॥६७॥ णाणं करणविहूणं लिंगगाहणं च दंसणविहूणं। संजमहीणो य तवो जो कुणदि णिरत्थयं कुणदि ॥६८॥ णाणुज्जोएण विणा जो इच्छदि मोक्खसग्गमुवगंतुं। गंतुं कडिल्लमिच्छदि अंधलओ अंधयारम्मि ॥६९॥ जइदा खंडसिलोगेण जमो मरणा दु फिडिओ राया। पत्तो य सुसामण्णं किं पुण जिणउत्तसुत्तेण ॥७०॥ दढ़सुप्पो सूलहदो यंचणमोक्कारमेत्त सुदणाणे। उवजुत्तो कालगदो देवो जाओ महड्ढीउ॥ ७१॥ ण य तंमि देसयाले सव्वो वारसविधो सुदक्खंधो। सक्को अणुचिंतेदुं वलिणा वि समत्थवित्तेण ॥७२॥ एक्कंमि वि जंमि पदे संवेगं वीदरागमगामि। गछदि णरो अभिक्खं तं मरणंते ण मोत्तव्वं ॥७३॥ णाणंगदं॥ परिहर छज्जीवणिकायवहं मणवयणकायजोगेहिं। जावज्जीवं कदकारिदाणुमोदेहिं उवउत्तो ॥७४॥ जह ते ण पियं दुक्खं तहे तेसिंपि जाण जीवाणं। एवं णच्चा अप्पोवम्मिओ जीवेसु होहि सदा ॥७५॥ तण्हाछुहादिपरिदाविदो जीवाणं घादणं किच्चा। पडिकारं कादुं जे मात्त चिंतेसु लभसु सदिं ॥७६॥ रदिअरदिहरिसभयउस्सुगत्तदीणत्तणादिजुत्तो वि। भोगपरिभोगहेदुं मा कुविचिंतेहि जीववहं ॥७७॥ मधुकरिसमज्जिपमहुं व संजमं थोव थोव संगलियं। तेलोक्कसव्वसारं णा वात्तरेहिं मा जहसु ॥७८॥ दुक्खेणभदि माणुस्सजादिमदिसवणदंसणचरित्तं। दुक्खज्जियसामण्णं मा जहसु तणं व अगणंतो ॥७९॥ तेलोक्कजीविदादो वरेहिं एक्कदर गत्ति देवेहिं। भणिदो को तेलोक्कं वरेज्ज संजीविदं मुच्चा ॥८०॥ जं एवं तेलोक्कं णग्घदि सव्वस्स जीविदं तम्हा। जीविदघादो जीवस्स होदि तेलोक्कघादसमो ॥८१॥ णत्थि अणूदो अप्पं आयासादो अणूणयं णत्थि। जह तह जाण महल्लं ण वयमहिंसासमं अत्थि ॥८२॥ जह पव्वएसु मेरू उच्चाओ होइ सव्वलोयंमि। तह जाणसु उच्चायं सीलेसु वदेसु य अहिंसा ॥८३॥ सव्वो वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहायासे लोगो भूमीए सव्वदीवुदधी। तह जाण अहिंसाए वदगुणसीलाणि तिट्ठंति॥८४॥ कुव्वंतस्स वि जत्तं तुंवेण विणा ण ठन्ति जह अरया॥ अरएहिं विणा य जहा णट्ठं णेमी दुं चक्कस्स॥८५॥ तह जाण अहिंसाए विणा ण सीलाणि उंति सव्वाणि। तिस्सेव रक्खणट्ठं सीलाणि वदीव सस्सस्स॥८६॥ सीलं वदं गुणो वा णाणं णिस्संगदा सुहच्चाओ। जीवेहिंसंतस्स हु सव्वे वि णिरछया होंति॥८७॥ सव्वेसिमासमाणं हिदयं गब्भो व सव्वसत्थाणं। सव्वेसि वदगुणाणं पिंडो सारो अहिंसा हु॥८८॥ जम्हा असत्ववयणादिएहिं दुक्खं परस्स होदित्ति। तप्परिहारो तम्हा सव्वे वि गुणा अहिंसाए॥८९॥ गोवंभणिंत्थिवधमेत्तणियत्ती यदि भवे परमधम्मो। परमो धंमो किह सो ण होइ जा सव्वभूददया॥९०॥ जं जीवणिकायवधेण विणा इंदियकदं सुहं णत्थि। तम्मि सुहे णिस्संगो तम्हा सो रक्खदि अहिंसं॥९१॥ जीवो कसायबहुलो संतो जीवाण घादणं कुणदि। सो जीववधं परिहरंदि सदा जो जिदकसाओ॥९२॥ आदाणे णिक्खेवे वोसरणे ठाणगमणसयणेसु। सव्वत्थ अप्पमत्ते दयावरे होदि हु अहिंसा॥९३॥ काएसु णिरारंभे फासुगभोजिम्मि णाणरदिगम्मि। मणवयणकायगुत्तम्मि होदि सयला अहिंसा दु॥९४॥ आरंभे जीववहो अप्पासुगसेवणे य अणुमोदो। आरंभादीसु मणो णाणरईए विणा चरदि॥९५॥ सव्वे वि य संवंधा पत्ता सव्वेण सव्वजीवेहिं। वो मारंतो जीवो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ३
अष्टपाहुड

ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥ काऊण णमोयारं। जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स॥ दंसणमग्गं वोच्छामि। जहाकम्मं समासेण॥१॥ दंसणमूलो धम्मो॥ उवइट्ठं जिणवरेहि सिस्साणं॥ तं सोऊण सकण्णे॥ दंसणहीणो ण वंदिव्वो॥२॥ दंसणभट्ठा भट्ठा॥ दंसणभट्ठस्स णत्थि णिव्वाणं॥ सिज्झंति चरियभट्ठा॥ दंसणभट्ठा ण सिज्झंति॥३॥ सम्मत्तरयणभट्ठा॥ जाणंता बहुविहाइ सत्थाइ॥ आराहणविरहिया॥ भमंति तत्थेव तत्थेव॥४॥ सम्मत्तविरहियाणं। सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंता णं॥ ण लहंति वोहिलाहं॥ अवि वाससहस्सकोडीहिं॥५॥ सम्मत्तणाणदंसण॥ वलवीरिय वड्ढमाण जे सव्वे॥ कलिकलुसपावरहिया॥ वरणाणी हुंति अइरेण॥६॥ सम्मत्तसलिलपवहो॥ णिच्चं हियए ण पवहए जस्स॥ कम्मं वालुयवरणं॥ बंधुच्चिय णासए तस्स॥७॥ जे दंसणेसु भट्ठा॥ णाणे भट्ठा चरित्तभट्ठा य॥ एदे भट्ठ वि भट्ठा॥ सेसं पि जणं विणासंति॥८॥ जो को वि धम्मशीलो॥ संजमतवणियमजोगगुणधारी॥ तस्स य दोस कहंता भग्गा भग्गत्तणं दिंति॥९॥ जह मूलम्मि विणट्ठे दुम्मस्स परिवार णत्थि परिवड्ढी॥ तह जिणदंसणभट्ठा मूलविणट्ठा ण सिज्झंति॥१०॥ जह मूलाओ खंधो। साहापरिवार बहुगुणो होइ॥ तह जिणदंसणु मूलो॥ णिद्दिट्ठो मोक्खमग्गस्स॥११॥ जे दंसणेसु भट्ठा॥ पाए पाडंति दंसणधराणं॥ ते होंति लुल्लमूया॥ वोही पुणु दुल्लहा तेसिं॥१२॥ जे वि पडंति न तेसिं॥ जाणंता लज्जागारवभएण॥ तेसिं पणत्थि वोही॥ पावं अणुमोयमाणाणं॥१३॥ दुविहं पि गंथिचाए॥ तीसु वि जोएसु संजम ठादि॥ णाणम्मि करणसुद्धे॥ अब्भसणे दंसणं होइ॥१४॥ सम्मत्तादो णाणं॥ णाणादो सव्वभावउवलद्धी॥ उवलद्धिपयत्थे पुणु॥ सेयासेयं वियाणेहिं॥१५॥ सेयासेयविदण्हू उद्धददुस्सील सीलवंतो वि॥ सीलफलेणब्भुदयं॥ तत्तो पुणु लहइ णिव्वाणं॥१६॥ जिणवयणओसहमिणं विसयसुहविरेयणं अमियभूयं॥ जरमरणवाहिहरणं॥ खयकरणं सव्वदुक्खाणं॥१७॥ एक्कं जिणस्स रूवं॥ विदियं उक्किट्ठसावयाणं तु। अवरट्ठियाय तइयं॥ चउत्थ पुणु लिंग दंसणं णत्थि॥१८॥ छदव्वणवपयत्था॥ पंचत्थी सत्त तच्च णि॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ४

अष्टपाहुड

परिहर धम्मे अहिंसाए ॥१५॥ पव्वज्ज संगचाए॥ पयट्ट सुतवे सुसंजमे भावे॥ होइ सुविसुद्धब्भणं॥ णिम्मोहे वीयरायत्ते ॥१६॥ मिच्छादंसणमग्गे॥ मलिणे अणाणमोहदोसेहिं॥ वज्झंति मूढजीवा॥ मिच्छत्ताबुद्धिउदयेण ॥१७॥ सम्मदंसण पस्सदि॥ जाणदि णाणेण दव्वपज्जाय॥ सम्मेण य सद्दहदि य॥ परिहरदि चरित्तजे दोसा ॥१८॥ एए तिण्ण विभाव॥ हवंति जीवस्स मोहरहियस्स॥ णियगुणआराहंतो॥ अचिरेण वि कम्म परिहरइ ॥१९॥ संखिज्जमसंखिज्जं॥ गुणं च संसारिमेरुमित्ता णं॥ सम्मत्तमणुचरंता॥ करंति दुक्खक्खयं धीरा ॥२०॥ दुविहं संजमचरणं॥ सायारं तह हवे णिरायारं॥ सायारं सग्गंथे॥ परिग्गहरहियं णिरायारं ॥२१॥ दंसणवय सामाइय॥ पोसह सच्चित्त रायभत्ते य॥ वंभारंभपरिग्गह अणुमणु उदिट्ठ देसविरदो य ॥२२॥ पंचेव अणुवयाइ॥ गुणव्वयाइ तहेव तिणेय॥ सिक्खावेय चत्तारि॥ संयमचरणं च सायारं ॥२३॥ थूले तसकायवहे॥ थूले मोसे तितिक्ख थूले य॥ परिहारो परपिम्मे परिग्गहारंभ परिमाणं ॥२४॥ दिसिविदिसिमाण पढमं॥ अणत्थदंडस्स वज्जणं विदियं॥ भोगोपभोयपरिमा॥ इयमेव गुणव्वया तिण्णि ॥२५॥ सामाइयं च पढमं॥ विदियं च तहेव पोसहं भणियं॥ तइयं च अतिहिपुज्जं॥ चउत्थं सल्लेहणा अंते ॥२६॥ एवं सावयधम्मं॥ संजमचरणं उदेसियं सयलं॥ सुद्धं संजमचरणं॥ जइधम्मे॥ णिक्कलं वोत्थे ॥२७॥ पंचेंदियसंवरणं॥ पंचवयापंचविंसकिरिया सु॥ पंच समिदि तय गुत्तिं संजम चरण णिरायारं ॥२८॥ अमणुण्णे य मणुण्णे॥ सजीवदव्वे अजीवदव्वे य॥ ण करोदि रायदेसो॥ पंचेंदियसंवरो भणिओ ॥२९॥ हिंसाविरइ अहिंसा॥ असच्चविरइ अदत्तविरई य॥ तुरियं अवंभविरइ। पंचम संगम्मि विरदी य ॥३०॥ साहंति जं महल्ला आयरियं जं महल्लपुव्वेहिं॥ जं च महल्लाणि तदो॥ महल्लया इंतहेयाइं ॥३१॥ वयगुत्ती मणगुत्ती॥ इरियासमदी सुदाणणिक्खेवो॥। अवलोय भोयणाए हिंसाए भावणा होंति ॥३२॥ कोहभयहासलोहा॥ मोहाविवरीयभावणा चेव॥ विदियस्स भावणाए। ए पंचेव य तहा होंति ॥३३॥ सुण्णायारणिवासो विमोचियावास जं परोधं च॥ एसणसुद्धिस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ५

अष्टपाहुड

हु सो मुणेयव्वो॥ खेडे वि ण कायव्वं। पाणिपत्तं सचेलस्स॥७॥ हरिहरतुल्लो वि णरो। सग्गं गच्छेइ एइ भवकोडी। तह वि ण पावइ सिद्धिं। संसारत्थो पुणो भणिदो॥८॥ उक्किट्ठसीहचरियं। बहुपरिकम्मो य गरुय भारो य। जो विहरइ सच्छंदं पावं गच्छेदि हवदि मिच्छत्तं॥९॥ णिच्चेलपाणिपत्तं। उवइट्ठं परमजिणवरिंदेहिं। इक्को वि मुखमग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे॥१०॥ जो संजमेसु सहिओ। आरंभपरिग्गहेसु विरओ वि। सो होइ वंदणिज्जो। ससुरासुरमाणसे लोए॥११॥ जे वावीसपरीसह। सहंति सत्तीसएहिं संजुत्ता। ते हुंति वंदणीया। कम्मक्खयणिज्जरा साहू॥१२॥ अविसेसी जे लिंगी। दंसणणाणेणं सम्म संजुत्ता॥ चेलेण परिग्गहिया। ते भविया इच्छणिज्जाया॥१३॥ इच्छायारगिहत्थं। सुत्तत्थिओ जो हु छिंदए कम्मं। ठाणे ठियसम्मत्तं। परलोइ सुहंकरो होइ॥१४॥ अह पुण अप्पा णच्छदि। धम्मंसु करेदि णिरवसेसाइ। तह वि ण पावदि सिद्धिं। संसारत्थो पुणो भणिदो॥१५॥ एएण कारणेण य। तं अप्पा सद्धहेह तिविहेण। जेण य लहेह मोक्खं तं जाणिज्जह पयत्तेण॥१६॥ वालग्गकोडिमित्तं परिग्गहगहणं ण होइ साहूणं। भुंजेइ पाणिपत्ते। दिण्णणं इकठाणम्मि॥१७॥ जहजाइरुवसरिसो। तिलतुसमित्तं ण गिहदि हत्थेसु। जइ लेइ अप्पबहुयं। तत्तो पुणु जाइ णिग्गोयं॥१८॥ जस्स परिग्गहगहणं। अप्पा बुहुयं च हवइ लिंगस्स। सो गरहिउ जिणवयणे। परिगह रहिओ णिरायारो॥१९॥ पंचमहव्वयजुत्तो। तिहिं गुत्तिहिं जो स संजदो होइ। णिग्गंथमुक्खमग्गो। सो होदि हु वंदिणिज्जो य॥२०॥ दुइयं च वुत्त लिंगं। उक्किट्ठं अवरसावयाणंतु। भिक्खं भमेह पत्ते। समिदीभासेण मोणेण॥२१॥ लिंगं इत्थीण हवदि। भुंजइ पिंडं सुएयकालम्मि। अज्जिय वि इक्कवत्था। वड्ढावरणेण भुंजेइ॥२२॥ णवि सिज्झदि वत्थधरो। जिणसासण जइ वि होइ तित्थयरो णग्गो विमुक्खमग्गो सेसा उम्मग्गयासणं॥२३॥ लिंगंम य इत्थीणं। थणंतरे णहिकक्खदेसेसु। भणिओ सुहुमो काओ। तेसिं कह होइ पव्वज्जा॥२४॥ जइ दंसणेण सुद्धा उत्तम मग्गेण सावि संजुत्ता। घो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ६

अष्टपाहुड

सा होइ वंदणीया॥ णिग्गंथा संजदा पडिमा॥११॥ दंसण अणंत णाणं। अणंतवीरिय अणंतसुक्खा य। सासयसुक्ख अदेहा। मुक्का कम्मट्ठबंधेहिं॥१२॥ णिरुवममचलमखोहा। णिम्मविया जंगमेण रुवेण। सिद्धठाणम्मि ठिया। वोसरपडिमा धुवो सिद्धा॥१३॥ ॥पडिमा ३॥ दंसेइ मोक्खमग्गं। सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च। णिग्गंथं णाणमयं। जिणमग्गे दंसणं भणियं॥१४॥ जह फुल्लं गंधमयं। भवदि हु खीरं स घियमयं चावि। तह दंसणम्मि सम्मं। णाणमयं होइ रुवत्थं॥१५॥ ॥दंसणं ४॥ जिणबिंबं णाणमयं। संजमसुद्धं सुवीयरायं च। जं देइ दिक्खसिक्खा। कम्मक्खयकारणे सुद्धा॥१६॥ तस्स य करहु पणामं। सव्वं पुज्जं च विणयवच्छल्लं। जस्स य दंसणणाणं अत्थि धुवं चेयणा भावो॥१७॥ तववयगुणेहिं सुद्धो। जाणदि पिच्छेइ सुद्धसम्मत्तं। अरहंतमुद्ध एसा। दायारी दिक्खसिक्खा य॥१८॥ जिणविंवं॥ ५॥ दढसंजममुद्धाए। इंदियमुद्धा कसायदढ़मुदा। मुद्धा इह णाणाए। जिणमुद्धा एरसा भणिया॥१९॥ जिणमुद्धा॥६॥ संजमसम्मत्तस्स य। सुज्झाणजोयस्स मोक्खमग्गस्स। णाणेण लहदि लक्खं तम्हा णाणं च णायव्वं॥२०॥ जह ण वि लहदि हु लक्खं। रहिओ कंडस्स वेज्झयविहीणो। तह ण वि लक्खदि लक्खं। अण्णाणी मोक्खमग्गस्स॥२१॥ णाणं पुरिसस्स हवदि। लहदि सुपुरिसो वि विणयसंजुत्तो णाणेण लहदि लक्खं। लक्खंतो मोक्खमग्गस्स॥२२॥ मइधणुहं जस्स थिरं। सुइगुण वाणा सुअत्थि रयणत्तं परमत्थबद्धलक्खो ण वि चुक्कदि मोक्खमग्गस्स॥णाणं॥ ७॥ सो देवो जो अत्थं। धम्मं कामं सुदेइ णाणं च। सो देइ जस्स अत्थि दु। अत्थो धम्मो य पव्वज्जा॥ धम्मो दयाविसुद्धो। पव्वज्जा सव्वसंगपरिचत्ता। देवो ववगयमोहो। उदयकरो भव्वजीवाणं॥२५॥ देवं॥८॥ वयसम्मत्तविसुद्धे। पंचेंदियसंजदे णिरावेक्खो। ण्हाएउ मुणी तित्थे। दिक्खासिक्खासुण्हाणेण॥२६॥ जं णिम्मलं सुधम्मं। सम्मत्तं संजमं तवं णाणं। तं तित्थं जिणमग्गे। हवेइ जदि संतिभावेण॥२७॥ तित्थं॥ णामे ठवणे हि य सं। दव्वे भावे य सगुणपज्जाया। चउणायदि संपदिमे। भावा भावंति अरहंतं॥२८॥ दंस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ७
दशवैकालिक

नारिं वा सुअलंकियं भक्खरं पि व दट्ठणं दिट्ठि पट्ठि समाहरे॥५५॥ हत्थ पाय पडिछिन्नं कण्ण नास विग्गप्पियं। अवि वाससयं नारिं बंभयारि विवज्जए॥५६॥ विभूसा इत्थि संसग्गि पणीय रस्स भायेणं। नरस्सत्त गवेसिस्स विसं तालउड जहा॥५७॥ अंग पच्चंग संठाणं चारुल्ल विय पेहियं। इत्थीणं तं न निज्झाए काम राग विवढ्ण॥५८॥ विसएसु मणुण्णेसु पेमं नाभि निवेसए। अणिच्चं तेसिं विण्णाय परिणामं पुगालाणयं॥५९॥ पुगालाण परिण्णाम्मं तेस्सि नच्चा जहा तहा। विणीयतण्हो विहरे सीईभुएण अप्पणा॥६०॥ जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाण मुत्तमं तमेव अणुपालिज्जा गुणे आयरियसमये॥६१॥ तवं चिमं संजमं जोगयं च सज्झाय जोग च सया अहिट्ठिए। सुरे व सेणाए सम्मत्तमाउहे अलमप्पणो होइ अलं परेसिं॥६२॥ सज्झाय सज्झाणरयस्स ताइणो अप्पावभावास्स तवे रयस्स। विसुडज्झई जं सि मलं पुरेकडं समीरियं रूप्पमलं व जोइणो॥६३॥ से तारिसे दुक्खसहेजिइंदिए सुएण ज्जुत्तेअममे अकिंचणे। विरायईक्कमघणंमि अवगए कसिणब्भपुरावगमेवचंदिमे तित्थेमि॥६४॥ (आयार पणिहि अज्झयणं सम्मत्तं ८।)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया गुरुसगासे विणयं न सिक्खे। सोचेवओत्तस्स अभूइभावो फलं व कीयस्स वहाय होइ॥१॥ जे यावि मंदिं ति गुरू व इज्जा डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा। हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा करेंति आस्सायण ते गुरुणं॥२॥ पगईए मंदा विभवंति एगे डहराचिय जे सुयबुद्धोववेया। आयारमंतागुण सुद्धि अप्पा जेहिलिया सिहिरि व भास कुजा॥३॥ जे यावि नागं डहरंति न वा आसायए से अहियाय होइ। एवायरिय पिहुहि लयंतो नियव्वइ जाइ पहं खुमंदो॥४॥ आसीविसोवावि परंसुरुट्ठो किं जीव नासाओ परंतु कुज्जा। आयरिय पाया पुण अप्पसुना अबोहिया सायण नत्थि मुक्खो॥५॥ जो पावगं जलियमव्वक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ८
कुम्मापुत्तचरियं

नमिऊण वड्ढमाणं असुरिंदसुरिंदपणयकमकमलं। कुम्मापुत्तचरित्तं वुच्छामि अहं समासेण ॥१॥ रायगिहे वरनयरे नयरेहापत्तसयलपुरिसवरे। गुणसिलए गुणनिलए समोसढो वड्ढमाणजिणो ॥२॥ देवेहिं समोसरणं विहियं बहुपावकम्मओसरणं। मणिकणयरवयसारंप्पाकरपरिफुरियं ॥३॥ तच्छ निविच्छो वीरो कणयससिरीसमुद्धगंभीरो। दाणाइचउप्पयारं कहेइ धम्मं परमरम्मं ॥४॥ दाणसीलतवभावाणभेएहिं चउविहो हवइ धम्मो। सव्वेसु तेसु भावो महप्पभावो मुणेअव्वो ॥५॥ भावो भवुदहितरणि भावो सग्गापवग्गपुरसरणी। भविआणं मणचिंतिअअचिंतचिंतामणी भावो ॥६॥ भावेण कुम्मपुत्तो अवगयतत्तो अगहि आचरित्तो। गिहवासे वि वसंतो संपत्तो केवलं नाणं ॥७॥

इच्छंतरे इंदभूई नामं अणगारे भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अतेवासी ग्गेयमगुत्तो समचउरंससरीरे वज्जरिसहनारायसंघयणें कणयपुलगनिघसपम्मग्गेरे उग्गत्तवे दित्ततवे महितेवे घोरतवे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छुढसरीरे संखित्तविउलतेउलेसे चउदसपूव्वी चउणाणोवगए पंचेहिं अणग्गरसएहिं सद्धि संपरिवुडे छट्ठंछट्ठेणं अप्पाणं भावेमाणे उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता भगवं महावीरं तिक्खुत्तो अर्याहिणंपयहिणं करेइ करित्ता वंदइ मंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी भगवं को नाम कुम्मापुत्तो कहं व तेण गिहवासे वसंतेणं भावणं भावंतेणं अणंतं अणुत्तरं निव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुनं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडिअं तए णं समणे भगवं महावीरे जोयणग्गमिणीए सुधासमाणीएं वाणीए वागरेइ ग्गेयम जं मे पुच्छंसि कुम्मापुत्तस्स चरिअत्थरियं। एगग्गमणो होउ समग्गमवि तं निसामेसू ॥८॥ तथाही॥ जंबुद्दीवे देवे भरहखित्तस्स मब्भयारंमि। दुग्गमपुराभिहाणं जगप्पहाणं पुरं अच्छि ॥९॥ तच्छ य दोणनरिदो पयावलच्छिइ निज्जिअदिणंदो। निच्च अरिअण्णवज्जं पालइ निकंटयं रज्जं ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ९
कुम्मापुत्तचरियं

तं निसुणिअ भद्दमुही भद्दमुही नाम जक्खिणी हिट्ठा। माणवईरूवधरा कुमरसमीवंमि संपत्ता ॥२०॥ दट्ठणं त कुमारं बहुकुमरुच्छालणिक्क तल्लिछं। सा जंपई हसिऊणं किमिमेणं वंकरमणेणं ॥२१॥ जइ ताव तुब्भ चित्तं विचित्तचित्तंमि चंचलं हेइ। ता मब्भं अणुधावसु वयणमिणं सुणिय सो कुमरो ॥२२॥ तं कन्नं अणुधावइ तन्मयणंकउहलाकुलिअचित्तो। तप्पुरओ धावंति सा वि हु तं नियवणं नेइ ॥२३॥ बहुसालवडस्स अहो पहेण पायालमब्भमाणीओ। सो पासइ कणयमयं सुरभवणमईव रमणीयं ॥२४॥ तं च केरिसं रयणमयथंभपंतीकंतीभरब्भरिअभिंतरपएसं। मणिमयतोरणधोरणितरुणपहाकिरणकबुरिअं ॥२५॥ मणिमयथंभअहिट्ठिअपुत्तलिआकेलिखोभिअजणोहं। बहुभत्तिवित्तिचित्तिअ-गवखसंदोहकयसोहं ॥२६॥ एअमवलोइऊणं सुरभुवणं भुवणचित्तवुद्यकरं। अइ विम्हयमावन्नो कुमरो इअ चिंतिउं लग्गो ॥२७॥ किं इंदजालमेअं सुमिणं सुसणंमि दीसइएइच्छ। अहयं निअ नयरीओ इह भवणो केण आणीओ ॥२८॥ इअ संदेहाकुलिअं कुमरं विनिवेसिऊण पल्लंके। विन्नवइ वंतरवहू सामिअवयणं निसामेसु ॥२९॥ अच्छमए अच्छमए चिरेण कालेण नाह दिट्ठो सि। सुरभिवणे सुरभुवणे निअकज्जे आणिओ सि तुमं ॥३०॥ अद्यं चिअ मब्भ मणो मणोरहो कप्पपायवो फलिओ। जं सुकसुकयवसओ अच्छ तुमं मब्भ मिलिओ सि ॥३१॥ ई अव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १०
कुम्मापुत्तचरियं

री तस्सरीरंमि ॥३५॥ पुव्वभवंतरभज्जा लज्जाइ विमुत्तु भुंजए भोए। एवं विसयसूहाइं दुन्नि वि विलसंति तच्छ ठिआ ॥३६॥

चतुर्विधभोगस्वरूपं स्थानांगेप्युक्तं चउहिं ठाणेहि ठाणेहि देवाणं संवासपन्नत्ते ॥तं जहा॥ देवे नामं एगे देवीए सद्धिं संवासंमागछिज्जा १. देवे नामं एगे छवीए सद्धिं संवसंमागछिज्जा २. छवीए नामं एगे देवीए सद्धिं संवासंमागछिज्जा ३. छवीए नामं एगे छवीए सद्धिं संवासंमागछिज्जा ४. इओ अह तस्स अम्मापिअरो पुत्तविओगेण दुक्खिया णिच्चं। सव्वच्छ वि सोहंति अ लहंति न हि सुद्धिमत्तं पि ॥३७॥ देवेहि अवहरियं इअर नरेहि पाविछए कहं चत्थु। जेण नराण सुराणं सत्तीए अंतरं गुरुअं ॥३८॥ अह तेहिं दुक्खिएहिं अम्मापिअरेहि केवली पुट्ठो। भयवं कहेह अम्हं सो पुत्तो अत्थि कत्थ गओ ॥३९॥ तो केवली पयंपइ णेह सवणेहिं सावहाणमणो। तुम्हाणं सो पुत्तो अवहरिओ वंतरिए अ ॥४०॥ ते केवलिवयणेणं अइव अछरिअविम्हिआ जाया। साहंति कहं देवा अपवित्तनरं अवहरंति ॥४१॥ ॥ यदुक्तमागमे॥ चत्तारि पंच जोयणसयाइ गंधो अ मणुअलोगस्स। उड्ढं वच्चइ जेणं न हु देवा तेण आवति ॥४२॥ तओ केवलिना भणियं पंचसू जिणल्लाणेसु चेव महरिसितवाणुभावाओ। जम्मंतरणेहेण य आगछंति सूराइहयं ॥४३॥ तो केवलिणा कहियं तीसे जम्मंतरसिणेहाइ। ते बिंति तओ सामिअ अइबलिओ कम्मपरिणामो ॥४४॥ भयवं कया वि होहि अम्माणं कुमारसंगमो कह वी। तेणुत्तं होहि पुण जयेइ हवमागमिसामो ॥४५॥ इय संबंधं सूणिओ संविग्गा कुमरमा अपि अपिअरो अ। लहूपुत्त ठविअ रज्जे तयंतिए चरणमावन्ना ॥४६॥ दुक्करं तवचरणपरा परा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ ११
उत्तराध्ययन

डगं चइत्ताणं। विट्ठं भुंजइ सूयरे॥ एवं सीलं चइत्ताणं॥ दुस्सीले रमइ मिए॥५॥ सुणियाभावं साणस्स॥ सूयरस्स नरस्स य॥ विणए ठवेज्ज अप्पाणं॥ इच्छंतो हियमप्पणो॥६॥ तम्हा विणयमेसेज्जा॥ सीलं पडिलभे ज्जओ। बुद्ध पुत्त नियागट्ठी॥ न निक्कसिज्जइ कण्हुई॥७॥ निस्संते सियामुहरी। वुद्धाणं अंतिए सया। अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा। निरट्ठाणि ओ वज्जए॥८॥ अणुसासिओ न कुप्पिज्जा। खंतिं सेवेज्ज पंडिए। खुड्डेहिं सह संसग्गिं। हासं कीडं च वज्जए॥९॥ मा य चंडालियं कासी। बहुयं मा य आलवे। कालेण य अहिज्झित्ता॥ तओ झाएज्ज एगओ॥१०॥आहच्च चंडालियं कहु॥ न निण्हवेज्ज कयाइ वि। कडं कडे त्ति भासिज्जा। अकडं तो कडि त्ति य॥११॥ मा गलियस्सेव कसं॥ वयणमिछे पुणो पुणो। कसं व दट्ठमाइण्णे॥ पावगं परिवज्जए॥१२॥ अणासवा थूलवया कुसीला। मिउंपि चंडं पकरंति सीसा॥ चित्ताणुया लहु दक्खोववेया। पसायए ते हु दुरासयं पि॥१३॥ पिडं व संजए॥ पाए पसारिए वावि। न चिट्ठे गुरुणंतिए॥१९॥ आयरिएहिं वाहित्तो॥ तुसिणीओ न कयाई वि। पसायपेही नियागट्ठी। उवचिट्ठे गुरु सया॥२०॥ आलवंते लवंते वा। न निसीएज्ज कयाइ वि। चइऊण आसणं धीरो। जओ जुत्तं पडिस्सुणे॥२१॥ आसणगओ न पुच्छिज्जा॥ नेव सेज्जा गओ कयाइ वि। आगम्मुक्कडुओ संतो। पुच्छिज्जा पंजलीउडो॥२२॥ एवं विणय जुत्तस्स। सुत्तं अत्थं च तदुभयं। पुच्छमाणस्स सीसस्स। वागरेज्ज जहासुयं॥२३॥ मुसं परिहरे भिक्खू। न य ओहारिणिं वए॥ भासा दोसं परिहरे। मायं च वज्जए सया॥२४॥ न लवेज्ज पुठो सावज्जं। न निरट्ठं त मम्मयं। अप्पणट्ठा परट्ठा वा। उभयस्संतरेण वा॥२५॥ समरेसु अगारेसु। संधीसु य महापहे॥ एगो एगित्थिए सद्धिं। नेव चिट्ठे न संलवे॥२६॥ जं मे बुद्धाणुसासन्ति। सीएण फरुसेण वा। मम लाभो त्ति पेहाए। पयउत्तं पडिस्सुणे॥२७॥ अणुसासणमोवायं। दुक्कडस्स य चोयणं। हिवं तं मन्नइ पन्नो। वेसं होइ असाहुणो॥२८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १२
उत्तराध्ययन

सुयं मे आउसं तेणं। भगवया एवमक्खायं। इह खलु वावीसं परीसहा। समणेण। भगवया। महावीरेणं। कासवेणं पवेइया। जे भिक्खु सोच्चा। नच्चा। जिच्चा। अभिभूय। भिक्खायरियाए। परिव्वयंतो। पुट्ठो नो विहन्नेज्जा॥

कयरे खलु। ते वावीसं परीसहा। समणेणं भगवया महावीरेणं। कासवेणं पवेइया। जे भिक्खु। सोच्चा। नच्चा। जिच्चा। अभिभूय॥ भिक्खायरियाए। परिव्वयंतो। पुट्ठो नो विहन्नेज्जा।

इमे खलु ते वावीसं परीसहा। समणेणं भगवया। महावीरेणं। कासवेणं पवेइया। जे भिक्खू। सोच्चा। नच्चा। अभिभूय। भिक्खायरियाए। परिव्वयन्तो। पुट्ठो नो विहन्नेज्जा। तज्जहा। दिगंछा परीसहे। पिवासा परिसहे। सीय परीसहे। उसिण परीसहे। दंसमसय परीसहे। अचेल परिसहे। अरइ परीसहे। इत्थी परीसहे। चरिया परिसहे। निसीहिया परीसहे। सिज्जा परीसहे। अकोस परीसहे। वह परीसहे। जायणा परीसहे। अलाभ परिसहे। रोग परीसहे। तण फास परीसहे। जल्ल परिसहे। सक्कार पुक्कार परीसहे। पन्ना परीसहे। अन्नाण परीसहे। दंसण परीसहे। परीसहाणं पविभत्ती। कासवेणं पवेइया। तं भे उदाहरिस्सामि। आणुपुव्विं सुणेह मे॥१॥ दिगिछा परिगए देहे। तवेसी भिक्खू थामवं। न छिंदे न छिंदावए। न पए, न पयावए॥२॥ काली पव्वंग संकासे। किसे धमणि संतए। मायन्ने असण पाणस्स। अदिण मणसो चरें॥३॥ एवमावट्ट जोणीसु। पाणिणो कम्मकिब्बिसा। न नविज्जंति संसारे। सव्वट्ठेसु व्व खत्तिया॥४॥ कम्म संगेहि संमूढा। दुखिया वहु वेयणा। अमाणुसासु जोणीसु। विणीहम्मति पाणिणो॥५॥ कम्माणं तु पहाणाए। आणुर्पुव्वी कयाइ उ। जीवा सोहिमणुपत्ता। आययंति मणुस्सयं॥६॥ माणुस्सं विगहं लुग्धं। सुइ धम्मस्स दुल्लहा। जं सोच्चा पडिवज्जंति। तव खंतिमहिंसयं॥७॥ आहच्च सवणं लुधं। सद्धा परमदुल्लहा। सोच्चा नेयाउयं मग्गं। वहबे परिभवस्सइ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ १३
उत्तराध्ययन

हिंसे बाले मुसावाई। माइल्ले पिसणे सढे। भुंजमाणे सुरं मस्सं। सेय मेयं ति मन्नइ ॥९॥ कायसा वयसा मित्ते। चित्ते गिद्धे य इत्थिसु दुहओ मल संचिणइ। सिसुणागु व्व मदियं ॥१०॥ तओ पुट्ठो अयंकेण। गिलाणो परितप्पइ पभाओ परलोगस्स। कम्मणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥ सुया मे नरए ठाणा॥ असीलाणं च जा गइ॥ बालाणं कूर कम्माणं। पगाढ़ा जत्थ वेयणा ॥१२॥ तत्थोवआहुयं द्वाण। जह मेतमणुस्सुयं। आहाकम्मेहि गछंतो। सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥ जहा सागडिउ ज्जाणं। समहिच्च च्चा महापहं। विसम मगामोइन्नो अक्खे भणमि सोयइ ॥१४॥ एवं धम्म विउक्कमं। अहम्मं पडिवजिया। वाले मच्चु मुहं पत्ते। अक्खे भग्गे व सोयइ ॥१५॥ तओ से मरणंतंमि। वाले संतस्सइ भया। अकाम मरणं मरइ धुत्ते वा कलिणा जिए ॥१६॥ एयं अकाम मरणं। बालाणं तु प्पवेइयं। इत्तो सकाम मरणं। पंडियाणं सुणेहम्मे ॥१७॥ मरणं पि सपुन्नाणं। जहा मेत्तमणुस्सुयं। विप्पसन्नमणाघाय। संजयाणं वुसीमओ ॥१८॥ न इमं सव्वेसु भिक्खुसु। न इमं सव्वेसु गारिसु। नाणा सीला अगारत्था। विसमेसीला य भिक्खुणो ॥१९॥ संति एगेहिं भिक्खूहिं। गारत्था संजमुत्तरा। गारथे इह सव्वेहिं। साहवो संयमुत्तरा ॥२०॥ वीराजिणंति गणिणं। जडी संघाडि मुडिणं। एयाणि विन्न तायंत्ति। दुस्सीलं परियागये ॥२१॥ पिडोलंए वा दुस्सीले। नरगाउ न मुच्चई। भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वइ गमई दिवं ॥२२॥ अगारि सामाइयंगाय। सड्ढी काएण फासए। पोसहं दुहवो पक्खं। एगराय न हावए ॥२३॥ एवं शिखा समावन्ने। गिहवासे वि सुव्वए। मुच्चइ छवि पव्वाओ। गछे जखस्सलोगयं ॥२४॥ अह जे संवुडे भिक्खु। दुण्हं अण्णयरे सिया। सव्वदुख पहिणेवा। देवे वावि महिड्ढिए ॥२५॥ उत्तराइ विमोहाइ। जुइमंताणुपुव्वसो। समाइंनांहिं जखेहिं। आवासाइं जसंसिणो ॥२६॥ दीहाउया इड्ढिमन्ता। समीद्धा काम रुविणो। अहुणोववन्न संकासा भुजो अच्चिमासमयभा ॥२७॥ ताणि द्वाणणि गच्छंति सिक्खित्ता संजमं तवं। भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे संति परिनिवुडा ॥२८॥ तेसि सुच्चा सपुज्जाणं संजयाण वुसीमओ। न संत संति मरणंते॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org